मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवा
नां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
सुधर्मगणभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वरः
ह्यगणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्नभसिद्धिपंक्तिसरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुदंकृतोखरतरे त्यारव्यं
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभि
धः ॥ दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिरुप,
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमधाटी
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
कानेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमाखीढा, नि
धानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं
पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचंद्रेण,
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृत्सहायेन, सुबध्यांशोसकाकारैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेभ्योवै, नित्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृद्दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ हमारे पोषपुत्र शिष्य पं। श्रीक्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंदका हे. हमने हमारा सर्व स्वहपासरा पुस्तक धन्नमालका मालक इन तीनोकों किया हे, दूसरा किसीका दावा उजर नहीं॥ शुभं ॥

दसकत। उ०। श्रीरामलालगणिःका खुद ॥



॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रभवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंभवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोभद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंभूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीभद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीथूलभद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी भये सो वीरभगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोड सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बडे प्रभावीक विद्यासिद्ध भये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध भई, तेसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपाट भगवानसें ३८ में श्रीउद्योतन सूरिः भये सो एक तो निजशिष्य ओर दुसरा साधुओंके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योकों आचार्यपद दिया तबसें ८४ गछ भया, यह ८४ गछोंके आचार्य बडे प्रभावीक धर्मोद्योतक भए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः भये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः भये सो अणहलपुरपट्टणमें दुर्लभराजाकी सभामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके झलझलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बडे कठोर इस वास्ते खरतर विरुद पाया,

कोटिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदीक्षित शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बादसाह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोंके पट्ट ४२ में इनोंके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ उर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेव सूरिः भये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हजार वागडीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोंनें चितोड उर उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साध कर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा डाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये है, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध है, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनोंका दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप सें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण वदि अमावशकों स्वर्गवाश भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रगट होय प्रथम दरशण दिया, तिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्त्ति स्थूंन्न स्थापन कर दादा जीके नामसें वंदन पूजन करणे लगें, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात न्नया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी न्नये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि न्नये, जिनोने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उद्घोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतित्तोंकों ढांटा गछकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गछ सागरचंद्रसूरिःसें न्नया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गछ न्नया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनन्नक्तिसूरजी न्नये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलान्नसूरजी न्नये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी न्नये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी न्नये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौन्नाग्यसूरिजी न्नये, इनोके समयमें महेंद्रसूरिजीसें मंडोवरागछ न्नया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरिःजी न्नये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः न्नये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्ये ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । न्न । श्रीजिनपद्मसूरिःजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें बहोत थोडे रहे और वहे२ ज्ञानवंत क्रियावंतोकों और२ जगे चतु-

मांस करणे भेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो नी गोचरी थंमिल्ल नूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलनूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपणे विद्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बमा अपरवलीपणा है सो गछमें साधू बहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंमित विद्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हें, तब उपाध्यायजीने कहा महाराज यह वृहद्गछ खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी अन्नी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजांयगें, एसा कह दादासाहिबका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरूके ध्यानमें लीन नये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह करणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पासमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें शांतरसका नरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोनें विवाहकी वांछा छोम दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोंको धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंको लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे; उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाम विस्तारनावकूं प्राप्त नई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची देशमें नई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बमे२ विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ। श्रीक्षेममाणि कजीगणिः तत् शिष्य। पंमित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं। प्र। लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं। प्र। श्रीधर्म शीलजिगणिः (श्रीलाधूजी) तच्छिष्य पं। प्र। श्रीकुशलनिधानजि गणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलाश तच्छिष्य पं। क्षमासौभाग्यमुनिः चि। पेमचंद चि। अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया। श्रीबीकानेरमें सं। १एएए की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु। श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.
११ रु। श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी कावक.
११ रु। श्रीसदारामजी गोलछा.
११ रु। मानमलजी केसरीचंदजी साह.
११ रु। श्रीचूनीलालजी गोलछा.
१० रु। श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.
७ रु। श्रीआसकरणजी वरढिया.
११ रु। श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु। श्रीसिरदारमलजी तातेड.
२५ रु। श्रीबालचंद कनीराम आसिन्ह मुमईवाला.
३ रु। श्रीचगराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगें तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगें, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंमित तत्वज्ञानी बण जायगें, जैनउपदेशक वधेगें, उर जो नही पं-

ढते हैं उनोंकों इरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके जेषधारी उर जेषधारणीयां अनेक कुकर्मोंके वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवोकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजे गृहस्थ एसा कहते हें हमारे जावे विगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसील करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंद्रताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टजये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें विगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वजाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अबी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा.

प्रश्न । हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताजाव न रखे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीओसवाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हें, धर्म सुणाते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, और जतियोंके वडेरोंनें तुमारे वडेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वडा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन् सुणाणे पढाणेवाले तो कम और धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोंकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रऋषभनाराच संहणन विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग और अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकडीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोके चेला बणाणेमें इतना फायदा हे—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही छोडदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, ओझेमें विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोंकुं पढाया नही और गुरु मरे बाद गुरूके कमाये धनसें पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोंकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

धर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्टान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करे करावे अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत और विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसैंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसैं जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसैं यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन और थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष और संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्तावणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाबहारी करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अवै सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य और पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख और अयोग्य और बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने और पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं हे उहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाकें श्रावकों पास लेणा यह साधूओंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे और नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोसें वैयावच्च कराणी नही, भवी योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहीसे तो पहली ज्ञान पढे और फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा और निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक और बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक ओसवाल पोरवाल और श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पडते समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी और आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हें और विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जरू इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोंकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणठाणी, इसी तरे साधुलके मुजबही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणठाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूलमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गण२वालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसें सधेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंनें कषायकी चोकडी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी प्रतिपालन करणेकूं तब वहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमसं वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही वणाता, दुष्टोंका स्वभा-

वही होता है सो गुणमें उग्गुण निकालतें हें, भर्तृहरि लिखता हें- सूरवीरकुं निर्दई कहते हे गमखाणेवालेकूं मरोकम केते हे ब्रह्मचारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हे, खैर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना नित्त फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि षट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती उंघा मांझा चेद्दर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादस्त्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य हे, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूंउंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा हे, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंथणा तिरपणीके मोरे बणाणे माला बणाणी छोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो भी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, उत्ती शक्ते सचित्त त्यागणा, राजदंडे लोकभंडे एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोंकें संगतसे लंछन लगता हे, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब वोसराके परभव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलज्ञबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोमें लिखा है, उस गुणोकूं धारणा चाहिये. गणांगसूत्रमें साधूउंकी प्रतिपाल करणेंसें श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य ज्ञगवंतनें कहा है, बालक कसूर ज्ञी करे तोज्ञी मातापिता अपणे शंतानपर अंतरंगसे कज्ञी द्वेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, ज्ञेषधारीसाधूउंमें कोइ तरेकी एब दीखपमे तो एकांतमें हितशिक्षा देके जुमाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोकी विचित्रता समजके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावें एसी एब कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल ज्ञाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाल जरूर करे, विनासंज्ञाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजवीजें बिगम रही है, ज्ञंमार लोक खागये हे, उती शके इस वातका खयाल हरतरेसें करें, अपणा लमका लमकीयोकूं संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती करणेकूं पमिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशास्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर वमे२ अकलवंतोकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजादसें जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको ज्ञी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म लमकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेसें पीछे उस-

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्य-वाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समझा है वोही जाणता है उर लस-नकूं मुसककी खसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अभी बहोत भवभ्रमण करणा बाकी रहा हैं उन्होंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही, कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ है मानेभी तो कोन सच्चा उर कोण झूठा? (उत्तर) हे भव्य हमने पेस्त-रही लिखा है न्याय जो जैनका सात भंगरूप है उसकूं समझ उर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है, (प्रश्न) इ-तनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हैं सो एसा न्याय प-ढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय? (उत्तर) जो इतना नही समझो तो जो रुषभदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो स-नातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है वीचर में अल्पज्ञोंने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये है, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार भगवान् भद्रबाहुस्वामी उमास्वाती भाष्यकार जिन-भद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धी-के धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर वडा उपगार रत्नप्रभसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइयक पापारंभ की बातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई है, जैसें मद्यका पीणा उर मांसादि अभक्ष खाणा लेकिन् आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोनें अधोगतीकी सडक बां-

धंधे परं मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरन्नाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछ-तावा होगा थोमे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन उगुण हे एसेंइ मांसमें देखो जैनतत्वादर्श न्नाषाग्रंथ, यही चीज अडी होती तो तुमारे वगेरे लाखों राजपूत इस चीजोंको क्यों गेमते उर मुसलमीनोकों न्नी धर्मकार्यदेसें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अंन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-मित तो उस्मन न्नी अडा होता है मूर्ख हितकारी न्नी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके | विनाका-रण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे— दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, उस्मनें नही पंचास ॥ जंणनी जणके कैया किया, न्नार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीजें अपणे उपन्नोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता न्नाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य वोलावारूप हे, अंन्न वस्त्र उषधी सज्या पात्रादिक साधुउंकों देवे, देवके निमत्त अर्थद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे उजमणे दान करे, सा-धर्मी तथा जैनपंमितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र न्नोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थंकर न्नगवान न्नी संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे न्नगवतीजीनें ग्रहस्थका अन्नंगद्वार कहा हे, न्नगवतीसू-त्रमें तीन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, क-लागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति- पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभंगी लिखते हैं ॥ सम्यगज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्वविराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्रायें जैनमंदिर भोजगही पूजते हैं उनोंमें इस वखत प्रायें मिथ्यात्वी वहोत सम्यकी वहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंको अन्य देशमें गंधर्व कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंनें जैनधर्म कबसें छोडा हे ? (उत्तर) पहलें श्रीऋषभदेवजीनें भोगवंश स्थापनकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछै भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्ययशनें भोगवंशीयोंकों पूज्य जाण जिनमंदिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटेपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवंशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंकों अनेक तरेसें पर्व महोत्छव परं द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ वर्ष पहले ओसीयामें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राजनीके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव पवगेरोंनें भक्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगेरोनें विष्णु संप्रदाय नि-
काली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंकों दादा दत्तसूरजी
ने लाखों उसवाल फेर वणायें, तब राजवीयोंनें गुरूसें अरज की
इस दयाधर्मके प्रभावसें निर्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नही राज्य
तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,
गुरुने कहा जो जिनमंदिरोकी भक्ती उर जतीगुरुकी सेवा अभक्ष
त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां
तक पाटका मालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे
तथास्तु वरदान एसाइ भया, राजाउने अपणे भाई स्वजनवर्गी
उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-
योग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवाडोंमें उसवालोंका राज्या-
धिकार वणा तबसें उसवालोंने महरबानी रखके विष्णुमंदिर शि-
वालयादिकोंका पूजारीपणा भी भोजकोंकों सोंपा वह भोगवंशी
फेर पीछे धीरे२ मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरे
की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण भोजकोंकों कर्म कर
करके मांनणे लगे पूज्यभाव उठगया, जो कभी भोजकलोक एसा
समझते होंगें की हम तो अवलसेंही शैव बैष्णव थे (उत्तर)
यह समझकी भूल है हम पहली लिखदिया है जैनधर्मकी वहु-
लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोंके अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अ-
मलमें सांख्य, इत्यादि वातें तवारीकोसें भी पाईजाती है लेकिन्
जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका है इतना भोज-
कोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी हो-
ते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लागा उर बहु-
मान उसवंश पर कभी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर उस-
वाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा ओर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेही बहोतसें उसवंशी भी खुसामंदीसें डुसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसे हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन् अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट भी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसकी भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगभक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत घालणा नहीं, देव ओर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सद्कर्मों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सद्कर्मों रुपै श्रावक देते हें वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश मेंभि लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होंये तो माफी मांगताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके छापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होने

हैं, उनोंका में सदा आजार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिक्रियते ग्रंथ, संतियद्यपिडुर्जना ॥ नहिदस्युजयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ–ग्रंथ संग्रह तोजी करताहूं यद्यपि डुरजन बहोत हे चोरोंके म्हरसें लोक कंगाल नहीं बण वेठते तेसे १ मेनें अपने हाथसे लिख२कर मुंवइ नेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें संग्रह मैंने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं। प्र। श्रीअवीरचंद्रजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषजदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे वणा जो। राम। उनोंके मध्यवर्त्ती सब जगवंतोंके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

द्वाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, ज्ञुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिजव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री जिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोजयं नोमारीनचविग्रहः, प्रजृतयः प्रीत्याप्रणत्पुच्चकैः ॥ यच्छतेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसव योगण पाय लगाई ॥ माइण साइण व्यंतर खेचर, नूतप्रेत पिशाच पुलाई ॥ वीज तरूक करूक जटक, अटक रहै जु खटक न काई ॥ कहे अमसीह लंघे कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुहाई ॥ १ ॥ इति। राजै थुंज गैरगैर, एसो देव नहीं और ॥ दादौ दादौ नामसें, ज गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लख लोक पा स्यासनकूं रांनमांकि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारे, कुशल देव देहरे, कुशल धन राजदुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ भणीजे, वाहण आवै कुशल कुशल घरं२ गाईजै ॥ जिनचंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वर्त्तो संसार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लछि घर कुशले आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल वन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोमां भट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सद्गुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ फुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ अथ वमा स्तवन संग्रह ॥

॥ पूजा प्रारंभ ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय. ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंमल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंमलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वेसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीऋषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया. उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोमि सोनइयोंकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवदुंदुभी वाजित्र ५, एसे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछै गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चख्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमैं, ओर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहैंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णात्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोछव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) वहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उछव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वतो मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें घ्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ ठृ दृ टृ नृ दृ घृ गृ सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र ब्र ज्र त्र द्र प्र ध्र भ्र ब्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म ध्म ड्म ण्म द्म न्म श्म ष्म स्म ह्न ह्म । र्कं र्खं र्गं र्घं ॥ क्क ख्क ग्ग ग्घ ङ्क । च्च च्छ ज्ज ज्झ ञ्ज

ट्ट ठ ड्ड ढ्ढ ण्ण त्त त्थ द्द द्द द्ध न्न ॥ प्प प्फ ब्ब ब्भ म्म य्य र ल्ल व श्श ष्ष स्स ॥ त्थ त्स्न्य ह्र ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १००००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १००००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृक्षस्था । णिंवद्राह्मास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृद्वल्गुश्रेष्ठात्म । ब्रम्यास्तेहृद्यज्ञपिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंम्डितेच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्त्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् ॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥७ ॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानभुजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विक्ते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्ज्जो-नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङ-ञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अःइतिविसर्ज्ज-नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपघ्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्-विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

ॐअर्हतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पंचपरमेष्ठिपदहे सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकूं मंगलकरो. के-सेकहे पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हणे सो अरिहंत कहीजै. फेर श्री अरिहंत केसेहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहैं फेर अरि-हंतमाहाराज केसेकहे भगवंतहैं भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इछा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालके फेर श्री अरिहंत भगवंत केसेंकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहै सो बारे गुण एसेहें प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग अंर पसीना अंर मैलरहित बना खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही अंर मांस गअके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे अंर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोंके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे। वींट नीचा रहे पांखडी ऊपर रहे २। (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ भाषामें यथावस्थित समझै एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे। संदेहदेहिणंसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुंसासंता। अरिहंताहुंतिमेसरणं १। ३ ॥ चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोलता रहै ४ ॥ आसनञ्च ५ भगवंतके वैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहे ५ ॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिस्सें भव्यजीव भगवानके तरफ देखसके भगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके वैठे अंर तीन दिसामें भगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसैं च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेभये दि-खाइदेवे ६ ॥ डुंडुभी ७ आकाशमें देव ते देवडुंडुभीवाजित्र वजावे ७ ॥ छातपत्रं ८ भगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन छत्र रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे एसे अरिहंत देवाधिदेव चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोभित एक हजार आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-वलज्ञान केवलदर्शनसैं लोकालोकका भाव देखतेभये पृथ्वीमंडल-पर भव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं एसे अनंत गुणसैं विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमैं सदा मंगल करो १ ॥ (सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्ठकों शुक्लध्यानरूप अग्निसैं भस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तभये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक भयादिकसैं रहित चवदे राजलोकमैं सब जीवोके मनोगतभाव एकस-मयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेभये एसे श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमैं सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या-जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमैं श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-स्कार हुउ केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज छत्तीसगुणोंसैं विराजमान मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-प्रतिबोधक क्षमागुणभंडार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-शासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसि-द्धांतसुपाठका) चोथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-स्कार हुउ केसेकहें श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

णकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसें विराजमांन एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्टिपदमें सरब साधूमुनिराजजी केसेकहैं श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीनें गुप्तेगुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थें ॥

॥ अथत्रिन्नंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी
२ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी
४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी
६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी
८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी
१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी
१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी
१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी
१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी
१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी
२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतीजी
२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी
२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी
२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी
४ श्रीअभिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी
६ श्रीपद्मप्रभूजी

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रनूजी
९ श्रीसुविधनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी	४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रनूजी	१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूव्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंबरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२२ श्रीमल्लिप्रनूजी	१२ श्रीदेवप्रनूजी
२३ श्रीअनन्तप्रनूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रनूजी

७ श्रीऋषभाननजी ८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रभूजी १० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी १२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहुजी १४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभजी १६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी १८ श्रीमहाभद्रजी
१ए श्रीदेवयशजी २० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी २ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी ४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी २ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी ४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी ६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी ८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुभद्राजी १० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी १२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदववंतीजी १४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रभावतीजी १६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐपरमेष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछैं गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बेठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अभ्रुठि छमि कहे पीछें खमासमण देकें इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेह. पीछें इछं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिलेहण मावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंम ॥ १ ॥ वचनदंम ॥ २ ॥ कायदंम ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जाननें ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिछादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे हाथे परिहरुं ॥

॥ न्नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्णा॥५॥

॥ पीबें खमा होय कें इछामि खमासमणका पाठ कहे कें इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीबें इछं कहे कें फेर खमासमण दे कें इछा० ॥ न्न० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीबें इछं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नवकार गणी इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीबें करेमि न्नंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ करेमि न्नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण दे कें इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् इरियावहियं पमिक्कमामि॥ गुरु कहे पमिक्कमह. पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पमिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पमिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पमिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कम संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि उक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नउ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंजाइएणं उमुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अजग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिज्ञयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संन्नव मन्निणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अन्निथुआ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिज्ञय रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलान्नं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंन्नीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सवलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देइ इछा० ॥ न्नगवन् बेसणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें वली खमासमण दे कर ॥ इछा० ॥ न्नगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इछं कहे कें खमासमण दे कर इछा० ॥ न्न० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे के वली खमासमण दे कर इछा० ॥ न्नग० ॥ सिज्झाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इछा खमे हो कर आठ नवकार कह कर सज्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इछा० ॥ न्न० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कह कर खमासमण दे कर इछा० ॥ न्न० ॥ पांगरणो पडिग्घाउं? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीछें इछं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" एसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सि झाय करेह, एसें कहे ॥ इति प्राजातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इछं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उजिंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ जरुअच्छेह मुणिसुवय, महुरिपास डुह डुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तित्थ- यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदुं जिण सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त- रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्रई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स डुई, थुणिजाइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा छप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ- सय गयासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठा- सिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ञ्गराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्नयदयाणं, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट ठउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मवाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ ञयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ ञविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाईं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तज संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ ञगवन् जावंत केवि साहू ॥ ञरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुझ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुक्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्रहिए ॥ पावंति विग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ नत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ नवे नवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पन्नावउ नयवं॥ नवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठ फलसिद्धी॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा उ ॥ गुरुजणपूआ परञकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत्तवय, ण सेवणा आनव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछैं खमासमण दे कें इच्छा० ॥ न० ॥ कुसुमिणडुसुमिण राई पाय छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीछैं इच्छं कह कर कुसुमिणं दुसुमिण राई पायछित विसोहणठं करेमि काउ स्सग्गं ॥ अन्नउ उससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउ स्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंन्नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पमिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदिये ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान न्नट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां दीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पमिक्कमणां ठावी गोमालीयें बैठ कें मस्त क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहमे दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिठिअ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछें नमुत्थुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इच्छामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछें तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढ्ढमाणी ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछैं अन्नछ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका उस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी० ॥ यस्स ज्ञगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढ्ढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ ज्ञरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविकं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुख्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्र करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेन्नो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्नूअ ज्ञावच्चिए ॥ लोगो जछ पइछिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढ्ढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स ज्ञ गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नछूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे, काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ गें लिखेंगे, पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-वगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे,

दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं न मंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नठ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वादणां निमित्तें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती पमिलेहे. पीछैं वांदणां दें. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उभा हुआ आधा नीचा नम कर इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कउक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उक्कम बेठ के माबे हाथमें मुहपत्ती ले कें माबे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाम पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कउक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछैं फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खमा होकें पीछैं पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामिं खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे, दिवसो

वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मण-
, वयडुक्कडाए कायडुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सवकालिआए, सव्व मिछोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवछरीयेसंवछरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोउं इछं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ ७५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ७६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ए ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्त कथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सवस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोडा ऊंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इछं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इछामि पडिक्क मिउं जो मे राइउ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

ये. वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछैं खमा हो कें अप्नुहि मि आराहणाए इत्थादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव सिद्धे, धम्मायरिए अ सवसाहू अ ॥ इच्छामि ऋिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पऋिक्कमे देवसियं सवं ॥ ३ ॥ बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं अणाभोगे ॥अभिउगे अ निउगे, पऋिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका विगिंछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, ऋिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिएहं मइयारे ॥ सिरकाणं च चउएहं, पऋिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ए ॥ वह बंध छविछेए, २ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पऋिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयारिअमप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पऋिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पऋिरूवे विरुद्द गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पऋिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउछे अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरइउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अणुरागे ॥ चउत्थे वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसं गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परि-माणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-माणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मसल जंतग, तण कठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे०॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइ-रित्ते ॥ दंडंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पि-हिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएस अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिरिकउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झ न केणइ ॥ ४ए ॥ एव मइं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-
छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०
॥ इति ॥३ए॥ इहां प्रजातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं
कहना ॥

॥ पीछें दो वादणां देकर अवग्रहमांहियकोज कहे ॥ इछा-
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्नुछिमि अप्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?
गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बें
बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुछि ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह जगवन् अप्नुछिमि अप्निंतर देव-
सिअं खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुहु-
मंवा बायरं वा ॥ तुप्ने जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिछामि
डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिछामि डुक्कमं कहे. पीछें बे वांदणां देई
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आय-
रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जें
मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण
संघस्स, जगवऊ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि
सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, जावऊ धम्मो निहिअ
निअ चित्तो ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछैं करेमि भंते इछामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वख्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमथु-रापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री-मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिजुवनवलये यानि चैत्या-लयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिजाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३१ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सि० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, डुरन्तजावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोजालीढलोला-लिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलजवकारागार

ऋतिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ञाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ रितान्निनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि न ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसावरलहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल रिमला लीढलोलालिमाला. ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागारनिवासे ॥ गयासंन्नारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वाहदेहे नवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा नणी, शक्रस्तव कहे. पीछें-खमा हो अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० । इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति , सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, ील वरण सुखकंद ॥ अहि लंबण सेवित, पनमावइ धरणिंद ॥ २ उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणें ॥ पीछें अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सवलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखगाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षद्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमोऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा ॥ अढारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन वखत देई ॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नित्तप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तिछं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ उंर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि कें सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्कीसरू, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण बो तुम्हें, दूर हरो भव डुःस्क लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुस्क लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

के ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंमणं पुमसेोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलछी वहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ इम होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंमण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतित्थं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढारे त्र्यासी मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा ॥

प्रजुके चरण परतापसिंहमें, क्षमारतन प्रजु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, ऋषजदेव पुंमरीक ॥ शुज तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इन्नाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इन्नाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इन्नं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इन्नाकार जगवन् पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इन्ना० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह ॥ पीछें इन्नं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इन्नाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उंहि पमिलेहण संदिस्साउं ॥ उंही पमिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोजी दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अवजी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊनो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ नयवं दसण्नद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसणन्नद्दो ॥

॥ नयवं दसण्न्नद्दो, सुदंसणो थूलिन्नद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया नावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अन्निग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छनमछो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संन्नरइ जीवो ॥ जं च न संन्नरामि अहं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ नासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पमिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इछं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इछं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इछकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इछं कही ॥ इछामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बेठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इछाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चक्खाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चक्खे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्खाण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चक्खाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिझाय करे ॥ पीछैं खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं पमिग्घाउं ? गुरु कहे पमिग्घाएह ॥ पीछैं इच्छं कही शुन्न ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछैं इछं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोंमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण नुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंन्नणय पुरठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणनुंजहि रज्जहि ॥ पिरकहि मुरक असंखसुरक तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुस वसणठुठ सुकुठिण, चक्कुक्कीणखएणखुस

निरसल्लिअसूलिण ॥ तह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि पास मइवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिआईं हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थतित्थभत्तिब्भर निब्भर, रोमंचं चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवण्णुअवण्णु सुण्णु वसिउ छपण्णिहि, मुक्खधम्मुकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अमण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ए ॥ भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइंसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलइय ॥ मण्णूहिंमण्णसउण्ण पुसअप्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणह अगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेहणि ॥ जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ्ठु अविसंठुलचिठ्ठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरठ्ठिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणनेय वाया विविसंठुलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवित्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठ्ठिउकिठ्ठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्फल्लखुअह्मेहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवच्छल ॥ ११ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्न पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरंजण ॥ १२ ॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं झखंतइय पासन सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहमहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसु हावभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिंविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चंगउ ॥ १५ ॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुयमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविकुजइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहुं जंपिउ ॥ अण्णु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयासउ, जइअवगिणसि तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासउ ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअउ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउंहावण, रक्खंतह नियकित्तिणो य जुज्जइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरठिअ, इय मुणिवरसिरि अभयदेव विन्नवइ

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-
वनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्थ परमत्थजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयठिय पासजिण ॥ भ-वियह भीम भवत्थु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्झत्ति संज नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउ-स्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउ-स्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसीतरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सवलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-णवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिईस ।। चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ।। यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछैं पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिकें वैठ कें नमोत्थुणं कहे, पीछैं एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछैं श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोडालीयें वैठ कें मस्तक नमावी सवस्तवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछैं खडे हो कर करेमि भंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजूना चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछैं संडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरें आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. पीछैं मुह-पत्ती पडिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज ऊभो थको इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इछं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अति-चार आलोवे. पीछैं सवस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांडीने इछा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछैं इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कहि कें संडासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठ कें भगवन् ! सूत्र भणुं एसा कहे. तब गुरु कहे भणेह. पीछैं इछं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भंते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछैं खडा हो कर अब्भुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुठिउम्मि अभिंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछैं इछं खामेमि देवसियं कहि कें गोडालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछैं विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-ज्झाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि भंते सामाइयं इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछैं दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू०

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछैं पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछैं सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछैं खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछैं खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यकको मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछैं मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ हुँ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ हुँ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सद्दामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ हुँ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चक्खाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पञ्चक्खाण, छ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, ओछो अधिको अक्षर ऊंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इच्छामो अणुसट्ठिं० ॥ कही बैठे, पछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं, कही संसारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्गं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकच कमलमच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थुणं० कहि कें. एक श्रावक खमासमण दई कहेः—इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवनभणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बडो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविकां श्रीजिनबिंब जुंहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ए ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अड्ढाइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥

देवसि पाय छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः सभे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयट्ठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थसमुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सवेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नइ निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमा दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कह्यो कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करें, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें डावो गोडो ऊंचो करि कें खमासमण देई कें, इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयछउ वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैतें परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्खी, चउम्मासी अरु संवछरीके रोज तो बडी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगरणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

ॐ मिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥
एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥१९॥ इति॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पड्या होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० कहि कैं, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछैं प्रगट लोगस्स कही पूर्वली परें सामायिक पारे. पीछैं एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, डुरिततिमिरज्ञानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्ञवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्ञवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाहुरितध्वंसी, वंदनाद्विंछितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञक्त्या ऋषज्ञं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अज्ञिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंबन धरं पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंमित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोमि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अज्ञिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-सुत सार ॥ श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-पत्ती, संवच्छरीयें संवच्छरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीओ वइक्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो वइक्कंतो, एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-क्खिक ॥ चउमासिक सांवच्छरिक भणजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासें सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो, पीछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें ऊठी ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछैं मस्तके अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ कहो, गोम्हलीयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें पनरसन्हं दिवसाणं पनरसन्हं राईणं जं किंचि-अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउन्हं मासाणं अ-ठन्हं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवछरीयें डुवालसन्हं मासाणं चउवीसन्हं पक्खाणं तिन्निसय-सठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछैं उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछै इछं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३. तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोझा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मत्सर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मल-मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी. देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणो बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिखेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः--श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः--ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहरानां प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बोद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शोख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अंजापडिवो प्रेतबीज़ गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शोलसातम श्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कोधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकित्साः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कोधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहु मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे पोड्या, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कृति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कारः–किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो. कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेळ कीधा, खोटे तोल मानें माप वहोरयां, दाणचोरी कीधो, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्रअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठ्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छट्ठ दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सच्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे॰सच्चित्त तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पींपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्याल्ह कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लख्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कम्मं, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कोधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटो मीढुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतनें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणो उजाहो लागी. कण कपासीया माटो मीढुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थकी कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मत्सरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पडगे परलोगासंसप्पडगे जीविआसंसप्पडगे मरणा संसप्पडगे कामभोगासंसप्पडगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवां वीसार्यां. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्छितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायश्चित तप लेखा शुद्ध पुहचाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रतें विनय साचव्यो नही; वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ्ठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पछें सव्वस्सवि पडिक्कम ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउव्हेण पडिक्कमह, चउमासे छठेण पडिक्कमह. संवच्छरीयें अठ्ठमेण पडिक्कमह. इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पछें इछाकारेण संदिस्सह जगवन्, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं. अब्जुठ्ठिओमि अप्निंतरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेउं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इछं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिछामि डुक्कडं देई खमावे, पछें बे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥३॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इछं कही करेमि जंते सामाइयं॥इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिउ ॥३॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नत्थू०॥कही॥ काउस्सग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांजले. अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे, जणेह. एसो वचन मनमें धारी॥इछं कही, उजो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि जं ते० इछामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, उजा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि जं ते कही, इछामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं संवछरियं सव्वं कहे. पीछें उठी, अब्जुठ्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी. खमासमण देई इछा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पछें इछं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ञ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिंतर प-क्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह. पीछैं इच्छं खामेमि पं-क्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वं कह्यो. तिम कहे, पीछैं इच्छाका० ॥ सं०॥ञ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह, पीछैं श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछैं गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछैं श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसट्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-बिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक जाणजो. एम चउमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछैं जिणें तप कीधो हुवे ते पइट्ठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछैं बे वांदणां देई, अब्भुट्ठिओमि अ-भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछैं बे वांदणा देई. आय रिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि दैवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछैं ज्ञवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें ज्ञवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी ज्ञुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-तान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणो, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका अर देसावगासिकका आगार न पच्चख्खे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्खाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चख्खामि, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ०॥ सहसा०॥ पच्छन्नकालेणं दिसा मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्वकी

पर्रे कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चरकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चरकाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चरकाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० ॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारि० मह० सव्व० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चरकाण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पच्छका० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ. दुविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस० सह० पच्छ० दिसामो० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चरकाइ. असण० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअभुठाणेणं पारिठा० मह० सव० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चख्काण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असल० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अस० सह० लेवालेवेणं गिहछसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अस० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ अवढं वा पच्चख्खाइ अस० सह० पछ० दिसा० साहु० सव देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढं अवढं वा पच्चख्कामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चख्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अस० सह० मह० सव० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम डुविहार पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिमं पच्चख्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति नवचरिम पच्चख्खाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अभिग्रह पच्चख्खाणकेभी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चख्खाण ॥

॥ अहणं नंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चख्खामि दवउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उउ वा अणाञवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चख्खामि नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि उलेणं न उलिज्जामि अणेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पम्विज्जइ ता अभिग्गह असुबणानोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चख्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चख्काण करे. तब देसावगासी नही पच्चखे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ब आगार पच्चखे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवारेण वा

अलेवालेणं वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुकारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवय पुरमिड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ- यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयव्भाठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं- चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घरी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब हे. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जवकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उंर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प- काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखडी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आंबा केला काकडी अखरोट खारक बिदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादिम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेमा आंबला तुलछी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंनटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजम वावची वांवल-छाल धवछालि खेजमेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जम पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीछालि चंदन-कीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कथर बोरकीजम इत्यादिक अनाहार चीज इछा मुजब छो-मणा यह जो इछाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इछा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नछणाभोगेणं कहिये अना-भोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे मालली होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवें तो पच्चख्खाणमें भंग नही. छर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पछन्नकालेणं कहते कालकी प्रछन्नता. आकाशमें गर्द उमती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहामकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब भ-रमसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरबकूं पछिम जाणकर पच्चख्खाणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत भंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें उग्घाडा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चरकाणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥५॥ सव समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चरकाणका काल पूरा होणेसें पहली अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नही आर्त्तरौद्र ध्यान होयं तव उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चरकाण भंग नही ६ महत्तरागारेणं कहतां पच्चरकाणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चरकाणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चरकाण कर भोजन करणे वेठाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तव साधू उस ठिकाणेसें उठकर उंर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही उंर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उंर ठिकाणे जाकर भोजन करेतो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउंटणपसारेणं कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोडासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अभ्भुठाणेणं कहतां आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ वडा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करतां एकाशनादिकमें आसन छोड खडा हो जावे तोभी व्रत भंग नही ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं कहतां सव पच्चरकाणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें वहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तव

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतन्नी आहार करे तो व्रत न्नंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां न्नोजन करणेका थाल प्रमुख न्नाजन नसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगान्नया हे नसकूं हाथ वगेरेसें पूछ माला नस परन्नी किंचित्‌वे मालम सालगारहे नसमें आयंबिलादि व्रतवाला न्नोजन कर लेवे तो व्रत न्नंग नही ॥१२॥ नरिकत्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्चरकाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख नसका फरस खाणे योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत न्नंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें नगाय सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो नसके खाणेसें व्रत न्नंग नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां न्नोजन पुरषे जिससेती एसी कुरुडी आदि देकर न्नाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरडी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो नसही वासणसें न्नोजन पुरसे तोन्नी व्रत न्नंग नही १४ पडुच्चमुक्खिएणं कहतां सर्वथा लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चोपडणेमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नीवी पच्चरकाणमें नस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत न्नंग नही नर जो धारविगय लेवे तो व्रत न्नंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पच्चरकाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्वज्जामि केवलिपन्नत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिज्झाए निगामसिज्झाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कुइए कक्कराइए छीए जंभाइए आमोसेससर रकामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-रियासिआए दिठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-भोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिच्छामि-दुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उ-ग्घाडणाए साणावछादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहु-डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे अणेसणाए पाणेस-णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए पछाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिठहडाए दगसंसठहडाए रयसंसठ हडाए पारिसाडनिआए पारिठावणिआए उहासणभिरकाए जंउ-ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-रिठविअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउकालं सिज्झायस्स अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-णाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-सिउ अइआरो कउ तस्स मिछामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिछादं सणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इढ्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं क-साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्ना

ए परिग्गहसन्नाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त-कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-उमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं म-यठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा-णेहिं चउद्दासहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए ना-यज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी साए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं,तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवज्झायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० दे वाणंआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्न-त्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणनूअजी-वसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा रिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनख्करिअं अच्चख्करिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, डुठुपडिच्छियं अकालेक-उसज्जाउ कालेनकउसज्जाउ असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-इयं तस्स मिच्छामि डुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसन्नाइ-माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-वलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वडुख्कपहीणमग्गं इत्थठियाजीवा सिज्झंति वुज्झंति मुच्चंति परिनिवायंति सवडुख्खाण-मंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-णुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणु-पालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अप्पुठिउमि आराहणाए विरउमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिछत्तं परिआणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं प-रिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे अनियाणो दिठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहु, रयहरणगुछ

पडिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, निंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पक्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविराहिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-भिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुयारं ॥ अहमवि उवट्ठिउतं, महव्वय उ-च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइ-वायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउ-राइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ-वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु-जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोंए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सचाहिठियस्स विणयमूलस्स खंती- पहाणस्स अहिरखसोवस्रियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुख्खीसंयलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि- त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा- गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव- गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया- सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ- वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग- रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प- डुपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा- यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खू- णीवा संजयविरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सवेसिं जोवाणं सवेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए अ- सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव- णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु- चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोख्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १॥ अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंबाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

ज्ञा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्ञा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि- व्वियारस्स निव्वित्तोलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि- यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गं हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्कामि सव्वं अदिन्नादा णं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिन्हाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चक्काय पाव कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाय अजूरणयाय अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं दुक्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि स- व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह- व्वए मेहुणाओवेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा मा- णुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वचीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहि समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओमेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं,परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसखियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउविहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभोयणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-रूवारसागंधा फासाणंपविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-क्कमे ॥ ४ ॥ इच्छामुच्छायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विर-यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-णधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छठंवयमणुरक्खे विरयामो-राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-समिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहु-

णाउ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंच-मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारस-मिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा उ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहे-णपडिकंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तं एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-वज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वए-पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतो-गुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि-महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उव-संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥ पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिम-हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंप-न्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय-भासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छव्विहमब्भिंतरियं वज्जंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामि-महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भंगा परिव-ज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-सत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयट्ठाणाइं अठ्यकम्माइंतेसिबंधिच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अठयपवयणमाया दिठाअठविहनिठिअठेहिं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसारझायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंबरंतहयसंकिलेसंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरउ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसाउ साहणठोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संबरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमठो उत्तमठो एसखलुतित्थंकरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिलुक्क सक्कयंठाणं अभुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भगवउ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवोसत्थउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्चक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स अंतोचउमासीए अंतो संवच्छरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंदथुउ तंदुलवेयालियं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहारकप्पो चरणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंतेससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालंतेणं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुच्छियं अणुपेहयं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो आहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उठ्ठाणसुए समुठ्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नीदसाउ आसीविसभावणाउं दिठ्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयंमि अंगबाहिरए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअठ्ठे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहि पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुठ्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तंपडिवज्जामो तस्स मिछामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिठ्ठिवाउ सुदिठ्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहि भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

इहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुख्खरकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिव ज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ सुय देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अष्टपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पछें खमासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें उभो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इच्छं कही, खमासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

गएह, पीछें इछं कही खमासमण देई ऊनो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-छकार नगवन् पसाउ करी, पोसह दंम्क उच्चरावो ? गुरु कहे उ-च्चरावेमो ॥ पीछें करेमि नंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वो-सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चख्काण प्रारंभः ॥

॥ करेमि नं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बंनचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहो-रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स नं तें पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुनाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊनो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि नंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-सणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय खमासमणें सि-झाय संदिस्साउं? सिझाय करुं? कही खमासमण देई ऊनो थको, आठ नवकारनो सिझाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्साउं? पांगरणुं पमिग्घाउं? कहे. ए सर्व सामायिक-विधि पूर्वें कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां इरियावही पमिक्कमी छे, तेमाटें इहां सामायिक दंम्क उच्चरयां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमण- वेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही खमासमण देइ कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे, ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षे पें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उवही पडिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उवही पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ए ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १ए ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके भीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछें इच्छं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, भणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहुर दिन चढयां. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तिच्छं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुक्खरवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बेठकें नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे, पीछें जयवीयराय कही. नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चख्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्खाण पारुं ? -गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चख्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चख्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चख्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चख्खे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चख्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडा सा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही वेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंमासणो पूंजणी प्रमुखनें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जें. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेद. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चखे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चखाण करे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहुं? गुरु वचनें इछं कही, दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदिस्साउं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण. २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवछरीयें

संवछरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इछा० ॥ देवसियं आलोएमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करूं? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज कहतो थको, भूमि प्रमार्जे थंडिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० सं० ॥ भ० राई संथारो ठाउं ? पीछें गुरु वचनें इछं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां लीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें उठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिझाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर उठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पडिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला लीम सिझाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो उद्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पार्युं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पार्युं ? गुरु कहे आ-

धारो न मोसव्वो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन नवकार गुणी संथारा पमिलेहे. गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी, " जयवं दसन्नजद्दो " इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीछें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविजागव्रत साचवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चिंत थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पमिक्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वें लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चरतां जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अष्टपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्सुमिण काउस्सग्ग करी पमिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें पमिक्कमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पमिक्कमणानें अंतें पमिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसें जूदो पमिक्कमणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां

देई ॥ इछाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ज० ॥ अब्भुट्ठिओमि अभ्निंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पमिक्कमणामें नवकारसी पञ्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु साखें पञ्चरकाण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पमिलेहण तो पूर्वे करी छे, तो पण आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पमिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पमिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इछकार जगवन् ! पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पमिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपमिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पमिलेहे, नहीं तो वली आसण पमिलेहे. दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरो पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पञ्चरकाण किया, पीछें दोय खमासमणें उंही पमिलेहण संदिस्साउं ? उंही पमिलेहण करुं ? कहे, पण थंमिला पद न कहे. अने थंमिला नहीं पमिलेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधि छे, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरथो है. पीछैं संध्यानी पमिलेहण करतां रात्रि पोसहनो ज्ञाव थयो, तो पच्चक्काण कियां पीछैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंमक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछैं सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीछैं दोय खमासमणें सिद्याय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछैं दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उंही थंमिलां पमिलेहण संदिस्साउं उंही थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पमिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो ज्ञाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पमिलेही इरियावही पमिक्कमे. पीछैं चउविहार पच्चक्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंमक ऊच्चरे. तिहां दिवससेसरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछैं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पमिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि ज्ञंते ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिद्याय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पीछैं बे खमासमण देई, अंग

पडिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण देई, डंडी थंडिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो सर्व उपगरण पडिलेह्यां हुवे, तो पण था नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वे ला सीम सिझाय ध्यान करे. पोछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सवस्सवि देवसिअ, डुच्चिंतिय डुप्रासिय डुच्चिडिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सवस्स विराहिअ, डुच्चिंतिअ, डुप्रासिअ, डुच्चिडिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लछी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिछरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सव्व जवाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहा- णा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका वली पंकपस्काल

तोयं ॥ मणोवंछियछे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावन्न सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि झाणं, सिरी नारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, नक्तानां नविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां नवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रनुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणें पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रनु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर दीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाज अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ न्नवियणनें तारे, देई धरम नपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसडुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्नूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगडुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुन्नवेयुर्बहुमुदः,क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कारिवलन्नवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः,क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्डिदि दाग्डिडिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ जजिंझंकि झेंझें, जणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर शैल शिखरे, न्नवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगूदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥गुणगुणण गुणगण, रणकि णेणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ जजि जेंकि जूंजूं, जणण रणरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महे जिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठूंकि ठेंठें, ठहिं ठ

ह्निंक, गह्निंपट्टा, ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों, त्रैंषि त्रैंपिनि, मेंपिमेंषि नि, वाद्यते ॥ धुँ धुँ कि धुँ धुँ, धुंगि धुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुन्नवे ॥ ३॥ थुंदांकि थुंदां, थुथुह्नदि थुंदां थुथुह्नदि दोंदों, अंबरे॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें रूणण रूंरूं, रूंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुन्न समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से वक न्नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गन्न ना यक सद्गुरु, श्रीजिनन्नक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पन्नणे, श्रीजिनलान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पडिक्कमण संवछरी करियें अण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर उखेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा हम्मीवछल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी· लधार ॥ अठ्ठाई पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, ठ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाष्य पैंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू, दुख हरें अंबा लुंब सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्र भुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र भुम् ॥ १ ॥ यन्नागमनोभ्भव भ्रतवरज्ञानाब्धरासिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरच रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थने कसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चम त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देव ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण- कमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं च मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर जे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग । आंनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च उवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण जन मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदेमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविभासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकयबप्पयदेवगणं । सिरिअबुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्दिकरं ॥३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणविणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विहेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाएया, गूथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग डुवादस अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदे वोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन जाषित सिद्धांत । स्याद्वादन यादिक हेतुयुक्ति नवि ज्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । डुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो जयश्कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु डुःखेज्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे। तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः। सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दि न२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं-दित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवि यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायि का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुव्वयङ्का ॥ सु प्पासं पउमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध र्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

वय गइणखणे, केवले लोयकाले, पञ्चाणिवाणठाणे, पगवण समए, संथुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, विंतरे किंन्न रेहिं, । तं मझं दिंतु मोरकं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ देऊं तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममहणं, बीयअंकूररूवं । अबावाइं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहञा । सवञामाणमंबा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंबा ॥ पन्नत्ती उत्तपउमा, धणइसरणाई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच कल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंमण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रनूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरिं कमणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंमरगिरिं महिमा जे मांह । ते आगम समरूं मनउछाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख कवमयक । मन वंछित पूरण कल्पवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेवता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु नवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्ठावय चंपा पावापुर गुन्न ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणज्ञाण ॥ अजितादिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उल्हास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । गणधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्तश नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केसरि अंबा पजमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृक्ष ॥ ध्यावे सुख पावे श्रीजिनलाभ सरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दढरथ नृप राणी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेमे भवना फंद । चित चोखे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयभंग निखेपा स्याद्वाद मितसिठ ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता छुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिनलाभसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गाउ उंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पद्मासन सुखकार । श्रीतीरथनायक वैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरोवर चामर ढोले इंद । देवडुन्दि वाजे भांजे कुमति फंद ॥ भामंमल पूंठे झलके जांण दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य भाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर नाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुभ नावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । नवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो नवि प्राणी । सुय देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये रुषनदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरनीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा नाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनो पूनम चैत्र मास शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे नवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी सेवित नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे गणनायक श्रीजिनलानसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद महिमा नाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अरुछत्तीस पण वीस सँग वीस सार । सरुसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस्र गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल हे मोटो श्रीसुरदेवि सहाईजी । खरतर गछ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायैं हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वछल करतां भ वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जख जखणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहि मुख्य वखाण्या ऋषभादिक जिनचंदाजी ॥ भाव धरी ने जे भवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं भारीजी ॥ नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी। वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥ २॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सम्सठ इक्कावन वलि जैती सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता जी । इणी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद भुक्ताजी । जिन सौभाग्यसूरिंद प्रसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां रुषन्नादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम न्नावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीरुषन्ननना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सव आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । न्नाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवरू पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंद उदार ॥ देवचंदगणि न्नाखे न्नविजनने आधार । सव तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत उपद्रव मारि विकारी शांत करी संचरियाजी । जे न्नवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सव सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे न्नवन्नय फंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी न्नाखीजी । द्रव्य न्नाव विहुं न्नेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत् आरंन्ने विनय तपी ते जाणोजी । शुन्नयोगे नहि आरंन्नकारी न्नग पइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सव कारज सीझे जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गछपति पाठक श्रीरुद्धिसारीजी । समकितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांतिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी। पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषभलंछन सुखदायाजी। विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी। संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि-ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी। ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी। मोह मिथ्यात तिमिरभर नासन अभिनव सूर समाणीजी ॥ भवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी। ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी। विघन विडारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-वाईजी। सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सदाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार। उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक भाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष। श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो भविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय। पांचम तप धर भवियण ऊपर सुथिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण। पंच ज्ञान विचार विराजित भाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत । पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान । इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

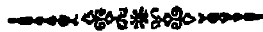
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह । सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार । जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजें रोहिणनो उपवास । मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो बोल्यो लाभ अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । दुखदो

हग तेहनो नासि जाय सब दूर । वलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिणि तप फल जाण । सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गछ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर गाम२ तुम देखो चउदस पखी होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन द रेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगछ मंडण कुमति विहंडण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पख्खी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल न्नावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्प न्नावे, थोसामि सुदिठ सन्नावे॥ २॥ गाहा॥ सव्व डुरकप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं॥ ३॥ सिलोगो॥ अजिथ जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं॥ ४॥ मागहिआ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुरकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सयथं मम निवुइ कारणयं च नमं सणयं॥ ५॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ डुरकवारणं, जइअ विमग्गह सुरककारणं॥ अजिअं संतिं च न्नावउ, अन्नयकरे सरणं पवज्जहा॥ ६॥ मागहिआ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल नुयगवई, पयय पणिवइअं॥ अजिअ म हमविअ, सुनय नय निउणमन्नयकरं, सरणमुवसरिअ नुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे॥७॥ संगययं॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तिब्रथरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ॥ ८॥ सोवाणयं॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथिअं थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणान्निराम परम रमणिज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं॥ ए॥ वेढ्ढउ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सवन्नयं नवोहरिउं॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे न्नयवं॥ १०॥ रासालुद्धउ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिन्नोए महप्पन्नावो जो बाहत्तरि परवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइगाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेढउ ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वि हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकागु विदेह नरीसर, नरव सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स त्ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सवलोअ भावि अ प्पभावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल स सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा इरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भूअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिञ्चवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ, संतिमहं महा मुणिं सरण मु वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिररइ अंजलि, रिसि गण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडि सयसंथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयन पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग यावर विमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स संभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुंडलंगय तिरीड सोहंत मउ लिमाला ॥ २२ ॥ वेढओ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ, सुहु सुविम्हिअ सव्व लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस वहुगामि णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललो अणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरविणमिय गायल याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिं खिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणो हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

थुअवाइअस्साररसगण देवगणेहिं, तो देव वहूहं पयत्त पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्कराभिराम सद्द मी सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायओ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठागुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिवं सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किर्तिं सुविज्ञरूं ज़ुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनरक निग्गयपहा दंरूडलेणंगिणं, वदारूण ।दसंत इव पयरू निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंडुजाव दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविउ इजा सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिजं जलोहिं, खय समय समीरं जो जणिजा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म इव संतिं सो समठो जणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासन्नत्ति प्नरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामबउसिं, फलइइ लहु सवं वंछिअं णिछिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरूइ लहु डुठा निठदोघट्टथठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे ज्निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वढ्ढए देहदित्ती, विलसइ ज़ुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयन्नत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं जूरिदिवंगहारं, फुरूगणरसन्नावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणछे अन्नोया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छजाए जा णिमुत्ती ॥ सरन्नस परिरंन्ना रंन्ननिवाणलछी, घणअणघुसि णिक्कप्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयन्नंगं वछणिचं अणिचं, सदसद णन्निलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संन्नरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, न्नमइजय मसणं तावमिच्छत्तछणं ॥ फुरइ फुरूप

संता णंतणाणं सुपूरो, पयम मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हु ण्हंबु चोरा हिवाही, समर ममर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती, निविमतरत मोहा न्नस्करालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गि जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छिं गाढसंथंभिअव ॥ ११ ॥ अमविनिवम्भिआणं पव्विवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिसं पक्क पाइक्कपुसं, सयलपुहवि रज्जं छड्डिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पमि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥१३॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणन्नरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झोद रीहिं ॥ ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं, सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किम्मि न्नकुठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणच्छी कुच्छिक ण्णाइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु दुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिद्धा एह झाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिढंकर सोल सम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर दुरिअमखिलं पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं० ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि णो ॥ चलणजुअलं महान्नय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सम्भिय

फर चरण नंह मुह, निबुक्क नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुट्ठ महारो गानल, फुलिंग निद्दड्ढ सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, स लिलंजलिसेय वुड्ढिय छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय जलनिहि, उम्भड कल्लोल भी सणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुडुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डज्झंत मुद्धमिय वहु, भीसरणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण न यण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसि द्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भि ल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लू रिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह प णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभ म पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह करुल्लाल वड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल हरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ स मरम्मितिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभि

न्न करि कल, ह मुक सिक्कार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धुर रिउ, नरिंद निवहा न्नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जस्क रस्कस, कुसुमिण डुस्सजण रिस्क पीमासु ॥ सं ऊासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं न तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिडं, जमिन्न तिन्नाहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसन्न सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिन्न, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म बीआ, बीआपरंमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुक्काणि तिन्न स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तिडं, निहय कुतिडं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पमिणीय कए, वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तिन्नप्पन्नावयगा ते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिन्नस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निन्नउमो सुअधम्मो, समग्ग न्नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

इ दिसउ ॥ ७ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ नवसत्त सिवस
म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ए ॥
गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिज्ञस्स ॥
सिरिवद्धमाण पहुपय, म्भिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥
जियपम्भिवरकाजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि
बंन्न संति सहिआ, कय मयररका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा
पम्भिहयम्भिबा, सिद्धा सिंद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा,
संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदिंतु
संघस्स मंगलं विउलं ॥ अनुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ
समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रका, जरका चउवीस सासण
सुरावि ॥ सुहन्नावा संतावं, तिज्ञस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि
णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव हासवे ॥ वेयावच्च गरा
विअ, तिज्ञस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग,
विहिअ नवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो
सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि
देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, डुहाणि सवाणि निहणंतु
॥ १७ ॥ दसदिसिवालासरिक्ख, नवालया नवग्गहा सनरकत्ता ॥
जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १७ ॥ सहका
ल कंटएहिं, सविछिवछेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे सवत्र सुहं, दिसंतु
सवस्स संघस्स ॥ १ए ॥ नवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ
य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिज्ञस्स ॥ २०
॥ चक्कं जस्स जलंतं, गब्बइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिज्ञस्स न
गवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो,
जस्स ज्ञविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं
सव नय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसन्नसेण पमुहा, हयनय नि

वहा दिसंतु तिन्नस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो णदं वंदिअं सवं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तिन्ना, हिवेण तित्थं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पय इएअहिआ जे, नहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु स म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सवं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिअ, सुनिठिअग सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं. नवहिव थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर तिन्न जणिय संखोहा ॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्न सन्नोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्रवाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह साहण सज्जा, नयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ जिण देवो, देवायरिउ दुरंत नवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ण पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तऊणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ दुल्लह महिव, लहस्स अणहिल्ल वाडए पयडं ॥ मुक्कावि आरिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ द

समछेरय निसिवि, फ्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण इयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पय मिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवंग सुत्तछ, रयणुक्कोसो पणासिअ पउसो ॥ ज्जवजीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं ॥ सिरि अज्जयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व्व सारंग ज्जग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइअ पवर कव्वरसो ॥ १५ ॥ जीमज्जव काणणमिअ, दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ, सूरी जिणव ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरढिअ सच्चरणो, चउरणुउग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उछमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावउछ ज्जउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होछा ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया ज्जव्वा ॥ जेण जिणवल्ल हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि रोमणी वूढ डुव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व्व सहइ सत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंज्जण, पुरहिउ निढिआनिढो ॥ १ ॥ गोयम सु हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ ज्जव सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणति, व्व सुव्वयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिंण

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा, ससामि पयपउम पणय पा णीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुरक जरका, पम्हिहय पम्हिवरक परक लरका ते ॥ कयसुगु ण संघ रक्का, हवंतु संपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पम्हिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासणउर, पुरठिउ वद्धमाण जिण ज्ञत्तो ॥ सिरि बंज संति जरको, रक्कउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निवुइ पुर प हियाणं, ज्ञव्वाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि पहरि उच्छिंस कंधरा धणियं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा ह रउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिउवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रक्कउ जिणवल्लहा पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, ज्ञयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमाण तिउस्स वुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ हंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ज्ञवेज्ञवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दु
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्ष
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन
भूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति
भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावित
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४
॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवताम र्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ए, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १ए, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ए, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १ए, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ए, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

श्च नवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो नवंतु ॥ अस्मिंश्च नूमं मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋ द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः नवंतु ॥ सदाप्रादुर्नूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटान्य र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्नवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्नवतु, श्रीराज संनिवेशानां शांतिर्नवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्नवतु, ॐ स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचंदनानरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणनाजोहि जिनानिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं नवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता नवंतु नूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी नवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते वि

भवक्षयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, न्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्पुदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंमलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवं शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीमिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूमामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रालिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मणभितरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्रावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरब सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥के

वलि न्त्रासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुरक अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ रिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्क, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्क ॥ ३ ॥ पनर त्ते य तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सो हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुब्व दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर स हू जगधंद, मणमूलो उग्रय करे बुद्धि हीणजानंध ॥ ४ ॥ दक्षिण दिसि पंखड़ी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिजे अंग पुब्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखड़ीय कमल ऊपर सु हझाण, जोवो परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रके विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जि ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणै, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ गणेहिं, सव पावप्पणासणो पद जपनेरोहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रन्नाव धरणिंद हुतं पायालह सामी, समलीकुम्रर उपन्न निल्ल सुर लोयह गामी ॥ संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ए ॥ छींके बेगे चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही उपर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धाड़ संकट टले राजा वसि होवे, तिछंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण नूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीड़ते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छउमछ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिछराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिछंकर गणहर पणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अड़ संपय नव पय सहित इगसठ लहु अरकर, गुरु अरकर सत्तैव इह जाणो परमरकर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि नणे सिव सुरकह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डुरक निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि बिंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-वर्णांतः, सरेफो बिंदुमंडितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ शिरईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाछादितसर्वांङ्ग, मामांहिनस्तुडाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यं० मामांहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपसगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुविलब्धयः ॥ ताभिरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्ववासिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रभा-वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंन्री सरस्वती, जयांवाविजया नित्यां, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी, रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जग-त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ, जगत्-त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्र-ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

भुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंडल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतोशुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । निभयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

प्रतिमश्लेष्ठ, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः॥६॥ निःशङ्को गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुन्नं प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अचिंतः अ क्षयो विन्नुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो न्नवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः, बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवार्जितः ॥ १० ॥ अजेयसर्वतो न्नद्रः । निष्कषायो न्नवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः॥ वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंन्नुः । विश्ववेदी पितामहः ॥ सर्वन्नूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं दरूपचैतन्यो । न्नगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥ गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अन्नयः प्राप्तकैव ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स र्वेशः सततसुखावासः । जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोन्नगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य कारकः ॥१९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो न्नुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं विमुक्तो मुक्तिवल्लन्नः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच रः ॥ २१ ॥ सदाशिवो चतुर्वक्त्रः । सत्तसौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवार्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंनो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तजसं बोध । एकानेकविनिश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्धंसो । निष्कामो विषयाच्युतः ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाकृतिं नाक्षरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्म्मजित् धर्म्मनायकः ॥३४॥ वोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसंबंधः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरार्चितः ॥ नि

ष्प्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुनः॥ ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभ द्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं । नुवद्भिः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुभुव इवेष्टार्थप्रतिभूपदेपास्ने पार्श्वासन भजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांबामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु ना । सुनामन्नोऽनो स्मरमदमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोभ्रानो भु वनभवने नो वृषभरं । व्यधामोहादेनोरथमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगभ्य्यारामेमरकुरुहवामे यजिनपाः ॥ हतोग्राक्रग्रामे शितरसमकामेषुविजयो । त्वमकाली भामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे भुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ श्रुतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्वारे भवदहनवारे कुरुकृपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान हिमिशुनमाराव्ययविभो ॥ ज्वलच्चस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसभवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥ तमालाभ्रोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदंकेवल्यचलपदमेवस्तु तिकृते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकार्यंकिरवगणदंकीर्त्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहान्नततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं ददानंकंकह्वोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं नचकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंत्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रत्नो पवित्रं सचित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्म्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वछन्दंदृगुदकनवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः सं फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला न धारण्येटन्तकथमपिनवंत्वंनददसुः॥१०॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर आवृतदृशां गतिम्मोंहक्षाणादरहरनवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य भिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवनजन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां नवास्ताघोदत्व चलनिपतितं प्रोद्धरत्तराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर णः शरण्योसिश्रेयान्प्रभुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वां धरितकनकाहार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिनटगनोरत्ववि दितः दितःप्रत्यूहालिः शुभमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविभ्रद्बोधंपरमपुरुषः सिद्धिन गरीं गरीयः साम्रा.ज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्त्तुंकर्म्माष्टकरि पुवलंप्रत्जयमहा माहतीर्थेशश्रीनरमतुलमासः पृथुमहाः ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्धुरतिलको लकोनः पालाकः सकलन विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसञ्जी यात्पार्श्वप्रभुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीनोलोकोत्तरपद मुपेतःसकलवि । लवित्रंदोष.ल.यवसलवनेप्राप्तविभवः नवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ नवन्तंसद्योग प्रथि तपदवीचारिनिवहा अजस्रंविश्रामंप्रणिदधति.विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने ·यन्तिप्रसृमरसितोसंखलुखगाः कलावन्तं.किंनश्रुतमतसदाचारनि

एताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकजरुप्रकाशोधतमसं हरन्लोकेकुर्व न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनो ज गच्चक्षुः पार्श्वो दिशतुकुशलंमेसमयनूः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस मतनुमतांघ्नन्नमृतगुःकलाभिःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइह। वतान्नामापुत्रः सपदिविपदस्तार कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति मंद्दीजन्मातद्वा स्येयप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतंराजतनयो द्य यातोतोलोकेतनुभवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ धरादित्येशान शु भ्रतरुचिभोगौरकरणः सदापायाद्धैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोभानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठो-येन्यत्रिदसविसरेभ्योवरतया सि लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलभूः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥ प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यंश्रीयोगात्कमलनेलनेसो सिभगवन् ननाकश्रिध्विश्वातिशयभरवित्तस्त्रिभुवने भवादक्गीतः परमपुरुषोतोहरिहयैः ॥ २३ ॥ मंदेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः सकल जगदर्थौघकलना भ्रशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥ अवाप्तःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता द्वितेयाभ्रक्रोणीरुहमहि मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसङ्गःकृतकुमतभङ्गःसुमनसां हिताया शेषाणांसुकृतपदवींत्वंकथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंद्राद्दोरात्रंबहुविपदम त्रंधृतमरं कलत्रंयेनात्रकसदहरिहरादिःसुरगणः सकर्णानाकर्णामित चरितताधूर्त्तनिवह प्रतारीसद्दोषः मित्तसततरोषःस्थितिहतः॥ २६॥ समग्रामग्रामप्रभवभयदो बोधरहितः सरुग्भव्यद्वेषीपुरुदुरितकर्मा नकलितः पुरामोहान्नूतश्चिरमिहसङ्गहोनमहितः सदेवोभ्राद्यत्वंकथ

मपिसमासादिमथकाः॥ २७ ॥ प्रश्नोकिंवामेतैरभिमतविधानेलसतरै रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेणयोनवरतम् मनोलिम्मैत्वत्यङ्कनजयुगले सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८॥ अदभ्रंद भ्रांसिन् द्रविणभरमंडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोभानांधुरिसुमतिमद्भि स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल क्ष्मांविदधत कुलस्तैनैराग्र्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं प्राज्यंराज्यंविदितविभवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्धा रिद्यार्सि स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्ध्याध्यायन्तस्तवचरणयु ग्मं सुह्लादया नतर्षे स्वेष्टाप्तैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि ल तवत्रातर्जन्माजनिजननमुख्याकगणाहृत् भवेवेशस्तोर्थोपिचनिरु पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना मलाक्यस्येङ्कोयदिभदनुगंमह्यसनिशं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुरु तेतंस्वपसमं समाङ्गल्यंवाथप्रभवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ म लापायाद्बुद्धास्तवगुणगणाभ्रान्तिविशदा स्त्रिलोकीन्नूजानेसुरपयमणे भ्रानवश्व रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टेसख्या तुमदरपरार्ध्यैतुसरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे नमस्तुभ्यंभीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी कृतसुधा समुद्रायामुष्मिश्युदवसिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद् महिमालयायसुमनः सन्दोहशुश्रूषितां ह्रिहन्द्रायकविच्छिदेभगवते भव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्राय विश्वत्रयी मित्राय

क्षणादोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्करमा भरनिर्जिततारकराजगणः कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवदे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द॥ भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुलिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये हम् वितरविततबोधंयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसन्नृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंस्तुतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्ष्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन यरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंडरीउ मु णिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोडी पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम लगिरिमहं तित्थमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर गाम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अभय देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं डिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥ आराहउ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंडरीकनी भांण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं पदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिख र समेतको । चाहूं दरसंण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । मंडण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामाद्दे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शश्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशब्दघनोघा । प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासित्तचरणा । सर स्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवडा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोहे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वडा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समो सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं मेहदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज हु न वावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि गोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाडले, वसे पहाडा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतडी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोडियो, लाखां ऊपर कोड॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलडी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंडन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धांम, जिन भाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अभिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥ ३ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोड, पण प्रभु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोड ॥ ३ ॥ आडा डूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलझे करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

रूली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटरूली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ,कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर सार्थे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाम्हे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रज्नुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण ज्नरतना वासी ज्नविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन ज़र सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियम्हे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ले माहरो आत मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रज्नु करजो मोपरि महिर अलेह ॥ दूसम काल तणो छुःख टालो दीन दयाल, पालो विरुद संज्नालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर लतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रज्नु पासें केई वसे ले दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज्न उदयजिन चंद लहे नित प्रेम अज्नंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्म ज्नगते ज्नणुं ॥ ज्नेटवा पायकमल ज्नाव हियम्हे घणो, करिय सुप साय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मशुं कूम्ह अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अले तिस्यो कर जोम्हि करि ज्नांखियें ॥ अति सबल मुऊ हिये मोह माया घणी, एक मन ज्नगति किम करूं त्रिज्नवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगम्हे, रीश चटको चढे

लोभ वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत किणने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नाहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवम नहिं अवर वाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, बारवर परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय ऊलगुं, किम करुं गाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिमा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकमा जेम हियमे वसे ॥ ए ॥ भल भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछे ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, क्षीरसागर तणां दूध खमिया भरुं ॥ तुह्म मिलवा तणा सामि संदेशमा, इंद्र पण लखिय न शके अछे एवमा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात सुख जेटली, ऊपजे सामि न कहाय सुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाभ ने कोम प्रभु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भवि मोह वश नेह हुवे जेहनें, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भम रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंततुं ध्यान हियमे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रभु पालशुं, दुःख भं डार संसार भय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवडी मारी भगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम ऋद्धिवृद्धि, समृद्धि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ उवझाय वर श्री, भक्ति लाभें, थुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोडि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोड बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया ते सही ए, पण पाठे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें भरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ भगवंत भांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुभदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोडी भावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पडिक्कमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव भवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्गरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच डोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति भली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पमपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहां दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरू अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुणयो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुंदर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृहस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाणुं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥ मति अगावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेथुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि उबिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव डुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो दहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिमे नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोहो गम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आगम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परंजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन म्हारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लह्यो जी, कुण ध्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी छांडिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी जुडी, मागशिर शुदि इग्यारश वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घम्ही ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावम्ही ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पम्ही ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें हूकम्ही ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चखाण करो आखम्ही ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन लहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो धाहम्ही ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपै सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ सांत जपीने कीजे कांमा, सोइ कांम हुवे अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, रुद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दालिद दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट२ के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावे, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचे, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ रुद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, भिक्षा हारी नांम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह नए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत नणीजे ॥ सयल जीव हितवंत कहीजे, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंनीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहे प्रनु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रनुजी सब देखै, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोन विना गुणरास ग्रहीजे, निक्षु नये त्रिगमो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर छत्र धरावै, नांम जती पिण चमर ढलावे ॥ अनय दांन दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल नणीजे, कर्म सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापे, लब्ध घणी देखी नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत नगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पिण सोवन पंकज पगठावे ॥ १५ ॥ तजि आरंन निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नहीं सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रनु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकतणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रनु तारक छै वमवीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वमनागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोमी प्रनु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, नवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंमण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसाये, श्री गुणसागरके मन नाये ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोन्ना ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पमे जंजाले, उपयोगसुं वैसे जिन आले ॥ आसातना चउरासी टाले, साश्वता सुख तेहिज संन्नाले ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल नखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वमी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमझियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखे, नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै गणा ठमे हुंढणियां ॥ सूकवै कप्पम पप्पम वमियां, नासीय छिपै नृप नय पमियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या वैतालीस लहै ॥ हथियार घमे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रांधै ॥ ८ ॥ नांजो निस्सही जिनगृह पेसे, धरै छत्र ने मंमपमें वेसे ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनहो, चामर वींजे मन ठांम नही ॥९॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, नूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसाडे उत्तरासंग न करे ॥१०॥

भोगो सिरपेच मोम जोमै, दर्पणे रमनै वेसे होमे ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥११॥ धरे धरणो ऊगमे उल्लंठो, सिर गूंथै बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावडियां, पग ऊटक दिरावे डुखमियां ॥ १२ ॥ करदम छूहै मैथुन मंमे, जू आवलि अंठ तिहां ठंमै ॥ उघाडे गुऊ करे वयदा, काढे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंघोले पीवा गाम जरे ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदनजाष्यमें जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी श्रावग सगति छतां, आसातन टाले बारसता, परमाद वसै कोई थावै, आलोयां पाप सहू जावै ॥१५॥ तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री जोग हुआ ॥ जूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसै ॥१६॥ द्व्यत ने जावत दोय पूजा, एहनाहिज जेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रजुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम जव्य प्राणी जाव आणी, विवेकी शुज वासना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थंकर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री प्रनसिंह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं ऋषज जिनेसर पाय, धनुष पांचसै ऊंची काय ॥ बीजो अजित जिन मुऊ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संजव सुख दातार, ऊंची काय धनुष सो च्यार ॥ अजिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ जगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पद्म प्रजू पूरे मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ साभि सुपारस सत्तम होय, देह प्रमांण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रजु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमांण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, ऊंच प्र मांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण ध नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, ऊंच प्रमांण धनुष तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर ॥ अनंत ज्ञांन अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पैंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरस कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अ ढारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि नाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवी सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीवै जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो वीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुद्धि सिद्धि उछ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमांण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रुषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरब आय ॥ बी जो अजित जसु सूत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरब लाख ॥ १ ॥ ती र्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरब साठरो ॥ अभिनंदन पूरै मन आस, आउ लाख पूरब पचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरब चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थित

जांण, लाख तीस पूरब परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय, इक लख पूरब शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुनाथ तणी संभवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणो ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऋषभतणा तेरे अवतार, सात चंद शंतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं२ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अडतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार, पम्धिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अडतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोडि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अडतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नणासु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिये निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै नव पारं ॥ १ ॥ ऋषन्न अजित संन्नव अ-न्निनंदन, सुमति पदमप्रन्नु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्-प्रन्नू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुंथुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वच्छल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम न्नरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, उठो कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संन्नूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र न्नरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ स-न्नूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रन्नु जाणिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगडो, पुरुषसिंह परमांणिये ए ॥ ९ ॥ उठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच उठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अन्नल विजय नें न्नद्र, सुप्रन्नु सुदर्शन, आनंद नंदन शुन्न मती ए ॥ रामचंद्र बलन्नद्र, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलन्नद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उत्सप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासनें ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरकें गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरां पिता, एकहिज थाय नव एण लेखें बता ॥ तीन चक्रधर तणां मिलिय बारे टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी थई साठ लेखे इसै ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुण्या तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करे सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन के लट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरु, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरब निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचंडमासे रह्या, थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंडरीक ॥ पुंडरगिरि तिण कारणें; जगति करो निरभीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू; विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिबर सुक, सहस२ परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलें, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण डूंगरै, मुनिवर कोडा-कोडि ॥ पाज चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोडि ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे बांधण प्रतिबूझवो, ते दरबाजे जोय ॥ गोमुख यक्ष कवड मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील बिलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंडण स्वामी रे; जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीडा जात्रा निनाणूं करिये रे॥ १॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरब निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या०॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोडिसुं पूंडरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोडिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मनें तोडी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोडी रे, ते वंदो बे कर जोडी

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम ज्ञरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पांम्या मुगति तणो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वलो संब प्रद्यून कहाय ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम ज्ञाष्यो श्रीज्ञगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त परिहारी रे, पदचारी ने ज्ञूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण ज्ञय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश ते नर ने नारी रे, ज्ञेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषज्ञ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे। जगना तारू ॥ मुझ तारो जो कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छे ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण ज्ञोक्ता पर गुण लोप्ता, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥मु०॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे॥ ज०॥तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ज०॥३॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ए ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, वीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोडी हो कहुं मननी वात ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार ॥ दुक्ख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

ण स्वांम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनों कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्यो, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वो० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काबली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्रथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखडी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यांन

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ ता रण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहि जी ॥ गिलगिचिया जिम आयो गिरुतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंड क हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न रकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें द्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वैमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखे नर तिरि, निश्चे देव ज थाय जी ॥ निज आऊखे सम के ऊंछे, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०॥ ॥ ८ ॥ आउ संख्याते जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ए॥ पर्याप्ता इण पांचे ठांमे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण आगै, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी मांझी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मांनवमांहि जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव भमै संसार॥दोय गति नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३॥ प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४॥ पंचमी नरकै सीमा सापणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊपजै गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै, तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्ट भांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही को य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ ॥१८॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, छठि देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्याते नर सहु डंमके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाऊ डंमक बे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आया आथै मानवी रे, सुख डुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असं खी आउषे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरनें मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत जाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ति ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊप जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवै रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंड्री तिर्यंच संख्याते आऊखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंड्री आठ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहै सरवविरति पिण मुगति न पावै, तेउ वाउथी आयो तेहनें समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवै दसे ठांने, थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामै ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस डंमके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजै तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ बे जावै, विकलेंडी ते दसमांहि जावै पूगाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अने चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नहीं किम हुवै छूटकबार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर गुणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं॥

॥ अथ इरियावही मिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिदुक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते करिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय छह न्नाल ए ॥ जल थल खचर भुयंग उुइ, पण इंद्रिय तिरि अन्यात ए ॥ तस्मादि साते नरक पुढवी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद न्नेदे करी जाणो, पज्जत्तय अप्रजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंन्निय दस रे नव लोगंतिक जांणिये, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणिये ॥उल्लालो॥ वखाणिये दस विध न्नुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव न्नणया ॥ पज्जत्त अपजत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचन्नरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर न्नूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम न्नूमि जाणीये असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए॥मेरुपिण पाखती चारि ए खेत्र दस कुरु अकरम न्नूमीकहीए॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासै दीप उप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै न्नेद उुइ आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम न्नेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणसय त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अन्निहय आदिक दस गुणित करीजे तेह ॥ पणसहस उसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ डुइ सहस इग्यारह डुइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितन्नर आण ॥मन-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात असी निःसंक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखै छगुण भाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीसं ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुक्कंदेई भविक तरया भवजल नि धिकेई ॥ तरै अछै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषे वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथै ते श्रु तधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जे ॥ मानव जनम सफल इम कीजे ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवझाय लक्ष्मी किर्त्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुण्यो भावे करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु-तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले ऊपजे विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ काले गर्भ धरै जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसूत रे ॥८॥ काले दूधथकी दही थाये, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे बे वाक रे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बार चक्कवे, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पणी आरा, बे बे जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥११॥श्री०॥ काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढपणे हुय बलिश दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निस्संक ॥१३॥ सुविवेक विचारी जुओ २ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वांझणि न जणे बाल ॥ मूछ नही महिला मुखे जी, करतल ऊगे न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सभाव नवि संपजे जी, किमह पदारथ कोय॥

अंब न लागै नींबमै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपं ख कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अणि-याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस ततकाल, परबत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल ॥ १८ ॥ ॥ सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरै जी, बूडै काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परे सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरडै करै विरेच ॥ सीझै नही कण कांगडो जी ॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी, भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो ससि सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ षट् द्रव्य आपापणा जी, न तजै कोइ सुभाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै बापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवतव्यता जी, तो किम सीझै कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्राणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोडि यतन करै कोय ॥ अणभावी होवे नही जी, भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, डालै केइ लाख ॥ खरचा केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाउल जिम भव तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्यूं जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुनूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोथल करे जी, किम राखीस रे प्राण ॥ आहेडी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥प्रा० ॥२९॥ आहेडी भागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हण्या संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्यादी न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वभाव नियत मति कूडी, करम करे ते थाय ॥ करमे नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वनवासे, सीता पामी आल ॥ कर्मे लंकापति रावणनुं, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुख पीडित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिनने जोतो निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥ चे० ॥ कर्मे एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जग हीडे हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंडीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो डमडोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीये आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया, कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए च्यारे असमत्र्थ तो॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तरी ए, लीधो लंका राज तो॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पित पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊरयां विना ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पड़ै कोलियो ए, मुखमां क्षेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दढप्र हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपेइ सरवर भरै ए, कां करे इ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां गाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोडै दाम तो॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय रसे जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचे समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगे

कवल तणी पर, जे बूझै ते रीझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आयई आणी कोइ एकनें, एहमां दियै वधाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावै, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तब, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक सुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंदणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदै गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिगाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम लहीजै, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहे ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहे रहे विकलप घणें, संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणै ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंद रातो रहे, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहे ॥ एह अनादि अनंत अभव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम छठै ठाण चढने पडे, किणहि कषाय वस आय पहले अडै ॥ ८ ॥ रहे विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थित इसी सांभली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकिती, कैतो सादि मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा बेऊं रती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै नही, आउ बंधनपडै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकित लहै, मति सरखी गति परभवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए॥ सहु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुद्गल अरधतां, उत्कृष्टा जव में रहै ए ॥ केइएक भेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ, तातें तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटै चोकमी प्रत्याख्यान ॥ जेण तजेवा वीस अजक्ष, पांम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुवकोमी, पंचम गुणठाणे थित जोमी ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसे जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव- स्यक सार ॥ उद्यत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१ ॥ रूंधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणें, आरंजे दोय श्रेण संक्षेपे

ते गयों ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरब गुण लहै, अष्ठम नांम अपूरब करण तिणें कहै ॥ सुकल ध्यांननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अडिग ध्याने धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा इयें, उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही परै, तो थाये अहमिंद अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडै ॥ क्षपकश्रेणि इंग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेडो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी जानी परगट वात, महिमावंत अढारे दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरबकोडि, उत्कृष्टे तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करणं निरूंध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर उच्चरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परजव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाज्ञे पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहि मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहडमेरु मंमण, सुमति जिण सुपसाउले ॥ गुणठाणा चवद विचार वरण्यो, ज्ञेद आगमनें जले ॥ संवत सतरैसे छत्तीसे, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सत्तावन बारै चौं नव क्रम ज्ञेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छविह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए होय जिय गण, सन्नि असन्नि पर्णिदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदै होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूप्पा सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए षट लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन षट् ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगिंदी पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षट् पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंद्री नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना त्रिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विभेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव॥६॥चलण सहाई धम्में थिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल॥७॥षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन कलासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आतप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुभखगइ निम्माणतं सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तिथंकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मिच्छ थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एकेंद्री वि ति चौरिंद्री तेय, कुखगई उपघा अपसत्थ वन्न चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढम संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरे गेय, असुभ दुभग दूसरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय तिम जोग बायालीस भेय पचीस क्रिया संजों

ण ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं भकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वत्ती तेम,, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि य ने सत्थि सहत्थे जेह, आज्ञापनकी वेयारण अणाभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पच्चंयना भवभंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म भाव ण चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ रिया भाषा एषणा सुमतीना भेद होय, आदान भंम उच्चार नि खेवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हि व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत उसन मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैषिधा सिज्जा सत्त ॥ अकोसवहजायण अलाभ रोग त्रिण फास, मल सक्कार य न्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं सौच अकिंचन बंभचेरज इ धम्म ॥ पढम अ नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निर्जर भ वि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव बोध दुरलभ इग्यारम गाम, धरम साधक अरिहंत ए बारे भावना भाव ॥ सापायक छेदोप स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहरकाय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु विधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारें विध निर्जर तत्व बंध ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुभाग प्रदेस भेदें निरधार ॥२०॥ अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सल्लीनता बाहिर तप षट भाग ॥ पायछित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान काउसग अभ्यंतर तप षट विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु भाव काल अवधारण थित निरबंच, अनुभागे रस तेम प्रसेदे दल

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगड चित्र कर कुंजकार जंडारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना जाष्या जे जे जाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सन्नाव ॥ इम संखेपं विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावे पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो छठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो जाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥ ए नव जेदें जावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी है जे पदेअविनाजाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अजाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्ते क्षायक सन्नी असन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां जावे नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी जाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने वे ते क्षायक जाव, जीवत जेहनें वलि परणामक जाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी जाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहनें मन संमत निश्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदे विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुज्ञ सदन प्रकास नहो उपमान,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वमसाखानी पम्साख ॥ ग्यानसार ते पम्साखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भजनर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रुषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंमक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गब्भधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंमक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनाये ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहणा संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केहिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संखेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गब्भज तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंमक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

प्रमाण, भाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गब्भय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंद्री देह ऊंचै आकार ॥ आरंभ काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगुलनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ स्वभावकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्ष एक उक्कोसविरहण काल, विगल संघयणो थावर सुर नारकनी माल ॥ गब्भय नर तिरनें षट विगलनें छेवट एक, सरव जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग इग नारग विगलेंद्री सूत्र प्रमाण, नाणाविद थयसूईमसूरनी चंद्र आकार, वणसइ वाऊ तेऊ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गब्भय षट नर तिरि होय, वेमाणिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्या ने च्यार, द्वार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण गब्भय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव ॥ दिट्ठी दोय विगलसें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिट्ठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंसण होय, चौरिंद्री ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें तीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गब्भय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरै जोग, मनुजनें प नरै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायनें पाच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवनें नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण चरू चौरिंडी थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या चवण पपात, गभ्भय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ, वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें बार वरस गुणचास दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय छए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मझार, दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गभ्भय मणुजनें दीह कालकी सन्ना होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पज्जत्ता पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजे तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि नर तेम, पज्जत्ता भू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥ ए सरवेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गभ्भय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर उपजै न हुवे सेस, भू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजे असेस॥ पुढवाई दस पयमें भू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेन वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसे चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पजत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१ ॥बेइंडी तेइंडी पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस द्वार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता जिनें सिद्ध अनंते रूप अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस होय प्रकार, भु अप वाउ

भेद वणस्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ भोडल तूरी ऊस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विभेद ॥ भूमि आकास ऊस हिम करग आऊना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा ऊाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उभ्रामगउकलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदैं ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल, भूंफोडा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूंमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल डाल फल मूल काठ बीजै जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुत्तैं आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय वाहाकृम पौरादिक वेइंद्री होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक ईली घीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्गोप तेइंद्री एह ॥ वींछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार, तीडा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला मांकडिय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विछेद॥

घम्मा वंसा सेला अंजन रिठा क्षात, मघा माघवई नारग ए नामे सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिरयंच, मछ कछ सुसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपद उरपरि भुजपरि साप भुचारी तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय॥१२॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेरू कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरबे जल थल खचर समुछम गभ्रय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मणु जोय॥१३॥असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ, जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु में दिठ॥ पनरे भेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार॥१४॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण॥अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय॥१५॥वि ति चउरेंदी अनुक्रम उकिठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण भास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमांण, तेहथी अरध२ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जोयण सहस गभ्रधर मछ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त भूचारो पंखी जेह खेचर नव धणु उरग भुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुछम चौपद सोय ॥ १७ ॥ खरू गाउ ऊंचास चउप्पय गभ्रय मांण, तीन कोस उकोस मनुजनों काय प्रमांण ॥ भुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उकोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंदे षरू ब्रह्म लांतक पांच, शुक्र सहस्रारे उकोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथे तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय भू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार बरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंदी तेइंदी चौरिंदी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उकोसें आय, चौपय

तिरिय मनुजनौ तीन पल्योपम थाय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कोसे पुवकोमि, पंखीने इग जाग असंख्य पल्यनो जोम ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसे अंतमुहुत्त नियम थिति तेह, इम उगाहणा आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंदी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवछर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेंद्री तिरि मणुआं जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंद्रिय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंद्री दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जे वि प्रयोग जिव मरणें होय ॥ जीम सायर संसार अपार अनंती वार, जमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार॥२५॥सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रें साख ॥ जू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धांते सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी जाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ जट्टारक श्री जिनलाज सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवे, एह कहूं अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंदे मिल्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस दु दस वेमाणिय जुरुथा जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजै जी, भूमि योजन सम भाव ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण भरय सुखै जी, वरषए जाणु प्रमांण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-तणो जी, सोवन कांगरे सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी, सवा-तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथवीथकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसे जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं ४ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ उसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें झाकझमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसे जो, जिन गुण गावसी तेह ॥ अम्र जिम आइ सिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव्व दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखे सहू ॥ दीपे असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखे सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं ४ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी, भगवंत उपदिसे बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणें करी, गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊभी सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मछर छोड ए, भूख त्रिस विसरे सुणे कर जोड ए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज ऊंच आकास ए, झलहले तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु थरिय पहिले गढे, होय पगचार नर नार ऊंचा चढे ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचे, मणिमयी मांहिलो प्रौढ

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणियै ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्टंग अर्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठाम ए ॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जिये, तेह धन धन्न अवतार पायो तिये ॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ नरदह ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सेत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसायर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजारी कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे, मुझ ऊपर महिर धरीजे, दिल रंजन दरसन दीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भव२ना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसै मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुझ

आतम पुन्य जरावे ॥ कु० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजे, केसर चंदन चरचीजे, दिन धन२ तेह गिणीजे ॥ कु० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ कु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा जय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ कु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ ॥ कु० ॥ ए ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा, भव जन मन नयण आनंदा, डलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ कु० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिनंदा, प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ कु० ॥ ११ ॥ इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लभै पार ए ॥ तास नयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषभ उदार, घरणी जिण धरयो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी ॥ ६ ॥ पांचमैं पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंज्ञ, ज्ञरियो निरमल अंज्ञ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ए ॥ समुद्र इग्यारमें ठांमें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो ज्ञूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै ऊदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर ऊन्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, तिण इक नारकियें पायो सुख्क अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवे, लेइ निज ज्ञक्तें सुरगिरि स्नात्र करावे ॥ क री जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल दी प नंदीश्वर जावे ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार, घर२ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री ज्ञत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रज्ञु वाधे दिन२ कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान १ए

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रभु रहतां काल सुखे गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावे अवसरू ए, देइ संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरे महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पउमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुणशेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोडी पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडहि लाख पचास ए, सागर जिनसासण भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, भवझाय सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ भयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उछाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाले गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि ग्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधे सब काज ए, प्रभु पाले पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हथणापुर गाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवतरयो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणें कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलो ए, वन सिंहे बीहैं एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पभणे लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो ससि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल छल अंगण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजें दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छखंड ए, वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु लोक सहस जखैं अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मौमबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम ए, भिन्न वे नमें बे कर जोम ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला वण्य लीला जरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह स अंतेउरी ए ॥ २१ ॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र यण जंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुजपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥२२॥ इम चक्रीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए सार ए, बिहुं लीधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन झाण समाण ए, बिहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोम-हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए, बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, बिहुं पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं जवयार जुवन जरी ए, बिहुं सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥ २ए॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ शुणि अति संऊ विहाण ए, तिहां इह परजव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उच्चव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय जणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ १३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ भविक जन धर श्रीजिन उपदेस, छूटे कर्म कलेस ॥ भ० ॥ आंकणी ॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, भाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए भाव विचारिये जी, इम भाखैं जगदीस ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ भ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोडा आदरो जी, नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ भ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ भ० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति ग्रहीजे शुद्ध ॥ परिहरियें वलि जांणनें जी, तीने दंड विशुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पडिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज भय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ भ० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ भ० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करो घात ॥ १२ ॥ न० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण त्रिन्हे सुद्ध होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ न० ॥ इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै करै जी, पांमैं सुक्ख अनेक ॥ १४ ॥ न० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-णी, सुणो नवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुख-थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणो, जास परसाद उपगार थाये घणो ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निर्मल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै॥३॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरो ॥ कूदतां ग्रवेतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नांम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथो आकु-ट्टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायछित लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरणा-तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंफित थाये अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपफिलेह्यां परिमढनो उपचार, गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदे मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथी वृद्ध॥ बहु बि ति चौरें-डिय हण्यां बि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ए॥ उहेही कुलियावफा कीफी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक एक पंचेंडी उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसे उपवासे आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपद्रव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारे चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकफी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें छठ विचार ॥ साथ समक्षे लोक समक्षे राज समक्ष, कुफा आल दियां डुइ चोथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंफायां तेम मरायां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवफना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असत्यने पोस ॥ करीय उचालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिछादुक्कड देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमणां विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इकइ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगे आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर अही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावे युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाडि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधुअने श्रावक पोसोध, एकेंद्री सचित्त संघट्ट कीध ॥ वीसर भोले सचित जलपी

ध, दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रे, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रे ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम छंथे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार छींको राखै, व्रत पञ्चखांण करे पट् साखें ॥ दोपे मिच्छामिडुकम दाखै, आलोयण लेतां अभिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ एकांत पूछै गुरु वतावे, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीप्रमासिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत, वलयाकार विराजे रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर छाजे रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अभिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस दस जोयण, उवरि सहस कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै२ इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रनुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उछव करवा, सुरपति नक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवेरे, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ चाव२ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्तंगें, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं०॥ ए॥ वाव५ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसै, कह्या नही ए कूमा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ फल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपम्डिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणैं रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रनूना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ द्रव्य नाव विधि पूजा करतां, मोह महा नम्र जीपें रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाभिगमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुनव इहा ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवलग्याननें धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामें कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहे द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमानूमीनो कहूं अधिकार ॥ २॥ पहिलो जंबूदीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत शुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण बिहु करमभूमी छए अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी बत्तीस विजय विराजे जेहने गण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारे श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वछविजय बलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ पिहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छै जिहां, इण-हिज नांमें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजे दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज२ मेरुथी मांडिने,

देखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस ॥ ऋषभानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंममें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली बिहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंद्रानन जिन, पश्चीम धातकी मांहि ॥ विचरै च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंम ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूमी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥ उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजै, धातकी खंम जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पश्चिम विद्युमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंमै तिम पुष्कर सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही ॥ वार २ कहनां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ उ० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमदिज मन गमें ॥ पूरवे पछिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरबे पुष्कर अरथ मांहे, सरब जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अढारम जिन नमो ॥ देवजसा उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ उ० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरंध माहे, कह्या पछिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरब लाख बरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उतकृष्टे भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ उ० ॥ जिण लहे पांचे तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहा पिण छे जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन गुणगेह ए ॥ उ० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए ॥ चौसठि इंद्र नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए ॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमुं बे कर जोड ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह धरि धरमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्णं ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं ३ ॥ द्वीपसें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच-

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीभाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र भणी क मढेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथी मांहे छाजै, आबू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला गो, ऊंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावै, निरखंता भ्रिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह रुतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या भ्राझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू लभानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ बिमलमंत्री वरदाई, चकेसरि देवी सहा ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाड़ वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंडायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी केरचो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया झिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ भगणिस कोड़ सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोड़ीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठै चढिया हाथी, मंडाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवड़ कोई, भूमंडल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि ति ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो रुद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासे, बार क्रोमनी लागति न्नासे रे ॥ जा० ॥ देरा णी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देव ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाम्हो दीठो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आ गल जाइये, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा न्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते धातो, फिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा लौ, जिण बिंबनो न्नाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली न्नोम सोन्नागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन न्नावी रे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावे रे ॥ जा० ॥ ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० ॥ साहमी वच्छल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये बे जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषन्नानन व्रधमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि णा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिन्नुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा· मणा ए.॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोम्नि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस भिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अम्त्रीस सहस सत साठ अछै गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंम्ल रुचक वखाण, चउ२ चेईहर साठ सबे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसै गुण प्रतिमा चिहुं नाम, ग्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सही ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारैसै सत्तर सुक्ख ॥ कुंम्म त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणियें ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालै सब मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोम्नि सत्तावन लख्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुख्का ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजे ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोडी रे, अठ्ठावन लख अधिके जोडी ॥ छत्तीस सहस अधिक कहीये रे, प्रतिमा सगली सरदहिये ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमिये, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदिये, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर भूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारखी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ भवियणने भवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांभलतां भणतां सुख संपदा, हियडै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण भणे अभिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुझ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

भविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥ प्रभूजी विराजै रे सूरत बिंदरे रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीढढरथ नृप गेह ॥ श्रीवछ सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रभु देह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिभुवन भाण ॥ भ० ॥ ३ ॥

वदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, कुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीलक्ष्-रुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत भाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भराविवो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दि-वसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-हनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरी-श्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ नाथ ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हांरे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवड्लो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्ये कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातड्ली तव थास्यै महारी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथ जो, उल-वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरि-खो कुण छे दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्द जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो॥ हांरे कांइ फूठूं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही श्रीतमी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रजु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक जगत वह्नल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रजु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उन्नोगलो रे लो॥ हांरे कुण जांणें अंतर गतिनी विण माहा-राज जो, हेजे रे हसी बोलो जंमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखमली अणियाली का-मणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मांरे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुज जो, राती रे प्रजु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रजु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो जलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरूप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरू नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांरूयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरा रे लाल, सूतां जठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो देस मेवारू ॥म०॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवारू ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियंतरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाडा सम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, दिगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजै, म्हारो मनमो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रनु दरसन लहिवो जग डुरलन, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पाले, ते नवि कहिये तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापै, पिंम नरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति आलापैं, ते नूला नव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन ऊपजे तसु अंगे, सिद्धरमणाने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नव कोमाकोमीमें नमतां, तुऊ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज नले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदनुत, आतम गुण उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दरसण दीजे रे ॥ लानउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजे रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुऊ अनंत अपार ॥ ते सांनलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रनु मिल्या रे, होय निमित्तम नोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रनु नक्तें नवि लहे रे, आतम शक्ति संनाल ॥ ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अनेद । निज पद अर्थी प्रनुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रनू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोडी वीनवुं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ॥ कूड कपट मूंकी करी जी, वात कहुं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तूं समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीठां दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुरक ॥ परदुख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुरक ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखे जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकाले दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछे नही जी, गडरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धरम५ सहू कहे जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, संशय पड्यां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

उन्भावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कु० ॥ ए ॥ नग-वंत नाष्यो ते किहा जी, किहां मुफ करणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहे जी, सवल विमासण तेह ॥ कु० ॥ १० ॥ आप परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी, तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाम्िया जी, किहां जइ करूं पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कु० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुफ आकरो जी, न गमें नूंमी वात ॥ परनिंदा क-रता थकांजी, जाये दिन नें रात ॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पड्यो जी, नरके करसी रीव ॥ कु० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख नली दिये जी, तो मन आणूं रीस ॥ कु० ॥ १६ ॥ वादनणी विद्या नणी जी, पररंजण उपदेश ॥ मन संवेग धरयो नहीं जी, किम संसार तरेस ॥ कु० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक मनमांहे ऊपजै जी, मुफ मरकट वैराग ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कर उच्चरूं जी, नगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ नांजू वली जी, छूटकवारो दूर ॥ कु० ॥ १ए ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा आरंन कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोम ॥ कु० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंम ॥ कूम कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंम ॥ कु० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादांन ॥ ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कु० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोन्न ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोन्न ॥ कु०॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीन्नोजन दोष ॥ मैं मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कु० ॥ २५ ॥ इण न्नव परन्नव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिछुक्कडं जी, न्नगवंत तोरी साख ॥ कु० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे मैं कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कु० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कु० ॥ २८ ॥ रिषन्नदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रन्नु मोरी सार ॥ कु० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिछुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कु० ॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, न्नव २ ताहरी सेव ॥कु०॥३१॥ ॥कलश॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण न्नेट्या नान्निनंदन जिन तणा, करजोडि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि न्नणें॥३२॥इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री ऋषन्न देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषन्न जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, न्नांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करें रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संभवे रे, मेलो वाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन मैं नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथडो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुझ नांम ॥ पं० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रजू सेवन जेद ॥ सेवन कारण पहली जूमिका रे, अजय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ जय चंचलता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए निजमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अजिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण डुर्लज देव ॥ ॥ मत२ जेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अजि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलुं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति डुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आम्हा अतिघणा, तुज दरिसण जगनाथ ॥ धीगाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम भाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल भ सुलभ कृपायकी, आनंदघन महाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानो थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षणा रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्ष्ण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठांमे केम लीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
न्नयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण न्नावे रे ॥ प्रेरण
विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
श.कि व्यक्ति त्रिन्नुवन प्रन्नुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी न्नोगी वक्ता
मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु न्नं
ग त्रिन्नंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनरुो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो न्नाजे हो॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज
नी वासर वसती ऊजरू, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखकुं
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
अन्निलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अन्न्यासें ॥ वयरीकुं कांइ एहवुं
चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
धरनें हाथे, नावे किण विध आंकू॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं,
तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अ
लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समजावे,
समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ है नर,
एहने कोई न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
गलूं सध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं०॥ म० ॥ ७ ॥ मनडुं उराराध्य तें

चंस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ लुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन घर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोडि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी॥ ३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुख अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजिये, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजिये ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्यां कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आलेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आलेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आलेलाल, संकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आलेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आळेलाल, मन वंछित मुझ सहु फळ्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आळेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमा-कल्याण ॥ आळेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥ तीन कमल मुझ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं छाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाळ्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम शोल, सहु संघ साखैं रे ॥ नगर मदेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद मुणिंद, वांछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई उतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो जेवमो, गो० ॥ सगली

भाति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हों ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सनूर हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥गो०॥वा०॥ ७ ॥ इति पदं॥

॥पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजे अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥१॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरांमी रे ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ६ ठुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन भाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवककी येही अरज है, भवदुख ताप मिटाय॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितड़ामें लागी छै चूंप ॥ सवाइप्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो य घमी सुप्रमांण ॥ स० ॥ जगतवछल जल भेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंदनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घमी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारी मानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो भव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थावै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥४॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गछपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतर जामी, पूरव पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु जीस्युं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी तारो दिलमांहे वसियो, रात दिवस मारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥१॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका कांइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै उद्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे

तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोम, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फळ्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंकणी ॥ मुऊ मन भमरतणी पर मोह्यो, भेंमायो नवि छूटे ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कहेय न खूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने, नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जांणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम लही तुऊ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुद्रानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण मति उपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणे किंचित गुण भाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुऊ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंमायो ॥ लाभ उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरूं पलपमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं बिन२में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जांणै, अलख निरंजन बिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण भरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे॥ वीर० ॥५॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सथवाह॥ ते परमेसरविण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे वीर० ॥६॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसरया, भला गुण भरया रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं बहेनी, विमलाचलगिरि जईएं रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनो महिमा, आदिजिनंद इम भाखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गिरिवरियें काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छोडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोडि भवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सातसो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ ने दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजमशुं नेह धरीने, आगें हलग करस्यां ॥ अभुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूधी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गंदिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भेनतां, भवसायर निस्तरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरवें नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ गुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ हुदे ए गिरि वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरें जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, भले में भेव्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चक्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण लख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से हथ देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सहा सेठ इम चिंतवे जी, हो सी सफल मुझ आस ॥ पड मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ यार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे जे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछें करस्यूं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवसर जाण्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेडी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देइ ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने वा कला जी, प्रभूने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्र भू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे दुंदुभि जी, जै बो ले कर जोडि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढाबारे कोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा दिक सहूए कहे जी, धन्य पूरण सेठ ॥ ऊंची करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा जित दुंदुभिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंडल ठांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर धन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकांस्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यों जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछें जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण बांध्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडी एक सुर डुंदुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-नो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें था पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दिया सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे म नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ज ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुज मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मुज ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते उकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव दे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार च्यार प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

विया, जें पाप अढार ॥ त्रिविध२ करवोसरूं, डुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादाननना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोन्न मैं कीया, वलि राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूमा कलंक ॥ निंद्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी कीधी चोतरे, कीधो आपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, नलो आंएयो नरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने नव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिमीमार नव चिमकला, मारया दिन ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर नव माछला, फाल्या जलवास ॥ धीवर नील कोली नवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने नवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालनवमें किया, आकाराकर दंम ॥ वंदीवान मराविया, कोरमा छमी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने नवे, दीधा नारकी डुरक ॥ ढेदन नेदन वेदना, ताममा, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंन्नारने नव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीनव तिल पिलिया, पापे पेट नराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने नव हल खमया, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूमाने दान किया घणा, दीधा बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने नव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही आंगमी, नरया अधिका नार ॥ पोठी ऊंट कीमा पम्या, दया नावी लिगार ॥ ते० ॥ १ए ॥ ढींपाने नव ढेतरयो, कीधा रंगणपास ॥ अगनि आरंन्न किया घणा, धातुरवाद अन्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूरपणे रणझूंझतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण नख्या, खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

उलंघ्या ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूडा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भव ऊंदर गिल्या, गि लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे भवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ भाडभूजातणे भवे, एकेंद्री जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पाडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पडाडिया, रोदनवि खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने भागा, मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवडे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंजाया ॥ ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध२ कर वो-सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध२ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेराडी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह म्मदावादे पास ॥ गोडी ते धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्ठा जांण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी मूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी बाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुझ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रह्कठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ढंगो मले जे, टका पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी, लाठ घणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकमो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अब सताब परगट करो, नहितर मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संभलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी॥ जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रह्कठीने गुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो,

आपणे आंनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, हींमे तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिल क निलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टका जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १९॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ नव दिन अधिका थाये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ गांमरना दरसण करवा, आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी ऊजाड ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाड ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोडी काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वहण एक वृषैन्न जोतरे ॥ पार करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुट को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंडाडं कि म घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी उलटस्ये खांण॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुउ, अमृत जल निसरिस्ये कूउ ॥ खा राकूआनो इह सहनांण, नूमि पज्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सिं लावटो सीरोही वसें, कोढ परान्नवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियों, शिलाचटाने सुहणो दियो॥ रोग गमाडं ने पूरुं आस, पासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांम घृत चूरमो॥ घमे घाट करे कोरणी, लगन नले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंन्न श्र कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंमप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इंमो घड्यों, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुन्न लगन शुन्न वेला वास, पवासण वेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगमे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ दात पुराणी में सांन्नली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमारण जक्क जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुउ गोमीपास जिन ॥ आपे अरथ नंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्था पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चूकां मांनवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग ॥ पग विहूणाने आपे पाग ॥ गांम नही तेहने थे गांम ॥ मन वंछित पूरे अभिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, भवसायर उतारे पार ॥ आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां साद दिये जक्षराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दा तार, भयभंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेमीतणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध दूरे टले, दुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भय चूकवे, विष अमृत उपकार ॥ विषधरना विष ऊतरे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥ रोग शोग दालिद दुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म- हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजततू २ भंज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर ज पंते ॥ भूतने प्रेत झोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ दुष्टा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा दु जपंते ॥ गर्भबंधन व्रणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद पद्मावती समर सोन्नावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महान्नय हरे कानपीमा टले ॥ जतरे शूल शीसग न्नणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रन्नु, श्रीपास जिण नाम अन्निराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, न्नमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणन्नत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लप्नामो ॥ नहि कोइ नव हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु न्नमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे न्नवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वुच्चं ति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शाशनं ॥ १ ॥ मंगलं न्नगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रन्नु ॥ मंगलं स्थलन्नद्याद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा न्नस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सव सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो नव ज्झायाणं; आयुधं हस्तयोर्द्दढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव साहूणं, मोचके पादयो सुन्ने ॥ एसो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सव पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च स-

वंसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं, हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा, प्रज्ञावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता, पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य, नस्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा०, स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशासन आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोड़ि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिंग जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक भेद ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण छत्तीसे शोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आ चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते क हिये उवज्झाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमा रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट ले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गे, अहो जव्य लोको जुला कां जमो गे ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गे, पड्या पाश मे जूतमाने जजो गे ॥ सुरधेनु छंडी अजाने अजो गे, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो गे ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम उपाडने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रजु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना डुख दालिड दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो गे, कुशीले करी देहने कां दमो गे, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न जाखे सदा हेत आणी, दयाजाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअमे मेह वूठा, प्रजु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ जूत प्रेत नवि मंमे प्रांण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयश्कार,

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पम तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वारू विलसे वंछित कोमि ॥ महियल मानि मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रभात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहिनमी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रुषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उमदना बाकला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लभा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांमव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो कामण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधी कूवाथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुन्नद्रा चंपा बार उघाम्यिो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांमुवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांमव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रन्नावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र बे साखी, उदयरत्न न्नाषे मुदा ए ॥ प्रह उठीने जे नर न्नणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ इख्वीकुल रत्नहीर, विश्वन्नूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जझ रंग विप्र संग, न्नूश्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रन्नु आये चंग, वाणी गुण सत्त न्नंग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख ॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, न्नये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरमें लीन ॥ मुनि मन जसँ चरणं मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नंद चंद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणो इन्द्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुद्धिसारीज०॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे डे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथ लकडिया कांधे कंबलियां, शिर शोजित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्जल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जयणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३॥ थिवरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश जविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥५॥ करत रामरुद्धिसार वंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥६॥ इति पद॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध जई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ रचाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुंदुभि नाद बजाते हे, धर्म के ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें लाते हे ॥ रामऋद्धिसार कहे रुद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं उठे परजात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे जव सायर पार ॥१॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक ले जे मन शुद्ध, धर्मनी हैये धरजे बुध ॥ पडिकमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चरकाण सूधि पाले जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवनसज्झाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदें नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारें देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवस्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करें अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंगा अधिकानो परिहार ॥ म जरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अजक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे बेबे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म जरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि

त शुद्ध हैये राखजे, बोल विचारीने ज्ञाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज्न, पालो शीयल तजो मन दंज्न ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, कथामां मत मलो सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर उपगार करो शुज्ञवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार; चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण ज्ञव ज्ञवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जावा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥ ॥२०॥ श्रावकनी करणी छे एह, दुःखथी पामे ज्ञवनो छेह ॥ आठे कर्म पमे पातलां, पाप तणा छुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणा ससनेह, करशो दुःखहरणी छे एह ॥२२॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पज्ञणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद करवि निसुणहु ज्ञो ज्ञविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥जंबूदीव सिरिज्ञरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदेस सेणियनरेस रिजदल बलखंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुज्जूइ तछ तसु पुहवी ज्जा ॥२॥ ताणपुत्त सिरिइंद ज्रूय ज्रूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंज्ञावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जिणवि पंकजजलपाडिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास ज्ञमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेह्ल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंज्ञी

र सिंधु चंगम चयचाम्भिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल ञ्मीत्त इञ्ञ गुण मेल्ह्या संचिय ॥ अह्वा निश्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंञा पनमा गवरि गंगरतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र छात्र हींमे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव ञ्भरह वासंमि खोणीतल मंमण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुब्बरगाम तिहां, विप्प वसे वसञ्जूइ, ञ्मुर तसु पुहवि ञ्भज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ ञ्मास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चौविहसंघ पइठा जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइठा ॥ ए ॥ क्रोध मानमाया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंञ्ज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसञ्भर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंञ्जूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंमक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण ञ्भणीजें, मेरु अवर किम उपम दी

जें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयंकार ॥ १६ ॥ नास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंभ ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए; साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहिं नामयो सीस तो ॥ पंच सयांसू व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभासकरे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्झायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिक्ख लेई सिक्खा सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें असिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुऊ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वम सहिय॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजृंभक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम भणे,

गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम ऊल्ल सिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए ऊंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजग्रही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हेसा, जिम सुरतरुवर कणयय तेसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३ए ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जूमीपती जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझायं थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीजे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पजणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लब्नइ पार, बम जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन उन्हो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

णो ए ॥ तिहां बेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसो, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ जूख्यां जोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा जंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंबित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सवलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास जणूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरणा, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो, नही बे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा डुरित पुलाय ॥ जेटंता जव जय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण जरत मऊार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां बे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंमरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नांम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरबे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति; मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ थ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नाम, जपेज बे ठा अपने गाम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल उंचपण, छवीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण उंचो सही, ध्यांन धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, उंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणो विसतार ॥ दो जोयण उंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छट्ठे अरे, पिहुलो पर वत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण गांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण गामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुंज साधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

णं पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परन्नात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न मीपुत्री चउसढि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी धा एकढि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावम ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रज्रुम्न गया इहां मुगते, आठू क र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवस रया गिरिश्रृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, न्नरतेसरने पाट रे ॥ रा म अने न्नरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन ता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यों सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमरुना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु षन्नदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ न्नरत गयो वंदणनें काज, थे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहि मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, न्नर त सुणीने मन गहगह्यो ॥ न्नरत कहे ते किम पांमिये, प्रन्नु कहे से त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ न्नरत कहे संघवी पद मुऊ, थे आपे

हूं अंगज तुझ ॥ इंद्रे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरतें गणधर घर तेमिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेड़ायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भगत कीधी अतिघणी, संघ चलायो सेत्रुंज भणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोड़ साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामे रही महोछव कियो, भरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक झड़ पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूंख के जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्र ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, भरत करायो गुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ भरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्राशाद, भरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो . आसावरी ॥

॥ भरततणे पाट आठमे, दंडवीरज थयो रायो जी ॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब भंडारीयो, पश्चिमदिसि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र कराविंयो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविंयो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविंयो, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति समरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कराविंयो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय कराविंयो, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय कराविंयो, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविंयो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेट्यो अपारो जी, काष्ट चै

स्य बिंब लेइना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिम्रोतरे; श्रीमाली सुविचारो जी, वाहमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे; देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पांमीजे न्नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांन्नलो जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ न्नगवंतनो न्नेष मांनता, लान्न हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्तनी स्त्री थई, शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक न्नणी, न्नोजन पून्य विशेष॥ सेत्रुंज साधु पमिलान्नतां, अधिको तेहथी देख ८

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेत्रुंज गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥४॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते छेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभरण जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोडा मही, गज अह चोरणहारो जी ॥ दे ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक तिण गामो जी ॥ से० ॥१०॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा

करू ए, सफल करू अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ डहरी पालतां चालिये ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मिल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, बमने चोंतरे आवि ॥३॥ से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परन्नात ॥ सेत्रुंजनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥४॥ चढिये हिंगलाजने हमे ए, कलिकुंम नमिये पास ॥ बारीमांहे पेसीये ए, आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ॥६॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ वी कराविये ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, न्नमतीमांहे न्नला बिंब॥ पांचे पामव पूजिये ए, अदन्नुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उद्वेग ॥ से० ॥ ए॥ धरमदुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ न्नगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, न्नमतीमांहे न्नमंत ॥११॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कलश अगेतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंमरीक गणधार ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३॥ से० ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी न्नूमि बिंबावली ए, पूंमरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंम निहालिये ए, अति न्नली जलकाऊोल ॥ चेलणतलाइ सिद्धशिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

ज ऊतरूं ए, सिद्धवरूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सीधा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल क्षेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठां जणे जावसुं ए; तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल वयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजतणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछ खरतरतणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, समयसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ शिखरसमेतनी, महिमा वर्णी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन जेटो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर वली ॥ विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर सहु गुण नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उछव धरे॥ तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग ॥ अवसर दे संवत्सर दांन, संजम लीनो आप सुजांण ॥४॥ कर्म खपावी पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधांन ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर थया, पं चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साध्व यां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठाणुं सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी सं ख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं भीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेच र किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उछव करी॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही, अगाइ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वांण ॥ शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही सांजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा
ण, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
सरीर मनोहर प्रभुनो जाण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा
न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसे उच्च
पणे प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर
होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीसंभव
जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट
लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दु
रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥
सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण
कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण,
तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-
मेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरी ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे
मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रग
ट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी
तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥
पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि
छ लाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी
दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकण्यांरी संख्या
जाण ए, नायकयक्ष कालिका गाण ए ॥ उल्लालो ॥ जाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥२॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रोंच सोहै सुभगे हसै ॥ पूरब लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुणगण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुसंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलत णो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई सै त कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावे एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहत्तर श्रावक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमर रसु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसें देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी थाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्राप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्राप्रभु वंदियें, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवे ऊपरै, प्रभुजी नो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, जए सुविध सुजन जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंछन सुभ श्रीवछनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥९॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ धनर संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खड्ग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चोरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥ अरूतालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख देत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ दिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज रूपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख वछरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अरू सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ षण्मुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख देत जी ॥ न० ॥ ए ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पचास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वछरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ असे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमोऽ जगत्राण ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमाण ॥ श्रमणी बासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर यक्ष्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदूं वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जयकार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ बासठ सहस मूनि भले जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरूडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसे मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ वसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्खनो जी, श्राव क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब ला गंधर्व॥कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखणा सर्व ॥ज०॥१५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रो तां सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू॥ए देशी ॥

॥ हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥ ॥२॥ श्री अ०॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जाण रे लाला ॥सहस बहुत्तर लाखनी लक श्राविका संख्या आंण रे लाला ॥ श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा र रे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचा वन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चा लीस सहस मुनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्रयासी लक्खनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म०॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ए ॥ राजग्रही राजा पिता, सुमीघ पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरस तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनें सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफणा, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जयश् परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याती, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडत्तीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोधिबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा यह्य अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे नर भावे, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे भक्ति, संघपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जा श्री करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव थाट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसोभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसाये रास रच्यो ए, अ

श्रुतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसै सितमोत्तर, सुदि वैशाख सुढाव जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, नणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

ऋषन प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, नावैं श्रमण सुगुरु नगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ नरत महामुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उपशम नंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पाम्यो विमलाचल नवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषनवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महाबल संजम लीध ॥ अचलादिक बलदेव अष्ट मुनि, राम ऋषीसर नवम अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ब वसुंदर, श्रीमल्लिनाथ पूरबनव मित्र ॥ पहुंता परम ऋशीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमण सुकोसल मत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोनसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधांन ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अंतर प्रकासे तिमर नासे, नविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पैंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषनदत्त रतनत्रय गुणी, स, मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल थिवर आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म नाख्यो सोधि सिवपुर स क्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंमरीक महामुनीसर प्रणमिये शुन संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंदु वलकलची रा केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू डुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृपनादि देखी थया वरू वइरागिया, संजमसिरि नज मोहनिद्रा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंते कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुद्ध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणनइ सुनंद सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ तीस सुव्रत, साधु सुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत मोजनइ गरुड गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये, दसारण नद्द नमुं डुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदृढप्रहा

श्री सिवरमणी वरो ॥उल्लालो॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगमू क्षमावंत प्रसिद्धत, कोन्डिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिडोत्तरा ॥ गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गरुआ श्रीगुणसागर गाईयें, प्रथवीचंद प्रणम्यां सुख पाइयै ॥ खंदकुमार सदा अभिनंदिये, नमिद उरद मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्री इंद नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मगिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी संसे ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सुदंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअभयसुत आद्रकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर देवसंनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत हित घणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥१७॥ ॥चाल॥ जति जयघोष विजयघोषै जुउ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुउ॥श्री इखुकार नृपति कमलावती, रांणी भृगुसुं प्रेहित सुजसमती॥ उल्लालो ॥ सुजसमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए छहूं लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती॥ १८ ॥ चाल॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विषसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण वीर ए ॥ ३० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु भद्र नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुंख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी॥ अजैकुमार मुनि अन्नयंकरो, हल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥ उल्लालो ॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनक्षत्र ने सर्वानुन्नूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नद सुधन्न मुनिवर समरतां मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वरूवैरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्नव परगड़ो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी, नांमे घर नवनिध वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संन्नूतिविजय जयो, न्नद्रबाहु श्रुतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनीराय॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज॥म०॥ ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहस्ति विसाल॥ संप्रति नृप प्रतिबोधियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसांमि यसंसियो, अज्जसुन्नद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवयर स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन वियावरू, श्रीरक्षत गुरु वक्र ॥ पुसमित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु डुरवलका पक्ष ॥ म०॥ २८ ॥ विंक साधु सुविंवइ न्नरयो, श्रीखंदिल सुविहृष्ठ ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो, क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री दुपसैं सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ आर्दी

सुंदरि रायने, सादुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिकी रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिज्ञङ सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीये, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणगं ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख जरपूर ॥ म० ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम हासिद्ध घेरे फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई॥ रुषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रजु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मद सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमिये, जेहना नाम प्रगट ए जाण ॥ केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुजूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति भुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नांमे, वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे भविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाभ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नांम सुपास ए, हुसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साध ए, चोथो स्वयंप्रभू नांम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वांमि सलहीजिये ॥ संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो भणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निःकषाय जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निरमम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती, अढारमो शतालजीव संवर जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अंबड श्रावक भणुं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंतवीरज नमो, स्वातबुधजीव ते भद्र चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगम चोवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ परसिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, सास्त्र अनुसारथी साच कर सद्दह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदिये, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंधिर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु रुषभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा भद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नांम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ रुषभानन चं-द्रानन वारिषेण वर्द्धमांन ॥ च्यार० ॥ ९ ॥ अठ कोडि उप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे बयासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोडिया, बिंब भेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसै, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ त्रिभू जिणवर नांम ए, समरथा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम कित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमांण चउ जिणवर सासता, संथुण्या सतरैसे बयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता मणितणो पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमै सदा जिनचंद सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री त्रिभू जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए जाए उव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो, विसहइ बहुयाई असरिसज

णस्स ॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न चइ
आइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जद्दो विणीय विणउ, पढम
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं; विम्हिय हियउ
सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति ॥
इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणी
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
॥ गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ
माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स
अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउ सव्व
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू ॥
अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पभवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरसो, तश्या वाणा-
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥
तह वि य सारायसिरी, उल्लइंती न ताइया ताहिं ॥ उयरहिएण
इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
ज्झाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नत्ति ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह नरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिछंता ॥ १ए ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिउ मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवउ यं ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहछित्र अप्पसक्खिउ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण नावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्ज्ञमिउ ॥ संवछरमणसीउ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियमम्मइ विगप्पिय चिं, निएण सछंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गविउ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्वकेइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं नन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स डुक्खमल्लियए ॥ जं च मरणा वसाणे, नव संसाराणुबंधिं च ॥ २ए ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुझई कोई ॥ जह बंनदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलछीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, नरिय नरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोतूणवि जीवाणं, सुडुक्कराइं ति पावचरियाइं ॥ नयवंजा सा साला, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पमिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवमियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिज्झा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिझाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणह जिट्ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंडिअसरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाई उवउगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा भक्खाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंसु, मुक्कमग्ग संसग्ग विग्घ भूआई ॥ दुग्गइनिबंधणाई, अठारस पावठाणाई ॥ ६ ॥ एगो हं नत्थिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आय रिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मज्झ, उवझाया मज्झ देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लरकाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लरकाउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लरका यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह, मज्झह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणे अवगुणें सहु भरयां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम हुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणा रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिझाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सु० जाणे सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करें सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन वांछयो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं भरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयां रे लाल, सघले थयां नवरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिझाय समाप्त ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढयो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुज पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन हरडी, हरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पडिक्कमणो भावसुं, दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लाल रे ॥ परभव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणु भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम

दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावें तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, जलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारो रे आपणां, ते जव कर्म निवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुजध्यानथी, पच्चक्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सध्या यें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरिजें हो ॥ जवियण मंगलिक सरणां चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमें राखिजें हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥ केवलि जांख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ ज० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए जारू मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥ ज० ॥ ए चारूं तहतीक हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥ ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्तानें सूर ॥ वैरी डुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावें नरनार ॥ परजव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरतें आनंद सुख सदी हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ जोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिझाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवा री लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न लै अणसूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, बांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आण्यो भाव वि सेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वछ ताहरी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, ल्याईया परठ-

न काज रे हूं० ॥ ईंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती भावना हुं०, पांम्यो केवलनाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनरू तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममनो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीभ वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०॥ कोरू बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो मो० ॥ भोगवि लेज्यो रे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर२ भिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम भणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग छै ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केसां रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हे अम्मा, कूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो॥१२॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा, कूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार थि मोरी अम्मा, वीर बखाएयो परखदा सहु सुएयो ॥ १४ ॥

मैं इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जों-
वन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै
मोरी अम्मा, जो खिश जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो
रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवा
रण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं
जम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रूडा जणे ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी
अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना
ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम
तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव
स रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारचा एकण दिन, जोध
जुवान नर जैसा ॥ सगर हुउ महा पुत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल
एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्मे कीयो तनु गार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्मे द ' ल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥
बारे वरस लग अ.ध आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दधिवाहन राज.ी बेट', चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं
चहुटामें वेची, करम तणा चू ला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संभूम नांमे
आठमो चक्री, कर्मे ..थर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जना देखे,
पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मे कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो नविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोड़ जादवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंउ एकलड़ो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांडव पांच महा जूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रूवड़िया, नमिया जेम भिखारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलड़े जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पाम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय सिरोमणी द्रौपदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आन्नानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकड़ो, कर्म्मे नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन२ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धिहरष कर जोड़ीने विनवै, नमो२ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे भाइ सातेई, आपे दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पम्थांथकी, पाम्व पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू रा जरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जक्षण अवगुण घणा, करै पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दहव्यो जा दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे स्याघर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे दुख जोर वि० ॥ मुंजदेव रा जायें मारियो, चावो हुंफक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण जव परजव आणंद अतिघणा, कहे अमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेडाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत कंठार सबलो पडे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे वस्यो जी ॥ सौडि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जो ॥ श्रेणिक पञ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ भगवंत सांसो भाजियो जो, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवत णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ भूलो मनभमरा कांइ भमै, भमियो दिवस ते रात ॥ मायारो लोभी प्राणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय नें बाप ॥ ऊ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखै बेठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरवो छे रे तेह ॥ वीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड माय ॥ ८ ॥ भू०॥ मह मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाभ ववारियै, लेखो साहिब हाथ ॥ भू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मूंठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथ की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भासै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु बांधव वांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहुबल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी॥ पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठो जी ॥ खरै दुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रवदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीठो निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियै२ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणको, पूछे लोक हजारो जो ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह मैं अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिल्ला उपरै, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल लीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणिये, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरव नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चढयो गजगेल॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमें, गाजे अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पड़ै नटवी रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै रे भूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवड़ा, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करे, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशना वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुज आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केवो भोल व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ कयौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस भार रे जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछे जी, जोवन भरयौ रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियौ कांन हे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांठवीये जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणो जी; जाणसि तुज कुमार रे जाया ॥ हूं न० ॥ ६ ॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जोवनभर ठोरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमिश मात पसाय करी जी, मैं दीधुं तुज दुख ॥ दिउ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणें ब्युं दीख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रमै जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुली प्रिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिबिका तब सझी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जांणी वैरागियो जी, वरजे जे नर नारि ॥ करजोडी पूनो भणे जी, ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली परूवा तीन विमास ॥ चौथी परूवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जां लगि होली झमै वार, धुंवर पडती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो भय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ झूझै मल्ल मांहोमांहि जांम, तां लग असिझाई तिण गांम ॥ ३ ॥ नृपति परभव पोहतो होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली छै असिझाइ, स हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पडिवा लग असिझाइ वकी ॥ पडिवा बीज तीज चांदणी, समीसांझ असिझाई गिणी ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागै जांम, गाज वीज असिझाइ ताम ॥ गाज वीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संभाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारे आठ वि चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्ये बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखे भविश्रण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥९॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥११॥ इंडो फूटै प्रसवै गाइ, जां लग रुधिर पडै तिन ठाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिण्ह पोहर के ऊपर नही॥१२॥ असाढै चौमासै दिने, पडिकमणा ठायांथी गिणे ॥ बार पोहर असिझाई कही, काती चौमासे इण परि लही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छै बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांभलि ए में कही संखेवि, हरखै पय प्रणमू कीजे देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतहर जेह, च्यार मावठवीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग वीश्रं अक्षरै, तव कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालों रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो भवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोभी नर कूडौ करौ, जांणी सावद्य रे अभक्ष बावीसे परिहरौ ॥ वड पींपल रे पिलखण नें कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ रखे तुमें भक्षण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ढंडि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्ञान र

पणीभोजन, प्रथम डुरगति बारणो ॥ मम करो व्यालू अति अ सूरो, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब नांम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण रे तुछ फला सवि भांफ ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंभ ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंभए व्रत नियम लेइ, बेइ फूव व्रत भंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज भोजन, चलित रस दोष जेहनो ॥ संवर आणी अभक्ष ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥ गुरु वयण विगतें वली पूछयौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥ अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु भक्षण रे पातिक बोल्या छे बहू ॥ कचूरो रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद बहूं कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै चतुर नर आंविलो ॥ रतालू पिंडालू थेग थोहर, सतावरी लसण कूली ॥ गाजर मूला गिलो रींगण विरहाली दुकवत्थुलो, पल्यंक सूंरण वाल वीली मौथ नीली सांभलो ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे कूंपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी रे भमरवृक्षनी छालडी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलडी ॥ ९ ॥ वेलडी तानु ताजा खिलोडा ने खरसुआ, भूय भूंफोडा छत्रा कार जांणो नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोल्या लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी ते सवि सुख लहे ॥ १० ॥ इति बावीस अभक्ष सिझाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिझाय ॥

॥ संबेगरसमे भीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १॥ यादवराय धनश गजसुक माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभू पास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा यवा अलजयो, परूषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो, पिण दिन जावे रे तो छेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय काउसग्ग रह्यौ, तिण सांझि प्रजुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिं तवे, एहनैं साची रै छे मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगझी रचि सिर ऊपरै, चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मु निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई, ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांझी करी, रातिनी वी तग वात ॥ हरि देखी हियझो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचलरा ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ए ॥

॥ अथ प्रषणचंद्र सिझाय ॥

॥ राज छंझी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागे मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रष्णचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध२ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां झियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे, एहनी सी गति थाय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि वि

मांन ॥ वाजी देयनी डुंडुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥रिद्ध रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गर्भा वासे जीवडो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाडी है दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूत अंधमंध॥ उ० ॥ ५ ॥ नाडी वांसतणी भरिये घणी, रूघाल॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, है नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो बार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ए ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गर्भे कोइ जीवडो, जंपे जग हीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणे इहां, आयो गर्भावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने सोणिततणो, नही कूड लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर-जापत पूरी नही, तिहां विलवावीस ॥ तिण आहारैं तूं थयो, उदा रिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजावै अंग ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करै प्र कास ॥ १९ ॥ उ० ॥ वारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गर जतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हु वे दिन सातमें, अरवुद दिन सात ॥ अरवुदथी पेसी वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अडतालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सु थिर मास बीजे हुवै, हिव तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजे, मा-ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथे मासै मातना, प्रणमे सहु अं ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पि त्त रुधिर छठे पडै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे सी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोडि ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोडि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मा सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ ऊंधै सिर वेदन सहे, जंपे जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वडनीत ॥ वात पित्त कफ गरजथी, थाये नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सूंटि लगे, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी छ्ये आहार ते, जाय नाडोनाड ॥ रोम इंद्री नख चस वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरने सुविचार ॥
॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विज्ञ
ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥उ० ॥ ३२ ॥
कटक करे वैक्रियपणें, जूजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधे मुख गोडा
हिये, सहितो बहु पीड ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी
भींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर पिण वस्त्र जलादिके, ऊपजे आ
थान ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥
॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवे, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम
नीकलूं, नाउं गरभावास ॥उ०॥ ३६ ॥ ऊठ कोडि चांपे सुई, कोइ
समकाल ॥ तिणथी गरभे अठ गुणी, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥
॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
ते सुवें, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभथकी दुख लख
गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग् २ मोह वि
कार ॥ उ० ॥३९॥ ऊपन्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु
रत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवे,
पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन २ दीसे दीपतो, करे रंग अपा
र ॥ लाड कोड माता पिता, पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहे, चेतो चतुर
सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, छै सातसे ना
डि ॥ नवसे नाडी पिंडमें, तिम तीनसें हाड ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि
एकसो साठ छै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,
ढांकी छै चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब
सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अछै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती स सुलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणथकी यदा, उछो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खानें पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजें दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजें दसकै तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आंनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथें दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥ उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ छठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आई जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणैं, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालैं वचन बहुआंतणो, दिन फुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन छेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुम मिले, पमै मुंहमे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ उ० ॥ कोमि रतन कवमी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखैं पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संन्नार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ चवदे राज प्रमांण ए, ठै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६२ ॥ ज० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ ज० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ ज० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ ज० श्रीनमि रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ ज० ॥ न्नोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ ज० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ ज० ॥ तंडुलवेयाली अछे, एह नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही कूड लिगार ॥ ७० ॥ ज० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांन्नलि लिये संजमन्नार ए, परि सिंह केरा सदा पाले नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल न्नोगवि ते लहे न्नव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ ज० ॥ इति ज्ञतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घमी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कन्नो तूं मिश्रमोहनीमें, कन्नी तूं कामरागमें, कन्नी तो स्ने हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कन्नी तूं कुगुरुमें, कन्नी तूं कु देवमें, कन्नी तुं कुधर्ममें, कन्नी ज्ञान विराधनामें, कन्नी दर्शन विराधनामें, कन्नी चारित्रविराधनामें, कन्नी मनोदंममें, कन्नी व

चनदंडमें, कभी कायदंडमें, कभी हास्यमें, कभी रतिमें, कभी अरतिमें, कभी भयमें, कभी सोकमें, कभी डुगंगामें, कभी कृष्णलेस्यामें, कभी नीललेस्यामें, कभी कापोतलेस्यामें, कभी तुं ऋद्धिगारबमें, कभी तुं रसगारबमें, कभी तुं सातागारबमें, कभी तुं मायासल्यमें, कभी तूं नियाणासल्यमें, कभी तूं मिथ्यादर्शनसल्यमें, कभी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता हे, कभी तेरे बाहिर कर अठारे पापस्थानक आय फिरता हे, रे तूं आत्मा महा डुष्टी, महा डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणदृष्टी, अरे तूं अयोग्य कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव, प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोभरी चोकमी, विचारा तेरे खपी नही, गुणठाणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे उछल रहा हे, तें जो धर्मक्रिया करता हे सो शून्य मनसें करता हे, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा हे, अरे चेतन! सोगन नही लेवे सो पापी, उर लेकर भांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय, अभक्ष, शीलव्रत, जरदा, भांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां छूटकबारा होगा, रे चेतन! तें पुद्गलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो हे, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधांन हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, इसमे गुणठाणेवालेकेही लोभका त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरै, हे चेतन! तूं मनमें विचारतो

है मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा, संसारमें न किसीका तुं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पुत्र पणें, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें ठगकी बेटी नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो गेगा ? मा बोली–बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबतो उसने कहा धिक् हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म, आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क उएकूं उडाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ- ऊंबरी कुगुरुउके उपदेसर्से चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा जया, मांनरूपी गज पर बाहूबल चढा उर संज्वलनमांन था, उर ब्राह्मी सुंदरी बहिना जैसी समझाणेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो एसा मांन, अरे चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं जरतमाहाराजा जिणोंके केसीक राजऋद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यनें, धिः कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोंकूं, धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य जो सर्वविरती धर्म पालते हें, धन्य जो दांन देते हे, धन्न जो सील पालते हें, धन्य जो तपस्या करते हें, धन्य जो जावना जाते हें, एसें जावना जावतें जरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोंकी बराबरी मतकर, वहतो तेसव

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्र-का कीमा जनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जीववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गिराया; इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्र भाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं भिगाय दिया; तो तेरी तो विसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछे लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-की फोजसें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परिचय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीछी मार, जेसेंतें तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका ज.प-क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वाडका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका प्रजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, बारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पाले, रे चेतन तुझे कब उदे आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवे, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणै षडावश्यक करै, मुझेभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सामायक मनसुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण हे, ओर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझें पढणे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञांन ओर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्त्तार होता हे. दिवस प्रते दे कोई सुजांण सोना खंडी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्रावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे कांम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौद्रध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवड धरै, साचो थोभो आगम भणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें पराया बुरा चाहता, अपणा भला चाहता, वो पराया बुरा था नही चाह्या वो तेंनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रक्खे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन ओर कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भस्म कर जिस्से तेरा गरज सरे, अहोहो में भव्य हूं अभव्यहूं अथवा दुरभव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता हे, प्रायेतो में अभव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने भाव देखा सो सही, हे रे भाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खुणे खाज मोमे

करमका, डंपतर्णा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-कारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहा-निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे छती शक्ति साधु जिनमंदि-रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका डंम और श्रावककूं बेलेका डंम ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घमी रात रहे पिछली तब उठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी बाधाकुं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अछा वस्त्र आभूषण पहरके घोमा हाथी रथ पाल-खी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे. जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुभली कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखीथी सोभी छोमे २; (इसमे द्रव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल नावपूजाही करे, लेकिन् इव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रनूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक—प्रनूकी अंग१ अग्र२ उर नाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुटुम्बी देवकार्यकों छोडके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ हो सो विकथाको छोडे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया नया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके नावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, नावसें दुसरी निस्सही कहते मूलगुंनारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल नगवानकी स्तवनामें चित्त रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अछा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें भगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवडा जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवें, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लखे–दर्पण १ भद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसें अष्टमंगलीककूं पूजे, अछे केसर चंदनके छडा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अछे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग भक्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रभावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया ऐसें शंकारहित भव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नेवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा ३. द्रव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक–तीन अवस्था विचारणी. पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद है. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवलअवस्थाकों विचारणा सो पदस्थअवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक–तीन दिशा छोडके प्रभूके सामने नजर रखे,

उर्द्द १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३ ४ वांइ पिछाम्ही निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ८.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ९.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाइं इह संतो तछसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंम विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आभवमखंमा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं. सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे भोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट छत्र खम्ग चमर पाडुका अचितवस्तुउंकाभी छोमणा आभूषण वगेरे पहेरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजिणाणं एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बेठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद हे. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंडक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोडे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ठ एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सच्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परबल भींडी तोरी केला मतीरा ककडी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शली तेसें अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें फालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिणतीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे नात दाल रोटी कढी मांफिया कट्ट तरकारी सब जात पापम खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचमी तो वह अनेक द्रव्यसे वणी नई हे तोनी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ उंर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लोंग इलायची डोडी उंर बमी जायफल जावंत्री प्रमुख सब स्वादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारणा प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघमी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कई जे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपडा दिनमे मोकला रक्के. पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवडा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रक्के. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाडी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुरुदोड लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रक्के. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी छालका चमडेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ए.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोडे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य निमय. रातकों तथा दिनकों सूइ डोरेके दृष्टांत जेगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रक्खे, घमे प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा ३ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत दुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रक्खे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रक्खे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम. जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंड तंदुल मुठ ३ थालमें रक्खे उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पडिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइआरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाथे पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीछे सतरे थुईमें नवकार १ एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणें शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके बडा स्तवन कहे पीछे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः । पीछे खमासमण देइ श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायके आराहणार्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोहनार्थं करेमिकाउसग्गं. ४ लोग स्सका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मनमें धारणा रक्खे. सूत्रं अहन्नंभंते तुह्माणं समवे मिछत्ताउ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतित्थिएवा अन्नतित्थिदेवयाणिवा अन्नतीत्थिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणुप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नछरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ भावउ तछदवउ दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउ जाव भरहमज्झिमखंडे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावछलेणं नछ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नन्नविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नछराभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थ सत्तावीस उस्सास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाऊंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिकों डुविहार तिविहार चउविहार उर बावीस अजक्ष बत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे ठोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमांण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे उपयोगसे सदा वर्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरूक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं समीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पच्चरकामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पम्किमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरूक तीन वेर उच्चरावे॥१॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसावायं जीहाछेयाइहेउअं कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पच्चरकामि दरिकन्नाए अविसए दवउ खित्तउ कालउ जावउ सवउणं मुसावायं खित्तउणं इछवा अणछवा कालउणं जावज्जीवाए जावउणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरूइ तावअजिग्गह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थणाजोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वछुविसयं पच्चरकामि दवउ खित्तउ कालउ जावउ दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इछवा अन्नछवा कालउणं जावज्जीवं जावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि असेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवरूई ताव अ

ग्गिगह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव० वोसि
रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंभंतुम्हाणंसमीवे उदारिय वेक्किय नेयं थूलमेहुणं
पच्चक्खामि अहागहियभंगएणं दिवंतिरिं माणसियं एगविहं एग
विहेणं पच्चक्खामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं मेहुणं खि
त्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
भंते तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पडुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चक्खामि
धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
हियभंगएणं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं नवविह
परिग्गहं खित्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवं भावउणं
जावगहेणं नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ५ ॥
अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चक्खामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ भावउ दवउणं दिसिपरिमाणं खित्तउणं धारणाप
माणं कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
उ० तावअभिग्गह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंभं
ते तुम्हाणं समीवे भोगोवभोगयेभोयणउ अनंतकायबहुवीया राइ
भोयणाइं परिहरामि कम्मउणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
इं बहुतावज्जाइं खरकम्माइयं रायाभियोगंच परिहरामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ भावउ दवउणं भोगाव भोगवयं खित्तउणं इहवा अन्न
त्थवा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
सह०. मह० सव० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंभंते तुम्हाणंसमीवे
अन्नत्थदंडं पच्चक्खामि अववज्झाण पापोपदेश हिंसोपकरण
दाण पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंडं जहासत्तीए परिहरामि तंज
हा दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं अन्नत्थदंडं खित्तउणं इह
वा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणं नगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा सं त्तीए पमिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिक्खावयं डुंवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सवस० वोसिरइ ॥ ए ॥ षट् साख ७ भंमी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ नविश्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पूंमरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि; आचारज भगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवज्झायाणं रे छठ्ठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी भगति करउ, नमों दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयंकारीणं विनय वखानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो बंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दांन ते पनरमे, नमो वांयगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं ज्ञणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्ञत्तीणं रे उगणीसमे ज्ञविया मुणउ, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइ सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघज्ञगती रे यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उंली एक षठ मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पमिकमणे लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये, आरंज्ञ वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेणे नामकर्म्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणांगे रे सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास उदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थांनक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा०॥ ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, ज्ञेटे सहु ज्ञवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रज्ञु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखमिया, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय ऊलकें, शशि सूरज सम ज्ञास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिज्ञुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसासं ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हांरे में खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें म्हारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखमली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय भन दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन और न कोई मेरे, देख्यो त्रिभुवन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घमी तमकी अब रहियो, ऊठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, और भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ, दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भव की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ करूखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित्त पूजतां, धन्य होय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंडार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रुषभजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अगणत एक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुझ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्धारण छो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनको अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपुं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावम शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां शून्न जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाए जोईने कन्न जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे कन्न जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुझनें पांखमी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह ऊगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो मैं विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीप्रमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यों तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तु' मारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटतुं हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण दीजें ॥ धूंवाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥ ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंडण साहिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, भवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण भरत मझार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आडो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु . मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाडला, कागल द्युं किण हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलशो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति भरे सहु देशमें रे, प्रगट भयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मल्हयारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रली री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणिंद्र पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनमें व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत्त, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजें) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुण०ज्जा रम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुद्दपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पुग्गल संगेजेह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोडे टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पइधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, भविजन तारण जेहनी वांणी ॥ परमानंदतणी नीसाणी, तसु भगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कुसुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्मदिठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्षतणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक विहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, भत्तहि भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ ढाल ॥ भव तीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी

भावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणांम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आउबंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरभव उदार, भरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्जल सुंदर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्थे, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांभले सो भागी ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधांन इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्राउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अबधे मन आ- णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भवअमविय पारग सउवाद, केवलना णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥ ३ ॥ लग अम पय समुहा आवि तउ, कर अंजलि

प्रणमिय मन्त्र सत्थ ॥ सुख पावे ए कथा आज सार, तिय लोय पहू होगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समांन, मिथ्या विष चूरण गरुड़वांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समत्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुउ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कउव करेवि, तब देव देवो हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तब रंभा गीत गांन, सुरलोक हुउ मंगलनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे उछव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइए थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खड़ा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार, नरखित्त मंडण दुह विहंडण भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख उछव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि विशेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूइयकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींझणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि मज्जणकार ॥ वर राखडी जिन पांण बांधी दिये इम आसीस, जुग कोडिकोडी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उलालानो ॥ जिन रयणीजो दस दिसि उजवलता धरे, शुभ लगनेजो ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे, तिण अवसरजी इंद्रासण पिण थरहरे ॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उछवकाल जांणी अतहिं आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण नगते ऊ मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुउ अछे, तसु नगतेजी सुरपति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर नुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउछव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांनलजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कृतपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुन्ये नरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊमहे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गावती, अछपरा कोमी हाथ जोमी हाव नाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम द्ये आसीस ए, अम त्रांण सरण आधार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पांकुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व नगते कलश श्रेणि बणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पजमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, उत्त चामर सिंहासण सुजतरा ॥ उपगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उठंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा॥ इंहोदेवा अणाइकालो अदिठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिछत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्ठो २ हि यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पजणंति वण जवण जोईसरा, देव वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइजङगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुयश्ड इंद आ देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पा रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अजिषेस ॥ ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हाभे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अजिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तबईसा णसुरिंदो, सक्कंपजणेइकरिसुपसाउ ॥ तुम्हअंकेमहताउ, खिणमि त्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपजणइ, साहमीयवछलम्मिबहुला

हे ॥ आणाएवंतेणं णिएहइ होनकयत्थाओ ॥ २ ॥ (कलस ढाले) सोहन सुरपति वृषन रूप करि, न्हवण करे प्रज्ञु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि, वर आज्ञरण अज्ञंग॥१॥तव सुरवर बहु जयश रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, जांज सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोम्म बत्तीस सोवन जवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रज्ञुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीसर, करे जिन ज्ञक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर, कहता प्रज्ञु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मऊार ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिनआणा रंगी, राजसार उवज्ञाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन ज्ञगते गायो, जनम महोछव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा ज्ञगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विज्ञाव निज ज्ञावमा, रमता सिव राज ॥ ३० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रज्ञु, केवलनाण दिणंद ॥ ३० ॥ २ ॥ जन्ममहोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ ३० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां ज्ञव पार ॥ जिन प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मऊार॥ ३० ॥ ४॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चंदन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरंचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हियजाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संवर भावसु धूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ भविक निर्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतु भाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधति नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतन भाव विलासकं ॥ सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति भाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफल व्रज ढोकनं॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्घ) इति जिनवर वृंदं भक्तितः पूजयंति, सकल गुणनिधानं देवचंद स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व सुभावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौक्षं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्च्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ प० वस्त्रं यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकम तथा केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भवै भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर सिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार ॥१॥ राग सरपदों ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि सुछिंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद॥१॥ गाहा॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५॥ मालारोहण ६ वन्नयं ७ चुन्न ८, पम्हागय ९ आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय वंसुघरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अट्ठमंगलयं १३॥ धूव उखेवो १४ गीयं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपदि परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोछ० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वांनी ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसमांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंद्र जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूप रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

हो पूजा साचवै, श्रावक शुन्न परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण ब्ल्योरी सुधारस, तपत बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रन्नूकुं विलोक नमि जतन प्रमारंजित, करत पखाल सुचि धारविनको ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत, पंककु वरष जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि न्नवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिळ्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुन्न मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगन्नर करतां, आल फलो मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज। डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये ॥गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकम न्नेलीये, कर लीये हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचोलिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे देवा, न्नाल कंठ उर उदरंत रे ॥ दुख हरे हांरे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजीयै ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरे, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरे, तिम करे हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजिये ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे न्नवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शसिरता संग ॥ चित्त खेद सम उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजे

जिनवर अंगे, जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर खंधे सिर भाल कंठ, उर उदरन्तर संगे ॥ विबुधपति अघ मेरो कर त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगे ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहे साधु तन शुचि करो सुललित पूजा, जैसे गंग तरंगे ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोंडी ॥ कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधे अधिवासिया ए, हांरे अइयो० ॥ कनक मंडित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ हांरे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शक्रो यथा, करिय पहरावणी ढोइये ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें, वस्त्रयुग पुंज मल धोइये ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैराडी ॥ देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥ तूंही हे सबहि हितु तूंही हैं सुगति दाता, तिण नमि२ प्रभुजी के चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सब राग दुख संसय धुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रभुजोकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोडी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारण वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहे मोहदल पास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजे जिन अंग नवंगू ए ॥ हा० लाधि भवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अभंगू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौडी ॥ मेरे प्रभुजीको पूजा आनंदमेलै, पू० ॥ वासभवन मोह्यो सबलो ए, संपदा भेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन राजं तत्ताथेइ, चतुर गति डुख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुह्प अनेक प्रकार ॥ प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण भवरि धरै ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥इति॥ राग कानडो ॥ सोहे री माई वरणें, मन मोहे री माइ वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनचरणै ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सरणै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विषै हां० पं० डुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति भगति भगवंतकी, भविक नरां हांरे भ० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छट्ठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए छती, महा सुरभि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी थापे गलै, जेम टलै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुजरी ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ ज्ञलां पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाब पाडल ज्ञिली ए ॥ ज्ञलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मोगरा वेउला मालती, पंचवरणे गूंथी मालती ए ॥ ज्ञलां गुं० ॥ हे माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥ ज्ञलां स०॥२॥ इति॥ राग आसावरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुदमंदै ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोफरपूजा सब फार धूजै ॥ सब अरियण हारे स० होइ तिम छंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख, ज्ञविक ज्ञगत हारे ज्ञ० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोफर पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रज्ञुकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसें अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवडा, सोज्ञे तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौडी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद गुलाबसुं चंपको दमणाको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीये, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगिये ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग ज्ञैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जुई वेउलवाती ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी ज्ञांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, ज्ञैरवी कुमति व्रत तिहाती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरभि सिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब सुमतीजन रीझै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र तीर्थंकर बांधइ ॥ भलां गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-ल्हारस, लावै जिन तनु रागें ॥ धार कपूर भाव घन वरषत, सामेरी मति जागे ॥ भवां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौड़ी ॥ वस्तु॥ सहसजोयण१, हेममय दंड ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुग्घरीय वाजे ॥ मृदु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल सयल भाजे ॥ सुरपति जिम विरचे धजा ए, हां ए वि० ॥ न वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥ आपै दांन अभंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधववधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ भांति वसन पंचवरण बन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईजे ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारे ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारेमें ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अति भंति ॥ २ ॥ राग अधभास गुंडमल्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणे जड्यो, काने कुंडल हांरे अति जुगते जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ भाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहे मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद वाहु तिलक भालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसें अलंकरयो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धरयो, अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक द्रव्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोभतो, फुंदे लहकै फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पाडलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिभुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हांरे अ० ॥ गुछ चंद्रोदयं झूवकातअयं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद जिलै, फू० ॥ असत उसत दाम वघरी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंरूप थंन्न गुछ चंद्रोदय, कोरणी चारु विनाण सजै ॥ इग्या रमी पूजा वर्णी हे रामगिरी, विवुध विमान जैसें तिपुरि न्नजे ॥ ॥१॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजे ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फून्न ॥ हर ण ताप दुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग न्नीम मल्हार करूखेकी जाति ॥ मेघ वरसै न्नरी पुप्फ वादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वएयो विकच अनुक्रम चिएयो, अधोवृंते नही पीरू पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै न्नमर न्नमरी न्निलै, सरस रसरंग तिण दुख निवारी ॥ जिणप आगे करै सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग न्नीममल्हार ॥ पुप्फ वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ योजन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम पन्नणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण थुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीरू नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विवुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ बारमी पूज न्नविक तिम करै, कुसम विकस हस न्नचरै ॥ तसु न्नीमबंधन अधरा हुवे, जे कराहिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुप्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै सुमतै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंरू गुणै न्निल्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लषण समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगे सुथानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन भेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें, रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्प्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पुर्णकुंभ, मत्स्ययुग श्रीवत्स तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रभु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुंदरुक सेल्हारस सार, गंध वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस भेलियै, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंड कनक मंडित धूपधांणो कर धरै, भववृत्ति धूप करंति भोगं रोग साग अशुभ हरै ॥ २ ॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ ऊर्ध्वगत सूचंत भविकुं, म धैमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ भावो अधकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्दनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारीचारी गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अ नाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र बंध घूयो प्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मान शिव श्रीगीतं, पर्नरमी पूज हरे दुरितं रे ॥ जि० ॥ ३॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ दूहा ॥ करजोडी नाटिक करै, सजि सुंदर सिणगार ॥ भवनाटिक ते नहि भमै, सोलमी पूजा सार॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ भावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा सम रूव वेस वयसो मचेत्त कुन्नत्थणा ॥ लावस्सा सगुणा पिकस्स रवई रागाईआ दावणा, कुम्मारी कुमरावी जैन पुरउ नचंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठ्ठसयं कुमारिकुमरोउ सूरियाभे णंदेवेणं संदिठ्ठा रंगमंडवेपविठ्ठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥२॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, ठागडदि तत्ताथेई ॥अ० ॥ ठागडदि२क थौंगिश्न, मुखेतत्ताथेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे णु वीणा मुरज बाजे, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्नन्नेईय ॥ अईयो० ॥ प्रणण प्रणण प्रणणण घुंघरु घमके, रणणसससेईय ॥ ॥ अइयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी झंकार क रणी ॥ सोभंती कुमरीय॥ अइयो० हस्तकं हावादि भावे, ददन्ती भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाभे रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप भगतें भविक लीणा, आणंद तत्तत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥४॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततघन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥ भगत भली भगवंतनी, सतरमियें सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर महल कंसालो, महुयर महल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरे, पुभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ ॥

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती कुमति लाजंती, सेवे जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव भविक मधुमाधव फेरी, भवनी फेरी नप्पभणंती ॥ कहै साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ भवि तूं भण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय रंगे इम गाजै ॥ भवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आवाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, भणी में भगति हित काजै ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ भ० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसाये सुविध हय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ भ० ॥ ४ ॥ इति सतर भेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेबीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीकेनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती भोरहिं कीजै, जन्म२ को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्वान्न खजली मिश्री पतासा ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज२ शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं दिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यांनथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ करया कर्म दुमर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्य ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करया घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोप ग्रही च्यार है जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकांमे ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ तो० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आतम भावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने थोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे भव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकालै नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजै, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्याये रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाये रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयकारगाणं

रणाणं, जम्मंजरा ङुक्ख निवारणाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि ञय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा॥ १५ ॥ त्रिञागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा॥सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्ञ्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रञुतामई, आतम संपत ञूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे ञूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वञाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परञणी, मुनिराज मानसहंस समवम, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिञाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ ञ० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ञ० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥२०॥ञ०॥सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी ञवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ ञ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ ञ० ॥२१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वञाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ॥ ह्रीं० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरे हरे, सूझे भाव अलेप ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽत्थुसूरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ स्कंरुब्बत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्राग में प्रौढ साम्राज्यभाजा॥षट्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना,पंचाचारनें पा लवे सावधाना॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकाले,सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निकामो जी भव्वालो ॥ निकाम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण बोरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत उपाधी, दु विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या चो रे ॥ भ०॥ २६ ॥ सि०॥ वर छत्तीसगुणैंकरि सोभै, युगप्रधान जगमोहे ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे भ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचो यण वलि जनने ॥ पटधारी गछथुंभ आचारज, ते मान्या मुनिम नने रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटु ते, आचारज चिरंजीवो रे ॥भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामं त्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवज्झायापद अरचियै, अनुन्नवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुत्तथ्य वित्थारणतप्पराणं, नमोरवायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणाववज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोछेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगछसंधारणेस्थंजपूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रभूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा॥ स्याद्वादवादें तत्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधनधीरसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांनसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारगतास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनविभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भवत्रिणहे जे लहै शिवसंपद, नमियें ने सुपसाय रे॥ भ० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणें ॥ ते उवज्झाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ भ० ॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणे, अहिततापं सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिज्झायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधांन थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदतां, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्यं ॥ सांहूणं सै साहियसंजमाणं, नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णनां तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तेनहीकाम भोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलीबाह्यअभ्यंतरेग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयोगचारित्रपाली शुभष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निःकामी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा; काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तेंज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्रणमो हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांच२इंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधे, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ एहवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढते वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमाने रे ॥ भ० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषे नवि सोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडे स्युं लोचे रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततेरुइलरकणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिछत्तनासाइसमु ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि येदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि चित्रंभवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमेक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेस दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू पी जी॥जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रग टै अनुभव करुणा उछलै॥बहुमांन परिणत वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नांम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशाम क्षयं उ पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमे दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश म लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलियो रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ संमसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शे न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवे रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमांह ॥ आ

राधीजै शुभ मनें, दिन २ अधिक उबांई ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो २ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा रगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स ॥ होईजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेंवस्तुषट्द्रव्यन्नावा, नहोवै विकल्पानिजेछास्वन्नावा ॥ ५९ ॥ होईपंचमत्यादिसुग्यानन्नेदे, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदई ॥ वलीज्ञेयहेयांउपादेयरूपे, लहेचित्तमांजे मध्यानेंप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्र काशक न्नावे जी ॥ परयाय धरम अनंतता, न्नेदान्नेद स्वन्नावें जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधन्नाव विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लछना ॥ स्याद्वादस गी तत्त्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ न्नक्ष अन्नक्ष न जे विण ल हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ न्न० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांते न्नाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा ख्युं रे ॥ न्न० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित २ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ न्न० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश क तेह ॥ दीपकपर त्रिन्नुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ न्न० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥ न्न० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजा महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिय खंडिअसक्कियस्स, नमो२संजमवीरिअस्स ॥ सब्भावणासंगविवज्जिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरासंसताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्रअप्राप्तमूल्यं ॥ ६८ ॥ होइंजासमहिमाथ्यकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथाये, थईसिद्धनेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमण जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, गृही यतिने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजें तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ति पिण वरिउ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिउ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउ ज्ञान आनंद रे ॥ भ० ॥७३॥ सि०॥ बारमास पर्याये तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ ॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म द्रुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽत्थुतिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधणस्स, डुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥७७॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्जासमिद्धं, पयडियसरवग्गंह्रींतिरेहसमग्गं॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढावयारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर डु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत डुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होई जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संकेते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद पावे, नवभव सिव जावे देव नर भवज पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभावै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ्र योग संग आहार टाली भाव अक्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आत्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥ निरधार सेती गुणे गुणनो करइजे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली ॥ उवज्झाय वर श्री जसागर ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोजता ॥ ८४ ॥ ढाल ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि काचित पिण क्षय जावै, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र गटै, नमियै ते तप जावें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोथे खंडै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ ह्वारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, जाव ते जांणो साचो रे ॥ आतमजावे थिर हूउ, परजावै मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दा खी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे ॥ वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जांणो रे ॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यांन प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथै खंडै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालणं विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसें तिलक करे, हाथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चैत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्टे मुजब पट्टे पर नव साथिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढावै ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदोंकी चाल ओर उल्लाला पद वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं प्रहारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंदुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुभिर्वटकेयकैः, अवर मोदकपुंज सुखड्कै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्सुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्रीं० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किंव श्रीफल चिन्नटे ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंदुलें, चरुप्रदीपक धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिं० अर्घ यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, डुख दोहग सब दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, नयवारण तूंही सुखकारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरो सब डुर्मति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुकम धरें ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांजोवज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ए ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ उर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, नेंष, घोमी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ और जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. और जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख के संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीके हाथ लगावे नहिं. और जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भेंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछे दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछे दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकको न छुवे. २ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणों तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछे स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तों सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा हे. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा हे.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, भैंषके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडी, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीछें, संमूर्छिन जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असझायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंअारी पडे, तासीम असझाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती गया तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असझाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, ज्यांलगें होय, तां सीम असझाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूंती पडिवा लगें असझाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउड्डावणत्थं काउस्सग्ग करुं? इछं. अचित्त रज्ज उड्डावणथं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स उज्जोयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असझाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असझाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असझाय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असझाय.

१२ अजवालीये पक्षें समी सांझ, पडवो, बीज, त्रीज, इयारी असझाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असझाय.

१४ भूमिकंप प्रहर ८ आठ असझाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असझाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असझाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण गयाहूंती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछें पडिवा लगें प्रहर बार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्झाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उडे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ डंडको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र भणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमांहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणाउछे एहले ज्यां पर्यंत मृतककूं न उगावे, त्यां सीम असझाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो मांहे अहोरात्र असझाय.

२ए मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो मांहे अहोरात्र असझाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नांहें.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विसकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावकको कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर १०, गाढी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवमां प्रहर २४, घोलवमां प्रहर ४, तहयां वमा प्रहर ४, पूमी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा कण्या प्रहर १२, जवार कण्या प्रहर १२, बाजरीकी खीचमी प्रहर ८, जवारकी खीचमी प्रहर ८, चावलकी

खीचड़ी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्वान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन १५, वरसाले पक्वान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी जीजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४, वड़ी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणडोरा मंत्राय के बांधै ॥ (उँ नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै. पीछै एक थालीमें १०, एक थालीमें ए, फेर एक थालीमे फेर ए, एसें २८ नागरवेलका पांन रखै. जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकद्रव्य यथाशक्ति धरै उरभी पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नेवद्य तरे२ के गीले उर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीछै दसदिग्पाल के पट्ट ऊपर जलका छींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ ॐइंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहअस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐइंद्रायनमः इति इंद्रआह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ ॐअग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वालगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ ॐयमाय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन० अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० वलिंगृ० उदयम० स्वाहा ॐयमायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ ॐनैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोत्सवे आग० वलिं० उदय० स्वाहा ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दिग्पाल पूजा ॥ ॐवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐवरुणाय नमः ॥ पश्चिम० ॥५॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ॐवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहोत्सवे० आ० वलिं० उदयम० स्वाहा ॐवायवेनमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुवेर दिग्पाल पूजा ॥ ॐकुवेराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपूजामहोत्सवे आ० वलिंगृ० उदय० स्वाहा ॐकुवेरायनमः उत्तर दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ॐईशानाय सायु० सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० वलिं० उद० स्वाहा ॐईशानायनमः ॥ ईशानकूण ॥८॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥ ॐब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

अमुक पू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐब्रह्मणेनमः ॥ ऊर्द्धदिशि० ॥ ९ ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ ॐनागाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्ये अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ ऊपर कसूंमल वस्त्र बांवे मौलीसे, पीछे ॥ ॐदशदिग्पालायनमः ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकद्रव्य समेत नागरवेलका पांन आदि सर्व द्रव्य चढावे, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक दीपक आगे धरे ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ ॐनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षणभरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक चैत्ये अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिपूजांगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२ अत्रपीठेतिष्ट२ स्वाहा ॐसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि अष्टद्रव्यचढावे) ॥१॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐचंद्राय सायु० सवा० स प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि ग० उदय० अत्रपीठेति० स्वाहा ॐचंद्रायनमः ॥२॥ अथ मंगल पूजा ॥

ॐनमोभोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः ॐभोमायनमः॥३॥ अथ बुधपूजा ॥ ॐनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी० स्वाहा ॐबुधायनमः ॥४॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ॐनमोबृहस्पतये सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः ॐ बृहस्पतयेनमः॥५॥ अथ शुक्र पूजा ॥ ॐनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू द्वी० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

पीठे उदयम० ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥ ॐनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पुजा ॥ ॐन मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचै त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० ॐराहवेनमः॥८॥ अथ केतू पूजा ॥ ॐनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि नजं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२उदय० स्वाहा ए ॐ केतवेनमः॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल वस्त्र मोलीसे वांधे पीछे नागरवेलके पान आदि अष्टद्रव्य रोकड द्रव्य संमेत सांमने भेट धरे फेर एसा कहे॥ ॐनवग्रहायनमः॥ च्यारों तरफ नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः ॥ वाये तरफ मंडलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसदिग्पाल की थापना करे ॥ जिस महोछवमें इनोंकी पूजा कराणी उस महो छवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल सें पवित्रपणे बणायाहुवा सधवस्त्रीके या पुरषके हाथसें पांचरंग के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा मालपुवा पांचरंगकेलड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें सब द्रव्य एकठो करै उपर घृत खांड अत्तर गुलावजल पंचरंगेफूल यहभी बाकलोंमें मिलावे पीछे गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन वेर बाकुलो पर वासक्षेप डाले.) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ ॐह्रांह्रींसर्वोप द्रवंबिंबस्यरक्ष२स्वाहा ॐणमोअरिहंताणं ॐणमोसिद्धाणं ॐणमोआ यरिआणं ॐणमोउवज्झायाणं ॐणमोलोएसव्वसाहूणं ॐणमोआगास गामीणं ॐणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड गंधर्व जक्ख रक्खस पिशाअ भूअ डाइणप्पभइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसवेंविलेवण धूवपुप्फफलवड्वसंणाहिं वलिपडि
छंता तुठिकराभवंतु पुठिकरा संतिकराभवंतु सवंजणंकुवंतु सवजि
णाणं संहणप्पभावउ पसन्नभावतणे सवत्थरखंतुकुवंतु सवदुरियाणी
नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु ठपुठिसिवसत्थयणकारिणोभवंतु
स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें
भालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
वास्ते वस्त्रसें ढककर रखछोड़े. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खोल
लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खड़ा रहे, २ दूसरा केंसरकी
कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अेता, ५ पांचमा धूप
धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा
जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग
लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खड़ा रहें.
जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल बा
कुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो
स्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ
बलबाकुल चढावे) (अग्निकूणके सांमनें) ॥ सदावह्निदिशो
नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ २ ॥
(एसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावे) (दक्षिणदिशकी तरफ) ॥
दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥
(बलबाकुल चढावे वाजित्र वजावे) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥
यमापरांतरालोको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥
(अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोवाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकवि भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्‌जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकन गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोत्सवे सर्वोपद्रवाद्रक्ष२ गन्ध२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअ ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्रक्ष२ गन्ध२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐन मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्रक्ष२ गन्ध२ स्वा हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्ष२ गन्ध२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्ष२ गन्ध२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्ष० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्बलि० गन्ध२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलि० गन्ध२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलि० गन्ध० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलि२ गन्ध२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे वाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्नात्रकाले कलुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आज्ञाहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षमतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दशदिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव य२ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः।(सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्हते

नमः) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमफली मंत्रायके हाथके बांधै ओर जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मौलीमेंढल बांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोमके बेठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछे तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहियें. पीछे मंदिरजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावें अष्टद्रव्य चढावे. पीछे चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावें, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपाला यनमः) एसा बोलता हुवा चढावे. पीछे मंमलजोके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे वांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै.) पीछे सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावै.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हें ॥ पहली इरियावही पमिकमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे बेठके दहिणागोमा धरतीपर रखे के मावागोमा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंह्रिन मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी ४थी गाथा कहे. पीछे बेठके नमोत्थुणं कहके खमा हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदण व० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै रं जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात् द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्री भुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ९ ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितडिंबामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचच्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवी नंदतानिवताच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअछुप्तादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड वाणपाणिस्तडिद्युतिः तुरंगगमनाछुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्व श्री पार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुबेरानगरारूढा सुतांकावतुवोभयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १ ५ ॥ (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःसदा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १ ६ ॥ (ततः श्रीशक्रादिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १ ७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायिका श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १ ८ ॥ लोगस्स कहके बेठे चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरे १ ८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मोली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दीपक करै. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै (पीछे) सोने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करै, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणै.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तरफ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीछे) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेंढल मरोडफली चारुं तरफ बांधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः॥ इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छींटा देवे (ऊपर) चावलोंको साथियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चावलोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरै. (पीछे) केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूरसीभूतधात्रीविश्वा

धारैनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलजूमिं तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्ह त्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछे) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे (पीछे) स्नात्रिया मंदरके जीतरसें प्रतिमांजी लायके त्रिं गमेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐन मोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्टिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ष्ठ२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्ठा करके पीछे सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ए कर्केतनरत्न, २४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथ- में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज क- र्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्जूतोल्लसद्बोधा नार्हतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजेसमस्ता तिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्ह द्भयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछे रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालव स्त्र, ए माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्कादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् नि दग्धेन्नकिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेगतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिग म्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिनउदलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थे मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमःस्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालडु, ४ इंद्रनील, १५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खडा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे (यथा) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरूदकालडु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वादशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खडा रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, लक्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूणमें दर्शनपदकी

आपनापूजा करै इति ॥ पीछै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोकालड्डु, आदि सर्व द्रव्य ले खड़ा रहै ॥ काव्य पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खड़ा रहे. काव्य पढै (यथा) सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्नैरु तेकमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरुतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥) पीछै) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्व यं ॥ निधाययामिजक्तयात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ) निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयम यतनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्टकगुणभृदाचार साराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं, स्तत्सिद्धचैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनमः (इति मूलामंत्र) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो वीचमें च्यार दिशिमें च्यार विदि

सामे एतें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंडलके मध्य भाग में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावे (पीछे) दूसरे वलयमें चूडीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (ओर) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा हे उसमें अनाहतपद ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) एसा पद स्थापन करै (पीछे) एक रकेबीमें मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खडा रहे. अनाहत पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा) (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः) (इहां) १६ दाख चढावै २ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ (ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख चढावै ४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ५ च छ ज झ ञ (ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ड ढ ण (ॐ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ९ त थ द ध न (ॐ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ११ प फ ब भ म (ॐ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) १३ य र ल व (ॐ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावै सब ९६ (उपर) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अत्र तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करे इस आठ कोठाके बीच२में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एके

कं खानेमें २ होय २ होय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरो में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावे, ओर लब्धिपदका नाम बोलके खा रका ४८ चढावे (यथा) ॐ ह्रीं अर्हंणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसवोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोकुठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोदिठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउजुमईणं ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोदसपूवीणं॥१७॥ ॐह्रींअर्हंणमोचउद्दसपूवीणं ॥ १८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअठंगनिमित्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउवणइढिपत्ताणं॥ २० ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोचारणलद्धीणं॥ २२॥ ॐह्रींअर्हंणमोपण्हासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोखीरासवेणं॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हंणमोमहुआसवाणं॥ २७ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हंणमोजयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअरकीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हंण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरबंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं ॥४८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टचत्वारिंशल्लब्धिपदेभ्यो नमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नांम बोल२ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका चढावै ॥ (पीछै) मंडलजीके गलेमें ह्रींकारजी स्थापन किया है (जहांसे) साढातीन नवलाका मंडलजीके चोतरफ है के नीचे (क्रों) एसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दिशायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव (यथा) ॐ ह्रीं अर्हत्पादुकाभ्यो नमः ॥१॥ अनार चढावै ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपादुकाभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपादुकाभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनंतगुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अनंतानंतगुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अष्टगुरुपादुकाभ्यो नमः स्वाहाः ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दाडम चढावै (पीछै) सातमा वलयमें आठें दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐ ह्रीं जयायै नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं जंभायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायै नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं जयंत्यै नमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐन्हींअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावें (पीछे) आठमें वलयमें १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्क लपेटी १६ सुपारी चढावै (यथा) ॐन्हींरोहणयैनमः ॥ १॥ ॐन्हींप्रज्ञप्तैनमः॥२॥ ॐन्हींवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐन्हींवज्रांकुशायैनमः॥ ४ ॥ ॐन्हींचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐन्हींपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐन्हीकाळ्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐन्हींमाहाकाळ्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐन्हीगौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐन्हींगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐन्हींसर्वास्त्रमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐन्हींमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐन्हींवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐन्हींअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐन्हीमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐन्हींमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करै पीछे नवमें वलयके चार्य तरफ शासनदेवीयां ॥ २४ की थापना कर पूजा करै ॥ २४ पूंगीफल चढावै (यथा) ॐचक्रेश्वर्यैनमः॥१॥ ॐअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकाळ्यैनमः ॥४॥ ॐमहाकाळ्यैनमः ॥५॥ ॐश्यामायैनमः ॥६॥ ॐशांतायैनमः ॥७॥ ॐभृकुटियैनमः ॥८॥ ॐसुतारकायैनमः ॥९॥ ॐअशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायैनमः॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायथिनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधारणयैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे तरफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥ (यथा) ॐब्रह्मशांतयैनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वायनमः ॥ २३ ॥ ॐगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुबेरायनमः ॥ १ए ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ १० ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥१६॥ ॐकिन्नरायनमः ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषएमुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमाराय नमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ए ॥ ॐविजयायैनमः ॥ ७ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंवुरुयैनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछै चार दिशामें ४ द्वारपालकी थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे (यथा) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनमः ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनाय नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुष्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछै चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावै (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐकपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछै पूर्ण कलसके आकार ऊपरसें कियाहुया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पढे. तव सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा डालके स्थापन करै) (यथा) ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायननः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ७ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ए ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ए कलस स्थापन करै ॥ पीछै कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके वरावर पासमें वंगली का आकार किया है (जहां) ॐह्रींविमलस्वामिनेनमः १॥ एसा

कइकेचढावे ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंग
लीमें (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा वोलके चढावै २ ॥ पीछै तीसरा
कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पींडिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें)
ॐचक्रेश्वर्यैनमः (एसा वोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा को
इलाफल हाथमें ले के नीचे पींदेके वांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्र
सिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः) एसा वोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछै
दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करे. बणसकेतो अ
पणा२ वर्ण मुजव वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे अथवा सर्वेकों
एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनक
वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आ
दि सर्व द्रव्य चढावे १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्ण
का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः
॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूणे)
ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै (पश्चि
मदिश) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ (वा
यव्यकूण) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च
ढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव
र्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐईशाना
यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥
(अधोदिसि) ॐनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य
चढावे ॥ ९ ॥ (ऊर्द्धदिशि) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका
वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था
पन पूजन करे ॥ (पीछै यंत्रके पींदीके स्थानक नव कोठा किया
हुया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करे (यथा) ॐसूर्यायनमः
लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐ सोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोल वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ ए ॥ ईटरंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ए ॥ इस तरे नीचे नवग्रहकी स्थापनपूजा करै. पीछै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावें चैत्यवंदन कर थुइ कहकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करै ॥ इति मंम्रल पूजनविधि ॥ जाणना चाहियें (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करै तब तो छए महीने मंम्रल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उछव के साथ मंम्रलपूजा करा कें नव२ उपगरणोसें उद्यापन करै. जलजात्रादि अठाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारै (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते चढावै. ऋद्धिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (और) पंचायती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंम्रलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणभद्रस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमरिदत्तसर्वज्ञां० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १ए ॥ रत्नमेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्रप्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रुपभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिप्रभसर्वज्ञा० ॥ २ए ॥ अजितभद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांतिसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ निकितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ मल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ बलंभूतसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेंद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥१८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुंडगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री चंद्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेणनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रभनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा०॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥११ ॥ अतिश्रुतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वरसर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्राक्षसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीविरुषिकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

इंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरजूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रजसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलजद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्रातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीजमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २० ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ९ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नाजसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ० ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीसुढधसहस्त्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मजूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ (धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननांम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननांम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरते जिननांमः) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जं-बूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननांम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात कीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव तेजिनना०) आह्लादिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीबलिभद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-स्पद नामी ऊंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाग्र्थकासरदातणो, उर धरि समरण शक्ति ॥ सह्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु चि भक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि तेहनें, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु प्रतिदिशा, कथनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि श्वावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध भाग जसु उत्तमें, गिरि युग जलद समांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तर शत ईस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, भाख्यो श्रीजिनभाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनरा य ॥ ते हूं प्रति विजये भणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अ जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ भविकजन ध रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां णी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ भ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि चरया महियल बोधता जी, विजय मझार सनंद ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच२ भरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता रता जी, समरयां संपति थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ भ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल भाधरू जी, कनकवर ण बत्तीस ॥ भ० ॥ ६ ॥ रजत सुक्त पय जलकणा जी, सम सित विमल प्रकाश ॥ भविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचा स ॥ भ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुभातमां जी, धरिये भाव विशाल ॥ भ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी भक्ति ॥ भ० ॥ ए ॥ ए त पविधि भवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पसुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवल्लभ कथनधर नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-भ जैनचंद सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहिताय श्रीसिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहिताय श्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहिताय श्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहिताय श्रीसि द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावणकर्मकी नव प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)—सातावे दनीरहिताय श्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोभर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोभर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोभर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोभर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, भयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुगंछामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपूंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृत।

४)—देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरहि० ४७, नरका युरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)—देवगति ४९, नरक गति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकआंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगो पांगर० ६५, औदारिकऔदारिकबंधनर० ६६, औदारिकतेजस बंधनर० ६७, औदारिककार्मणबंधनर० ६८, वैक्रियरबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणबंधनर० ७०, आ हारकश्बंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारकका र्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणबंधनर० ७५, वैक्रि- येतजसर्कामणंबधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कार्मणकार्मणबंधनर० ७९, तेजसकार्म णबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्रऋषभनाराचसंघयणर० ८६, रुषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्त संघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सु रभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुक रसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुरर सर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, नारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, षरखराफरसर० ११४, सुकमालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया० ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुन्नविहायोगति १२२, अशुन्नविहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, उसासनांमकर्मर० १२५, आतपनांमकर्मर० १२६, उद्योतनांमकर्मर० १२७, अगुरुलघुनांमकर्मर० १२८, तीर्थंकरनांमकर्मर० १२९, निर्माणनांमकर्म १३०, उपघातनांमकर्मर० १३१, त्रसनांमकर्मर० १३२, बादरनांमकर्मर० १३३, पर्यातिनांमकर्मर० १३४, प्रत्येकनांमकर्म १३५, थिरनांमकर्म १३६, शुन्ननांमकर्म १३७, सौन्नाग्यनांमकर्म १३८, सुस्वरनांमकर्मर० १३९, आदेयनांमकर्म १४०, यशनांमकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनांमकर्म १४३, अपर्यातिनांमकर्मर० १४४, साधारणनांमकर्मर० १४५, अथिर नांमकर्मर० १४६, अशुन्ननांमकर्मर० १४७, दौर्न्नाग्यनामकर्मर० १४८, डुस्वरनांमकर्मर० १४९, अनादेयनांमकर्मर० १५०, अयश नांमकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृती २) उच्चैर्गोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर० १५४, लान्नांतरायकर्मर० १५५, न्नोगांतरायकर्मर० १५६, उपन्नोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंन्नव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद चिदघन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयमि विस्ता

र ॥ वरणुं नविजन हितनणी, प्रवचनने अनुसार॥ ३ ॥ (ढाल ॥ ॥ रामचंदके वाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नांमे न्निन्न कह्या री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण आवर्ण, वेदनी मोह वूरो री॥ आउखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो री ॥२॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय, तीस कोमाकोमि नणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस कोमाकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, द्विव मोहनीय थुवे री ॥ ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मांन नणयो री ॥ ए उत्कृष्ट थिति जोम, केवली काल गणयो री ॥५॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म, अंतरमुंहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री॥ ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनो कर्म वदे री ॥ बारे महूरत मांन, शास्त्रानुसार मुदे री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच५ न्नेद जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो न्नेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नव न्नेद, आयु च्यार विये री॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अठावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥ अष्ट करमना जांण, सर्वे विकल्प सही री ॥ १०॥ ढाल ॥ नण दल चुमले जोवन फिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण छे, दर्शनावरण प्रतीहार, नवियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु लिप्त असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ नविय० ॥ १ ॥ म दिराछाक समान छे, मोह सुन्नट महराण, नवि० ॥ खोमे बंदीखांन सारखो, आयुकर्म प्रमाण॥ न०क० ॥२॥ चीतारे सम नांम कहीजे, गोत्र कुंन्नार समांन, न०॥ श्रीघर नंमारी सम दाख्यो, अंतराय कुध्यांन ॥ नवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए नावना, वीर वदे व्याख्यान, न० ॥ कर्म संसार स्वरुप छे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ नवि० क० ॥ ४ ॥ मिछ सास्वादन मिश्र [illegible]रति, देसविरति प्रमत्त,

भ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ भ० क०॥ए॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, भ० ॥ सुहुम संपराय दशशम ठामें, विन मोहायु षट खंध ॥ भवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, भ० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ भ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, भ० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, योग युगत च्यार होय ॥ भ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; भ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद होय ॥ भवि० क० ॥ ए ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार, भ० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ भवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चउत्थभत्त तप सार, भवि० ॥ तप उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ भवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण भला, अष्टमंगल वृद्ध थाल, भवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ भ० ॥ क० ॥ १०॥ इम आराधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, भ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी भरतार ॥ भ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचनें स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवझाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा भणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो, नव निधि सिधि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अस्करे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध, सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चक्खांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी बेअ, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, बीजे भव राजसिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्र, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धस्यो ए ॥ नवकारने परभाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण कस्यो ए ॥ ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ गामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम भं मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्ष करे नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर छेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

भद्रा नांमे नारि सुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पछतावे, चोर समीपे छानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रभावे वंछित लीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥ ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंडक पापनी हेठ ॥ एकदा चोरी करतां झाल्यो, राजा हुकमें सूली घाल्यो ॥ ४ ॥ हुंडक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमें जे कीधुं, सुभद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥ भरतनृप भावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावति पूनिम करी ए, वीजली वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपाड़ी चलावियो ए, अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वालरूया एक चारतो ए, नदिय प्रवाह्यो वाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप अनेक, न० ॥ छुटकरवारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ तीर्थंकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२ अधिकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयांकुसल वाचक वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ।२०००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवावास ७ ॥ ४ । णमोउवज्झायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सव्वसाहूणं ॥ उपवास ए ॥ ६ । एसोपंचनमोक्कारो ॥ उपवास ० ॥ ७ । सव्वपावप्पणासणो ॥ उपवास ० ॥ ० । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥ उपवास ० ॥ ए । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ए ॥ एसें नवकार मंत्रका ६० उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वड़ानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उछव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रजावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुजज्ञाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण जणिसु जिनवरतणा ॥ कत्तिण कत्तीतणौं पक्खि पंचमि दिणें, नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणें ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरजवणथी बारसै, पउमपह जम्म वलि दिक्ख तसु तेरसै ॥ वीर सिवमां वसें पक्खि हिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार सि मिले ॥ २ ॥ ढाल ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमियो, सोइ ठठें रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे संयम आदर्यो, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यो ॥ सिर वर्यो मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसें वलि मल्लिजिणने जम्म दिक्ख सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्खा नाण ठठै अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संजावियै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण जावियै ॥ ते परि सवि रे गीतारथ सद्गुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सद्दहे ॥ सद्दहे

सहूये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चउद्दसि जनम संभवनों सुणौ ॥ पूनिमें संभव दिक्ख पांमी दया धरि जगजीवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिक्खा पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेरसि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो केवली, पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनिमें धम्मैं वसें ॥ माहाइ छठे पडम चवियो बारसैं शीतल थयौ, वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपूजनों, कल्याणकरे जनम गंण अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मानों बिहू त्रीजे विमल धरम सुजामिया, श्रीविमल दिक्खा चउथि अठमि अजित व्रतपति पांमिया ॥ नवमियें दिक्खा अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥६॥ भास ॥ फागुण वदि छठे सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वखि तसु मुगति चंद्रप्रभु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्रय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिज्जंस तणो चवदसं वसुपुज्ज, जम्म हुउ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्रय वय उब्भव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पक्खि चउथि नाण चवणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ए ॥ पंचमि अजित अनंत अने संभवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नांण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना ह केवलसिरि पायो ॥१०॥ भास ॥ हिव वैसाख वदें पडिवा दिन, कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशी तल अवतरियो, दशमें नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिक्खा नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, ध रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउउ ॥ १२ ॥ सुम तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सामे पायो, गायो धरि आ णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पक्खि छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतर्यो ए ॥ श्रीसुपास जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वर्यो ए ॥ १४ ॥ भास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि विमल ॥ मुक्ख नवमि नमि वय गहण, सेय छठे चवण ॥ वीरनो अठमि नेमि मुक्ख चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधु कर परवर्यो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करम हणि सुग ति रमणी वर्यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज सु गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अह निम्मल बीजे, सुमति चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म भणीजे ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर ने- मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्वय पूनिमरयणि, चविउ गु णमणि वास ॥ १७ ॥ भाद्रव वदि सत्तमें संति ससि चवण भव क्खय, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविध्र सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गञ्च ॥ हरण अम्मावसी ए, नांणी नेमीसर ॥ १७ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासिं ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कह्याणक रासि ॥ १ए ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कह्यांण नीते कोमि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कह्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कह्याणक हुवे इण दिन सुर करे उछव घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कह्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कह्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ अथम आद्यंताक्षर संलक्ष० यह ऋषिमंमल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणैं. ऋषिमंमलमें जो मूल मंत्र है सो शुज्ञ दिन शुज्ञ घमी हाथमें फल फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करे. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा करे. ऊजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीछै शक्ति होय तो विधि संयुक्त ऋषिमंमल स्थापन करायके पूजा करे. विशेष जक्ति करे तो १४ प्रकार पूजा करावे, गुरुजक्ती करे, साहमीवछल करे. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ ऋषिमंमल सुणणेवाले पूजणेवाले जव्यजीवके घरमें कन्नी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषन्न चरण अंगूठडो, दायक न्नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खडां२ केवल लह्यो, पूजौ जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडे प्रन्नु पूजना, पूजो न्नवि बहुमांन ॥ ३ ॥ मांन गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, न्नुजाबले न्नवजल तरया, पूजो खंध म हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना न्निकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंडनें, हृदयक मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतुल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तीर्थंकर पद पून्यथी, त्रिन्नुवन जन सेवंत, त्रिन्नुवन तिलक समा प्रन्नु, न्नाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक न्नगवंत ॥ व सिया तिण कारण विन्नू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध न्नावथी, कहे शुन्न वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवडा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंन्ने बांध्यो जल रहे, जल विन कुंन्न न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ न्नावें जिनवर पूजिये, न्नावे दीजे दांन ॥ न्नावें न्नावना न्नाविये, न्नावें केवलज्ञान ॥ ४॥ पांच कोडीनें फूलडे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व रत्या जेजेकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत जानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुज्न केवले, कय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, जयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिंनाम-तित्थं० नमोर्ह० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्म कायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एणां योगथी समयें एक, हीना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण सभे देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ ताजे जव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण जूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत भागी ॥ पुव्व पउंयपसंग सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण निरागी ॥ चेतनभूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्टो करे वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै भवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता, म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नंगरभासें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इकु गुण नव परमाण योजन लहैं कही, म्हा० यो० ॥ वर्त्तुल विशदाभास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मक्षी पकथी हीन भणी सिद्धांतमें, म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपभारा नाम सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शेनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरिहो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म नगहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिद्रासी जी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव पद ध्यावो केवलज्ञानी भासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ भवकूपें पापें पमत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खम्गथी जेणे, हणयो क्रोध सुभट सम देणे हो, गण पति गुण पेखी ॥टेर॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोभन मद्दव वयरे हो॥ ग० ॥१॥ दंभरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥ मुर्छावेलथी भरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो॥ ग०॥ मोह माहा मल्ल ताड्यों, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो॥ग०॥ अंतरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जिण पिषेद्या हो॥ग०॥४॥ रस कृति गुणथी लीणो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालै भजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संजम पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । सगता घन जंजन । जिन वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणबण जं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए। आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने३ दूरी हुयने, चेतन जावै सगने, दूरी हुयने ॥ तुं मुझ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुझनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगे निज पंचेंडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी खयउवसमसें, जावेंडी मंझाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इव्यै ते परजासे कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क में उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में जयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥ उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजतआय॥ आवीनांमन पीझानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सगताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारे चवदे पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

भये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ ३ ॥ चारुति घन गुणगण भरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ माखन२ मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकंषाया जगजन कहे, धारे चनगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करे, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहे, सा० उठे पूरब कोम हो मु० ॥ शत सोगम आगम करे, सा० लघु काले गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानद्धीनिद्रा उदे, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरे, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पाले दोष बयालीस टाले जी, षट् काया गोकुल रखवाले नव विध ब्रह्मव्रत पाले जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जो, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावे दमपद गुण उपजावे जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तव करि लहे, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लक्षन अभिरांम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध जएयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही गांह लहेरी ॥ उपशम क्षायक जेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुण अंस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपन्नत्ततत्त सूधा सरधै समकित गुण उजवाले जी, जेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावे जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य जाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि उहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल जांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नांण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, जविजन अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जक्षाजक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितकारी, जाणे जेम विचारी जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुत मति दोय छै इंद्री सारू,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ इंद्री मण केवल है वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अवविजस्स वलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुभ अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंद्री जनित कहियै लहियै गुण गंभीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो भविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ भाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, है सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु कति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निरसंग ॥ सुग्यानी साभलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करै, रूपी पुद्गल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्यें कारण भाव ॥ सु० ॥ कत्वा जोगसुधामता, लब्धा संख स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते होते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ माता घस्र प्रकारता, सस प्रभृतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तहो घन रूपी भजो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल भवतु अभिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे भावना सूधी भावै सागर पार उतारै जी ॥ खट खंड राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारै जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव सिव जाण ॥ विहि अं तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदें समता युत खिर्णो, हग्घन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण भव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स मता सहितें जिनतें भारी, भली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप भानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति दुकर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै, तपपदही चैतन वहियै रे ॥ म्हा० ॥ पाठक श्रीहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं भासे रे॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते जाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमदृषभ सर्वज्ञ, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाद्य, नाभिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषभ स्तुति ॥ अर्हताजितनाम्नेन, गज लांछन शालिना ॥ जितशत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वज्ञ मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वंशात्, संजवः संजवाजिधः ॥ सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिशतुमांजिनः ॥ ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्वं, वीतरागं जग-त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रोस, तन यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जृद्धेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं सुमतिनामेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तॄणां, स्वर्ग सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र सत्श्लोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपेजुनः, पद्म लक्षण धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णे, डुस्तरे पततां नृणां ॥ त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ट नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं नौमि सदा विभुं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिश्च विज्ञाम, तमोव्यूह विं नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ (अत्राद्यश्चत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोदवस्वाभ्रु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वीछितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरामा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांक्षांकधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राकृकृतंवृंजनव्यूहं ॥ छष्टंशंभोयदेविभो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यभः॥श्रेयोवृद्धिकरोजस्तं, खड्गलांछिनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ छित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रेयसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिछेदितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंहि, वासुपूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदंध्रस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशाःसिंहसेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ ईशाह

योपियस्यांतं, गुणानांलेभिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापुत्रवज्रांक, भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रभसर्वज्ञ, धर्मनाथाभिधेश्वरः ॥ २९ ॥ तवाग्रेपिपुरश्चारी, भूतलेयास्यशोकतां ॥ अनुचरफलाः संति, सतां संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधीसं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायाभिजिनेश्वरं ॥ ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां वृष्टिं, विशुद्धाविवुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री सुतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यभ ॥ सूरभूपतिसंजात, छागल क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, भवांतरकृतंयनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तांकसंयुतं ॥ अंभोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसु वर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यैप्रभुतयाजिनं ॥ चरी कर्म्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥ कुंभप्रभावतीपुत्रो, नीलवर्णोघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त, नासनाद्दिदितःसदा ॥ ३७ ॥ छत्रत्रययुतोभाति, देवयोविष्टपत्त्रये ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरसेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्म्मल क्षणभृद्धर्म्म, दायकस्यामलश्रये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक र्म्मारिमंमल ॥ देहित्वंमेव्ययीभावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिर ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव र्यो, समुद्रविजयोभवे ॥ हरिवंसदशीशंभो, शंखांकिकमलप्रभे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीखेदे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र त्यक्तेपिजिनेश्वरे ॥ ४४॥ इति नेमनाथ स्तुतिः॥२२॥ अश्वसेना रूनूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याभिमान ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास नचिन्हाय, नीलवर्णायसंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्के, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजार्हत, क ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोदेभदननेमृगात् ॥ त्वभक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः ॥२४॥ इति श्रीक्षमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः॥

अथ नवपदजीके उलीके देववंदनमें कहणेका चैत्यवंदन प हली लिखा हे ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ०॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय॥ अहो सु०॥ आचारज तीजै पदै, वंदू अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं दरभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उलखै, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुन्न न्नावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परन्नाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक दस धर्मनो, नेद बे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे वलि तपपद नमो, बाह्याज्यंतर न्नेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुन्न न्नावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप श्रीपालतणी परै, मन वंबित पावे रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि०॥ ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ०॥ व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ०॥ अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ न्नविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यो नवपद ध्यान ॥ न्न० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ न्न० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोन्नता जी, साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥ न्न० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण है रे, तप उत्तम विधि दोय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ न्न० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुन्नव कारणे जी, नितप्रति नमत कव्याण ॥ न्न० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, भविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जन्त्री अरु तंत्र घणे रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य भं मार भरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इय जिन भए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज भज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर द्वार मत भमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव, हिव कारज सि द्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुज नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न मिथै सिद्ध सूरी उवझाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

न्नुग विधि चारित्रें वुध विध तप मन न्नाय, ये नवपद ध्यावता नि रुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु नपदेशें सिद्धचक्र नद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे न्नाख्यो एह विचा र, न्नविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणन्नंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ नुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ रिद्धि सिद्धि नदय करि चारित्रनंदी मम न्नाय, जिनचंद सूरीसर खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद नली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें नली सरू करे, कन्नी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वधी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन् आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांरुणादिकसें चित्रित करे, पीछे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि काल पूजा करे. प्रन्नातसमें राईपमिक्कमणा करके पीछे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करे. जहां सिद्धचक्रकी थापना है नहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीछे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करे, वासक्षेप पूजा करे, पीछे केसरचंदनसें पूजा करे. गुरु पास आयके अब्नुठ्ठिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प च्चक्खाण करे. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग है इस वास्ते चावलोंसें नर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीछे अरिहंतके बारे गु णोंको विचार कर नमस्कार करे, सो लिखते हैं. सब गुणोंमे इच्छा मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करे ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
६ ज्ञामंमल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
७ डुंडुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चक्खाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीछै पडिक्कमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही पडिकमके चैत्यवंदन करै, फेर र.ड संथारा गाथा सुणें ॥ निद्रा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रभात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग है इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसें आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करे. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके आठ लोगस्सका काउसग्ग करे, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करे. आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करे. आचार्यके ३६ गुण हे. छत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्तीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
ए सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१ए. द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ आकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य नावना नावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण नावना नावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ० ॥
२ए अन्यत्व नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव नावना नावकाय श्रीआ० ॥

३२ संबर भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३५ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३६ धर्म्मदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह छत्तीस नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके छत्तीस ३६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ श्रीसुयगडांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
८ श्रीअंतगडदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपुर्व पठनगुण यु० ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
२५ लोकबिंदुसार पठनगुण यु०॥इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणाः॥

इस तरे २५ नमस्कार करै. खमा हो के अन्नत्थू० कहके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. साधुपद काले वर्ण है इस वास्ते उम्मद के बाकलोसें आंबिल करै. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ एकेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ चोइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीछै पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाणेसें १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते है ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करें. सम्यक्तके सम्सठ गुण चिंतवकर नमस्कार करे ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्तरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधूवर्ग विनयरूप सद० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषण रहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद्द० ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्द० ॥
२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२ए नैमत्तिकप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्याजृत्प्रज्ञावक सद्द० ॥
३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद्द० ॥
३३ कविप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३४ जिनसासने कौसलता ज्रूषण सद्द० ॥
३५ प्रज्ञावनाज्रूषणरूप सद्द० ॥
३६ तीर्थसेवाज्रूषणरूप सद्द० ॥
३७ स्थैर्यताज्रूषणरूप सद्द० ॥
३८ जिनसासने ज्रक्तिज्रूषणरूप सद्द० ॥
३ए ज्रपशम गुणरूप सद्द० ॥
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ आस्तिका गुणरूप सद्द० ॥
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद्द० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निधमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०॥ इति स०॥
॥ इस वजे सड़सठ नमस्कार कर खमासमण देके अन्नत्थू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारै. पीछै पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेकरीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनेनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पंच ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खमा होके अन्नत्थू० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसोसें तंदुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

११ संयमधर्म्मरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ बंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ वेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रअन्नादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंडगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुड्यंतरसहित स्त्रीहावभाव सुणण वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ ऊणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायश्चित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरूप चा० ॥
६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥
६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥
६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥
६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥
६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥
६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥
६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥
६९ माया निग्रहकरण चा० ॥
७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसिचचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खमा दो के अन्नथूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पचास भेद तपपदके चिंतवं के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥
२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरी तपभेद त० ॥
५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥
६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥
७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥
८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

९ कायकिलेस तपच्नेद तप० ॥
१० रसत्याग तपच्नेद तप० ॥
११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तप० ॥
१४ पडिक्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥
१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे० ॥
१६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥
१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥
१८ तप प्रायश्चित्त त० ॥
१९ छेद प्रायश्चित्त त० ॥
२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥
२२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥
२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
२५ चारित्र विनयरूप त० ॥
२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
२७ वचन विनयरूप त० ॥
२८ काय विनयरूप त० ॥
२९ उपचारक विनयरुप तप० ॥
३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
३२ साधू वेयावच्च त० ॥
३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृछना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद भेदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नबूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहै. पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घमी देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करकै दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मोली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकद्रव्य लेके नवकार गुणता भया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीछै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करे. सिद्धचक्रजी के चो तरफ तीन गढ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढमें अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करे. पद२ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजब धीठुरेसे जरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावे, दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावे. तीसरे वलयमें ४० टूहारा चढावे, नव निधानोंकी जगे नव वेरू फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पकान्न रंगरंगके चढावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. उर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ए ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करे. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करे, नवपदजीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावे, वाजित्र बजावै, महा महोत्सव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्रमुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणको विधी आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानभक्तिके कारण ए पूठा ए वीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव झिलमिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रुआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणावावे, शक्ति नहीं होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभक्षेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोछव आते हें जिसमें चेत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता ओर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते भये अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें भक्ति करे, पीछे नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं सफल मानते भये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी (१४) पीछे (४९) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोछव करे. लेकिन् यह अठाइ सास्वनी नहीं कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीभी जावे, पहली पीछेभी करलेवे ॥ यह नवपदजीकी ओली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके भव्यजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली भगवान भद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते भव्यजीवोंकों यह तप प्रमाण हे, ओर जो अभवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें भमेंगे. सूत्रोंमें भगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें ओर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेभी यथार्थ अर्थकूं तोडके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अभिन्नदसपुव्विणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचा, प्रत्येकबुद्धोंका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा भयेकूं भगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

इस नाम भगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते भद्रबाहु उमास्वातिवाचकादिकोंके बनाये निर्युक्ति भेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहियें, एक क्रोड पुस्तक श्रुतकेवलीयोंके बनाये अभी भंडारोमे मोजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद ओली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक भव्यजीव) अष्टापदजीकी ओली करते हैं (जिसमें) पडिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी ओली तुल्य करै. (इतना विशेष है) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल (वा) एकासणेका पच्चरकाण करै, पीछैं पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंडल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व
१ । २ ।
उत्तर
१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।
त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
ऊर्ध्वः
दक्षिण
३।४।५।६।
७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।
पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमअ अट्ठ उत्तरा दस ॥ दस पुव्वाए दो अ, वंदमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वाइं उसभमजियं ॥ दक्खिणओ संभवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरओ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंडलमें बणाणा. इहां कांकणडोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंडलवत् जाणना. नवग्रह दशदग्पाल थापना करे. पीछे एक२ काव्य पढ२ के एकेक कोठेमें एक२

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशत्वं, नंद्यावत सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतीनेता, नंद्यावतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंभक्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्बोधितंज्ञान, कंद धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंभवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभवस्वामी० ॥ ३ ॥ येभिनंदनतेतीर्थे, राजपादसभाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसभाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअभि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीद्वयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाढ्ः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूषेव, भूरिशोभात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वे तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्प्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प्पकोप क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेनेश, येरभाजिसमुन्नतः ॥ येरभाजिसमुन्नतः ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेस्त्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलस्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूभाजां, परमोक्षगतिर्भवा न् ॥ अनंतानसत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥११॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर त्वंविरहंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि
दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि
मल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र
श्रीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं
त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि
नध्नर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥
॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,
सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥
कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाहतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि
धुतारोवृषाहतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७ ॥
येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्जव्या, व
नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥ नां
ह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेन्निद्यतेमल्ले, प्रतिपन्न
सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥
श्रीसुव्रतजिनाधीश, मक्षमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मक्ष
मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥
देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्ञक्त्या,
सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥
॥ २१ ॥ तृष्णातापात्त्वयावर्षे, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने
मेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
ऐं श्रीनेमि० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकस, महाहारतरंगिताः ॥
नाव्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री
पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ वि
भ्रन्नमेघुनिस्सीमां, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीछे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावे, पीछें बलबाकुल देके दिग्पालों को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चैत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक भया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करै. एसैंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये. इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पूंजसें सेत्रुंजयपर्वतकों स्थापन करै (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै. अक्षत मोतियोसें पर्वतको वधावे, केसरचंदनसें पर्वतको पूजै. सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहइ॥चउछठ्ठअठम, दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखकें शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावे, पीछै श्रीसंघ खडा होके (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० और फल

फूल यथासंभव चढावे, धूप खेवे, कपूरकी आरती करे; पीछे सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० ख मासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंडरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करै. पीछे (श्रीसेत्रुंजय पूंडरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नथूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उछव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र बजावे ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (वीस । तीस । चालीस । पचास । यह चारों पूजाके भेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करै, चोथी पूजामें १० की जगे ४० की विधि करै. पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपूंडरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करै. उत्कृष्टसें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढावे. जघन्यसे पाचूं पूजा किये पीछे १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ठ १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करै. गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछे सिद्धगिरीकी जात्रा करै, स्थानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, साहमीवछल करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीऋषभदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपूंडरीकजी पांच कोडी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तभये. (इसवास्ते) भरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्री पूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पूत्र पूत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परभवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मों होयेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसाउलै, पुंडरगिर रे गाईस हूं सुभ भाउलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण छै अनंता कहै जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरें चक्रवर्ति भरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंडरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै भलो ॥ (उल्लालो) गुण भलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंडरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोडि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंडरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै, बहु भाव भक्तै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ भावना भावे तेण दिवसै पंच कोडि गुणो फलैं, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्ध सुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ छठै रे अठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसे ॥ (उल्लालो) मन वसे पूजकपूरधूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकैनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअछै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंमी सुणो नवि यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरो ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजे ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊना थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु नरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेंती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये नांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाणुं, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारे धूपपूज एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै, एक चित्त सूधै शुन्न पून्य कीजे ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करीजै, एकेक पूठै अथवा गिणिजे ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पछा प्रनु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवछल करो नविका नवसमुद्र ला लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहू लहै, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥ १३ ॥ इति श्री चै० स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली बमे स्तवनोंमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुन्न घमी शुन्नदिन गुरूके पास नंदीश्वरतप ग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस१ (५२) बावन उपवासं

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय, ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब उजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंम्ल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंम्लकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहाम्की रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैसाख सुदि ३ है सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषज्ञदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोम् सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, एसे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन ज्ञुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछै गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चखाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, और जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) वहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सव दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्च्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य है सो चोमासेके मंगण है, अर्थात् अलंकार समान है. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करै, कोइ भगवानके मंदिरमें नानाप्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पाले, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवे सो करे, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, ओर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदै, पीछै गुरूके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांझकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासै फागुण चोमासे कोंभी सेवन करैं ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. ओर देस, देसमें श्रावकण्यां इस महीनेंमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती है. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाक्ग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ दुष्कर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासणा १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ ओली) इस तरे पांच ओली करै. तपोदिन २५. ऊजमणें २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

ढली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लड्डू चढावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे ढली ३ करै. तपोदिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंतर उपवास ३, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दत्ति, १, नीवी १, आंबिल १, यह एक ढली. इसी तरे ढली आठ करै. तपोदिन ७७, ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यान, खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूडणतपः ॥ ७ ॥

जाद्रवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्सरीके, दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥इति अक्षयनिधि तपः ७॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक, रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगें) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें, ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै. अंबिकादेवीकूं वेस चढावै॥इति अंबिकातपः॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. उजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. उजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. उजमणे एकसो वीस लडू मंदिर चढावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः॥ १४॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टाळके छोटी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. उजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति छोटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवासके दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. उजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पक्वान फल कलशादिक पांच ५ चढावै, सत्तरभेदी पूजा करावै, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतप: ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावै. इस तरै वरस १ तप करै. उजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल बणाके सा ते राज सात पावम्ी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावम्ी, इस तरे आगे वरसे आठ पावम्ी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावे ॥ इति अष्टापदपावम्ीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा भरके आठ लड्डु देव आगे चढावे ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंम्ति घी धारपूर्वक तीए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंम्तिदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशणं, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चोथे तेले) लड्डूसें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधूकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावे तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगडेमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभे, ग्यानपूजा करै ॥ इति दालिद्दहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, बेइंद्रिये छठ १, तेंद्रिये अठम १, चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, छकायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

छठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पूत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्त्तारसुखतपः ॥३४॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्राविकायो कियाकरती है. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी है. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवछल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोमें अपणा धन

खरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रभावसें इस भवमें संसारसंबंधी दुःखदालिद्र दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परभवमें देवादिक ऋद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति वुट कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भाद्रव महिनेमें मिति भाद्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नांमसें पर्व प्रसिद्ध हे (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महिमा कहते हे) जेसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमें अभयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहि चूडामणी १०, ज्योतषीमें चंद्रमा ११, तेजवंतमांहि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तुरंगमें पंचवल्लभकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें भंभा २६, स्त्रीमांहे रंभा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दातारमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवछरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूषण पर्वकों भगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आणेसें प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें भगवंत की भावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महो छव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागर ण करावै; प्रभातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम हाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं गलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वा जित्र वाजते भये, दान देते भये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते भये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण खडा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसं घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपडह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी भडभूंजा इत्या दिक सबका आरंभ छोडावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रभावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार भक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे हो कर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने २ वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवछरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ सें खमावै १२, पारणेके दिन पोसह पडिकमणेवाले साधर्मीभाइ;

योंकी भक्ति करै १३, गुरुभक्ति करै १४, संवत्सरी दान देवै, साहमी, वच्छल करै १५. इस बिधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें, आराधन करनेसें आठ भवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है (और), केइयक भव्यजीव अत्यंत शुभ भाव धरतेभये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते है और सुणनेवाले प्रमाद निद्रा वि, कथा छोडके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धभाव रखके इक, वीस वेर सुणते है, सो भव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे भव सि, द्धिस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो भव्य, जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रभावीक है, अपणी लक्ष्मीसें, धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है और, नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह, कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरण कियाभया दशाश्रुतस्कंधका आठमा, अध्ययन है. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे भी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीभ करके कहे तोभी महात्मका एक अंस भी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाण जो भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरे सें ऋद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. और परभवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसो ज सुदि १५ तक नवपदजी की ओली तथा अष्टापदजीकी ओली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस है सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें भया सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, वहां आगामीकालकी सर्व वात भव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्कशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं भेजा. पिछाडी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते भये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घडी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये. जिस समय भगवंतका निर्वाणकल्याणक भया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वडा उद्योत भया, उर जो राजा पोषधमें बैठे भयेथे सो भावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रभात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न भया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे भाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वडा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणकका अधिकार सुणैं । गोतमरास सुणैं. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उछव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व ज्ञव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ जी नही है. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, बक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण ज्ञये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साथिया करै, फल फूल प्रमुख चढावे, पांच बत्तीका दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावे तथा पूगा विटांगणादि चढावे. (ज्ञानपूजा लिखते है) नमंतिसामंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविहेयपूविं ॥ ज्ञत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुप्फंपसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाज्ञायज्ञवक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछै ज्ञावपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के। इरियावही पमिक्कमें। लोगस्स कहे। बेठके। मुंहपत्ती पमिलेहे। अणूजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछै पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञास ज्ञानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पमिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रनुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, नेद पचास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां छुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश नास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन नाशै, बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति नाष्य पमिशाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शास्त्र मानो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुनव उपगारी, अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देवचंद आणा सहित नयनंग आराधे ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, नगते सेवो नविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपंचमीए, पूयातवेगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढके) पीछे ॥ आनिणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवउहिना णंच ॥ तईमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इछामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकन्नास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करे, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करे, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ इस माफक करे ॥ पीछे (ॐ ह्रीँ णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणना करे. कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढे वा सुणे, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हरीलाली ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ चरांग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे न्नाखियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु० १॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोन्नता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप दने ठेहरे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिवि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए न्नाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वन्नाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सां न्नलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे न्नव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥सु० ब० ८ ॥इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥मोरालाजन॥ त्रिणसे तेसठ पाखंडीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागें जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरैं, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय छै, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो०॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मीठ०४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥मो०॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥मो०मी०५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिन पणत्ता रे भाव ॥ मो०॥ भाषी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मीठी० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी॥ ए चाल॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो॥ हां रे देखी२ भाव, हां रे जीवाजीव स्वभाव ॥मो०॥ सबल जगत करी छाजतो रे जि०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो०॥

गुहिर नाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंम ॥ मो० ॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे जि०, जेहमेंछे रे ठदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ दस गाथा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचना रे जि०; संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेढ सिलोक निजुत्तपुं रे जि०, संगहणी पम्मिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु संख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय खंध इक राजतोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक वीस छे रे जि०, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशासन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद कहे ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ग० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह फरोखे वीजली ॥ एचाल ॥ चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा उपांग करी सोभा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीयै एहथी भाव विरोध कांइ नथी, हो लाल वि० ॥ भांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकी छे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्रमाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकतणो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छे एहना सही, हो लाल छे० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके भला, हो लाल उ०, संख्याये एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेउत्तरा, हो० स०, पदनें अग्रउदग्र सं-ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णी निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे भृंग करीनेनविरहे, हो० क०, ईश्वर शिर सुरगंग तभी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-ग्रंथतणो जुगते वभो, हो० त०, साकर सेलभी द्राख थकी पिण मीठभो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने भाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ढाल पंथोभानी ॥ पंचम अंग भगवती जाणिये रे, जिहा जिन वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकल्या रे, मानुं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगभी रे, जेहनी छै उद्दाम भवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हजार उद्देसा जेह नां रे, जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरथे भरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परभावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र भगवती रागसूं रे, तो होय भवसागरनो त्याग रे ॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे द्रव्य चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम रे ॥ कीजे साधु तथा साहमीतणी रे, भगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण भव सीझे वंछित काज रे ॥ परभव विनयचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७॥ इति श्रीभगवतीसूत्र सिझाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥ छठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना छै अरथ अनेक भई म हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातभी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंड हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्वीपपन्नत्ती उपांग छै जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्थिक सुण परम शांतिरस अ नुभवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ द्यान चैत्य वनखंड सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ भोग परि त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जो, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चख्काण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाभ वलि तंत ते अंतक्र त्या कही जी, धर्मकथाना दोय छै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ ऊंठकोडि तिहां सकल कथानक भाषिया जी, भाष्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार भला पद एहना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपा सगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्दस विचार रे ॥ दस२ संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनं दादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां चतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाषिया, पिण सूत्र भएयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद्र कहै स्युं थयो, जो कुमती क रस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आ ठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म क ठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भा सता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न य भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी तह्निप का जी, कह्निपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पांठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ श्रा० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ श्रा० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, तुरत लहै अभिप्राय ॥ श्रा० ७ ॥ इति श्रीअंतगरूदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुझने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम२ अंतरगति भीजै हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संखशात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाऊं हो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहुको राचो हो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रश्नव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानंद फल पामे ॥ आवो॰१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाउं ॥ पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो॰ २ ॥ अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा ॥ ते छै अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणिचूडा ॥ आ॰ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि जेद सुखकारा ॥ आ॰ ४ ॥ सुयखंध एक छै दसमे अंगै, पणयालीस अझयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आ॰ ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥ माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ॰ ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोय छै, निश्चय नय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो॰ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कडखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु॰ १ ॥ अशुभ किंपाक सम दुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु॰२॥ दोय श्रुतखंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥ सु॰॥३॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अमाटै ॥ सु॰ ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणछै, दुकृतने चल खाटै ॥ सु॰ ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणछै, दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनवसुकृत जोवो विचारी ॥ दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारिये गुण संभारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंदा नि-
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज
सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरमधंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
ने दुःख विपाक फल भाख्या, अंग इग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो
वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंद्गुण ज्योति जागे ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में सुण्या, सहेली ए ॥
आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
भाख्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
णी॥ पसरी अंग इग्यारनी, स०॥ मुझ मन मंरूप वेल कि ॥ सींचू
ते हरखे करी, स० ॥ अनुभव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
जे सांभलै, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि॥ तो ते फल लहे फू
टरा, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मझार कि ॥ भास करी ए अंगनी,
स० ॥ वरत्या जयश्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
स० ॥ वरषाऋतु नभभास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
स० ॥ श्रीजिनचंद सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥
तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रत्ननिधान जो, स० ॥
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे मैं करी, स० ॥ अंग
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप
गारी सुगुरु वताई, पांचु भेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, बाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे०३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अर्तहि भलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीभुवन तिलो ॥ आंकणी ॥ अर्थें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु भाष्यो, तद्भवथकी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग भाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग है अति रूडा, छ छेद पंयन्ना नहि कूडा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूडा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रें संगी, वलि भाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै, संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन भवमारग कहियै ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै, आराध्यां निज अनुभव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावै ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पडिक्कमणा करै, देववंद-

नादि करै, (उँ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावे, अठाई महोछव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, (२१) वेर सेत्रुजरास सुणे (उँ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसें २१ जेती देवै. (कदाल) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंडा होय उहां महोछव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, छठ्भत्त कर के वा चउत्थभत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, साहमीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्राविड़ वारखिल्ल प्रमुख दस कोड़ि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता हे उसका निश्चे दशकोड़ि गुणा फल होता है ॥ इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९१२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. उहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तव सर्व बिंबोके दरसण करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठावनकी संख्या मिली, उर बहुत जगे चरणोकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत भव्यी जीव होंगें सो शुद्धभावसें इस तीर्थकों सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यभक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक वृत्तिसें जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी भव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका भवभ्रमण समझके वर्जना, एसें दुरबुद्धियोकी पूजाव्रतपच्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगभी न करणा. शुद्धभावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजे चढतां प्रेमसुं हे, जो रे वहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आदिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ भोली भगत भली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर भरिय कचोलडी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूडी रायणछांहडी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद उदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० । अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभुत भलकाझोल, मो० ॥ सिद्धवड सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये नित रंगरोल ॥ मो० ६ । इण डुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजे परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर छांहडी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपडल दूरे टलै रे, तूटे करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए- हिज ठाम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोम्हि रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कव्याणक भूमिका रे, महिमावंत महंत रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो० ४ ॥ कोम्हि भवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से- त्रुंजै सनमुख चालतां रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥ धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ बहरी यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२ उब्रव अतिघणा रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम भगत साहमीतणी रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व- ढती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयम्हे वधावस्युं रे, रजत सोवन भर थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव- न मोरी काय रे, भगति जुगति जुहारस्युं रे, नाभिनंदन जिनराय रे ॥ नमो० ए ॥ द्रव्य भाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥ भावे भावना भावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥ रत्नत्रयी भमती भली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ भवभव भ्रमण निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नार्थे धूलेवा सुपसा- यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो- यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, भेटवा विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाभिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु- देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेत्रुंजो छै कितनी दूर रे पंथीड़ा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूड़ी ललतासरनी पाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां अंबला रे वड़ला घणा, झुक रही चंपलारी डाल रे पंथीड़ा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवड़ा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीड़ा ॥ ऊमा हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीड़ा ॥ वहि० ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, झीणी२ ऊड़े खेह रे पंथीड़ा ॥ मैला थावे संघना कापड़ा, निरमल थाये देह रे पंथीड़ा ॥ वहि० ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीड़ा ॥ वहि० ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीड़ा ॥ फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीड़ा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीड़ा ॥ मोने भेटणरो जी कोड़ छै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथीड़ा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरिये, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोड़िसहस भव पातक तूटे, सेत्रुंज सामे डग भरिये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढिये गिरवरिये ॥ विम० जा० ॥ पूंडरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरियै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पड़िक्कमणा दोय विधसुं कीजे, पापपड़ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम ज्ञवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै ज्ञव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥राग प्रज्ञाती॥ ज्ञाव धर धन्य दिन आज सफलो गिण्यो, आज में सजन आनंदपायो ॥ ज्ञा० ॥ हर्ष धर निजर ज्ञर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूठनां, धन्य होय चरण जिहां चलत आयो॥ ज्ञा० ॥आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह में सुजस गायो ॥ ज्ञा० २ ॥ डुर डुरगति टरो जात्र विवसुं करी, पुन्यज्ञंकार पोते ज्ञरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, ऋषज्ञ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ ज्ञा० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन मेढसें कल्याणक ज्ञये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीनकल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के ज्ञये, श्री अरयनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान ज्ञया. एसें इस ज्ञरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक ज्ञये. इस तरे पांच ज्ञरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पच्चास कल्याणक ज्ञये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कल्याणक ज्ञये. इस वास्ते यह दिन वमा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इछा होय तो महीनेंमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारे अंग ज्ञा- वसें सुणें, इग्यारे अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. (समवसरण बैठा भगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवछल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१९ श्रमल्लिनाथायनमः
१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुभंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुभंकरनाथायनमः
६ श्रीशुभंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः
१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम ।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥
४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिनपंचकल्याणक । ८ ।
२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिनपंचकल्याणकनामः ९
४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत२४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥
४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिचन्द्रनाथायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४पंचकल्यालकना० ॥११॥
२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीअक्षोभअर्हतेनमः
१९ श्रीअक्षोभनाथायनमः
१९ श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२
४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीविपरीतअर्हतेनमः
१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः
१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
६ श्रीभ्रमर्णेद्रअर्हतेनमः
६ श्रीभ्रमर्णेद्रनाथायनमः
६ श्रीभ्रमर्णेद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः
६ श्रीअभिनंदननाथायनमः
६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४
जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः
१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जि
नपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४
जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीवणिकअर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीहरअर्हतेनमः

१९ श्रीहरनाथायनमः

१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना० २४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त० २४जिनपंचक०ना०२९

२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना० २४जिनपं०क० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती हे. जो भव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगें सो थोडे भवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चरकाण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय तहां जात्रा करणेको जावे, जो कभी यात्रा करणेको नही जा सके तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करकै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करे, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढे वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगै चढावै, वीचमें १ वडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीछै श्री ऋषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करकै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण नयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान नक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त नया. जो नव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस नव उर पर नवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहीनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ॥ श्रमणनगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वमे पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, २ उली, १ पर्यूषण. जिसमें उली २ का उर पर्यूषण का एवं ३ अठाईका महोछव तो प्रायें सर्वत्र होता हे. जिसमें नी जेसा वीकानेरमें खरतर गच्छवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उछव हाथीके होदे वमे आमंबरसें होता हे वा वरघोमा पुस्तकका मुंबइमें नी होता हे. लेकिन् हस्त्यारूढ नही. उर कार्त्तिक महोछव अन्यत्र नी बहोत जगे होता हे लेकिन् कलकत्ते जेसा महोछव स्वमतमें तथा परमतमें कहांइ नी नारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षणमें मलेवार तक हम गयें, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काशी पटणा तकमें नही देखा. उगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उछव कलकत्तेमें देखा था, उर फागुणमहोछव मकसूदाबादका बहोत अछा होता

हे. उगणीससें सुम्मतालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहांइ न्नी देखा, लेकिन् किसीन्नी धर्ममहोछवमें आज्ञा विरुद्द जो काम होय सो अछा नही. एक तो न्नगवंतके समवसरणके संग आजकलके न्नाग्यवानलोक धूपके फरसें रेतीके फरसें आप-तो जाते नही फक-त बेसमक अदम्योंको न्नेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते न्नागते समवसरणकों उछालादेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, इसकूं समक्कोजीव विचारके आप विवे-क विनय संयुक्त शुद्धन्नावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनुं न्नव सफल हे. वोही महोछव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेसका चोमासापर्वं न्नाणके सर्व जगें न्नगवंतके धर्मका उद्योत करतेन्नये शुन्नध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-रूपी काष्टको जलाके होली करते हें, पीछे सुबोधजलसें स्नान क-रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हें. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हें. द्रव्यें उर न्नावे. सो प्रथम द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हें ॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल न्नयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त न्नये थके लक्कम छाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हें, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हें. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा करते हें, खोटे वचन बोलते हें, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हें, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा छोमके न्नांम न्नरमोंकी कुलमर्याद करते हें, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हें, दूध छोम पेसाब पीते हें. एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हें, अनर्थदंमसें अनंत न्नव संसारको स्थिती बांधते हें. इसवास्ते आत्मार्थी न्नव्यजीवोकों न्नावहोली करणा चाहिये. सो इस मुजब-प्रन्नुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोले, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नानातरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतऋतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गुलालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोमें वहोत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूमसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद गेमणा, वमेरोकी लज्या गेमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरुषोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ भई हे. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हजार वर्ष करीब भया. पीछे स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तबसें धीरे २ अज्ञानी जीव एककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता हे उस वखत तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मातापिता भाई वहिन सबोंकी लज्या गेमके वहोत दिलमें खुसवखती मानताभया पागलके माफक भांमोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वेस्याउका नाच होता होय उहां तो हजारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हें हमने वमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभगतीके पाये पूरे मजबूत बंध करणेमें आये. एसी लज्जया गेमके जिनमंदिरका महोछव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें झूठी ठहरावेंगें, उर मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगें यह वात सच्च हे. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता हे, लेकिन् हम इकेला क्या करें, भाइबंधोंकों एसा करते देख हमभी करते हें, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अछी है. इस वास्ते हे भव्यजीवो इसमें समुदाणी कर्म बंधता हे. छोडे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत उर वात तक नही करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख दुसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों भवमें लाभ होय. इस ड्व्यहोलीके खेलमें वमी२ लमाइयां होजाती हे. मेमता सहर हालीके ख्यालसें पुष्करणे उर भोजकोंकी लमाइमें तमाम उजाम होगया. उर परभवमें अेरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा हे. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचनानुसार लिखा हे. हितोपदेस समझके छोमणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु हे. जिसमें भी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिछामिडुक्कमं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति भली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अआणो अति भलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मादल भाव झफ रे, क्रोध मान दोय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

भिम्भाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥ हो० ३ ॥ एसा साज बणायकै रे, ऋषजदेव गुण गाय ॥ श्रीजिनचंद इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय॥ हो० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिनेसरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसरकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंमित तनकी, स्यामघटा जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रजु अदजुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ जमाय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपाये, श्रेणि चढया जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रजु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान गुलाल अबीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवरको, शुध क्षमा कहै करजोरी॥म०२॥ इति पदं॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥ संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या०२॥ मोह छोम गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या० ३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिब, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वार२ मेरी वंदना होयज्यो, चंद कहै मन हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ०॥ इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर पमत जिहां जव फेरी ॥ इ० १॥ क्रोधादिक बहु मगरमछ है, ग्रहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो दुखकी वेरी । इ० ४ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक, अनुपम कीरत जग तेरी ॥ इ० ५॥ इति ॥

॥पुनःहोरी॥ सांवरो सुखदाई, जाकी छिव वरणी न जाई सा० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन गाई ॥ समेतसिखरगिरि मंमण प्रभुको, देख दरस हरखाई–हृदय मेरो अति हुलसाइ ॥ सां० १॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वधाई ॥ तीन भुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई–सफल मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, भ-व२ भटक्यो में भाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, बाल कहे गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेमा हरखाई, आज तेरी सूरत निरखी ॥ ने० ॥ भव२ संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सुमति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल उल्लसाइ ॥ आ० १ ॥ वामानंदन अति छवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनदयाल दयाकर दीजे, आनंद हरख सवाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त महीने च छोरी, देखो स्याम सखी मोपै ठोरी ॥ एसें० ॥ व्रजकी सखी सब वन२ निकसी, खेलन मिल२ होरी ॥ मारे गुलाल अबीरमुठोभर, अपने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सभी वन२के, मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम२ गौरो ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस दरस प्रभु मोरी ॥प्रो १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहे कर जोरी ॥ च० ऐ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने०॥ समुद्रविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपुंज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥ तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी डरी—मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल भईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करै करजोरी- लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे भविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर भमावो झोली भरश्कै ॥ हो० १॥ ग्यान ध्यान मफ ताल बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरके ॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूरू भमावो, ज्यूं तेरा पाप सब- ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभू भज विलं- ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संभारो भर पिचकारी, हांरे तूं तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल भर झोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घरश रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग आभूषण अंगे, हांरे तूं तो भावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४॥ नी- रंजन प्रभुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुभव वर रे ॥ हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत मन मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो ज- गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलाभ कहै प्रभु संगै, हांरे तूं तो अनुपम भव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाके ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन व्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुना मिल, ऋजुता मुक्ति सुहाई ॥

त्तंर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुन्नव रंग रंगाई ॥आ० वा०१॥ न्नाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, न्नक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥ खेलत संजम फाग मिले सब, बाल आणंद वधाई ॥ अंब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित विन जीव जगत न्नटक्यो, स० ॥चन्नरासी न्नव न्नमतां२, नरन्नव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरन्नावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश न्नयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संन्नाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं लटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रन्नु गुण गावो, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रन्नूजीको, वि० ॥ प्रन्नुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नान्न कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन न्नुवन सिर है टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरुै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनधरन्नूषण कहै न्नविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भर्यो, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकु मार ॥ ग० १॥ फूल्या केवड़ा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आंबा मोर्या बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजे पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आंब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजूं नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेर्यो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छांटे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जोरें य-दुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली मैं पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धर्यो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंबेली दोनुं मरुआ, फूल चढाउं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बीनती, भव२ दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फा-गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अं-गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल उड़ाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निविड दुरित भर शिखर भि दुरकी, भवसागर तारण तरकी ॥ ब० १ ॥ तीन भुवन तीरथ तारागण, सोभा लहिय निशाकरकी ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ ब० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब तनको, वंछित पूरण सुरतरु-की ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंगल मंगनकी, सकल करम रज जल-धरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाभेय जिनेसर-की ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, दुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-रुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की लहु, तीन भु-वन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ लंछन सोभाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद भरकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, भवभ एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसे प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥ त्रिगडमें विराजमान, दुंदुभि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजे साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर अ-सोक सार, भामंडल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संभवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन भुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रनु पदकज लंगन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे डुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिनुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीके दोय तीरथ, गढगिरनार सेत्रुंजगिरिया॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जदुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसिया ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथे, संजम लेइ नवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सेत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरब निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नानिनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रनु सिर धरियो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे नव हारो रे॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रनुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि तन कर हियरा हरख नरे, प्रनु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरनव सफल जमारो ॥ नवि जन मन नमरा रंग नरे, प्रनु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ नवडुख नंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो॥ ममता तज सम ता संग नेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोत्सव रचना रची हद, मुख

जय२ सवद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संज्ञारो ॥ प्रज्जु पंकजकी छिव सरणा ग्रही, ज्ञवसा यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रज्जुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ ज्ञामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोमी, कोन चूक मोपै काढी ज्ञाममी ॥ आ० ॥ २ ॥ मैं न तजूंगी नव ज्ञव केरी, प्रीत वणी जेसी इंछु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै ज्ञई मुगति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥ पर मंदिर तज अविचल लीजे, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदज्जुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अवीर उमाय जगतमै, वैठै शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुज्ञव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल ज्ञविकजन धारै, वंछित पावै दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० ३॥ लाख चोरासी रामत छांमी, च्यारुं गतिसें ज्ञाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे बचाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर भरावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह उडावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही मैं तेरी आय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी वात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भरयो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषभ बेठै अलवेसर, झारो गुलाल मुठी भरकै ॥ बावो० ॥ मुठी भरकै पसली भरकै, बावो० ॥ चूआ२ चंदन और अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजडित शिर छत्र बिराजै, अंगी जडाव जडी जरकै ॥ बावो० २ ॥ बांहे बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीओ अपणो करकै ॥ बावो० ६॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःदुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं रुषभ जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहे

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ बीस कोसथी दरसन दीठो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके वीस गोमटजी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा-संघयात्रा करणसें पाप कटत हे, सि०॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ ऋषभ जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जव२का दुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी में देखी, सो अब मुझकुं सझदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग दे, वा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ जूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंमपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी छूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवाडी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आजूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजूत पंच माहाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रजुकी कृपासें, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उडावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग बीण डफ बाजै, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, छोड चले अभिमानी ॥ हां रे लाला छो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोडी प्रीत पुरानी- दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पडीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें नेह लागी, राजुल गुणकी वानी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजै, रंग विजय सुख दानी—आवा उर गमन छिदानी ॥ सा० ३ ॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवाडी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम बाग अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुडसुं अविहड रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रनूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी नाव अनंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी नांत नली हे, बुंटिया नव२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोनत है, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिनुवन साहब तखत विराजै, महिरबान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ मुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ नावना नावो जिनगुण गावो, अमर घणै उछरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल नविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, नर२ मुठियां उमावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, नाव शुक्ल नल नावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य नंमार नरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद बधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी नीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरुं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव:

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीयै ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कोजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाएयो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इछा, यामें हे दुखियारी ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव युंही गम्यो ॥ द० १ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नांहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेडो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ वहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवछ लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम नाष प्रकाश करतां नव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद्र विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गछ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन नगवंत के कल्याणकके हे सो सर्व नव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले नव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंनवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रनुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रनुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रनुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ए ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंनवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंनवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्ठिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१२ श्रीऋषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने०
११ श्रीऋषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने०
४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्ठिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्ह०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्ह०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्ठिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्ठि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्ठि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपार०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्ठि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्ठि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनेमिनाथजीअर्ह०
९ श्रीकुंथुनाथजीपरमे०
भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारंग०
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०
आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २
१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०
३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०
६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०
८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०
भाद्रपदशुक्लपक्षे १
९ श्रीसुविधनाथजीपारं०
आश्विनशुक्लपक्षे १
१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घडी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै. उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चख्काण करै, तीन टंक देववंदन करै, पडिक्कमणा करै. जिस दिन जो महाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै. उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहां भगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां बडे महोछवसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावै. उहां विधी संयुक्त सर्व भगवंतोके पंच कल्याणकका उछव करै. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उछव करै॥ अब २३ भगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लिख्यते॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उछव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

चरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करके दिक्षाका उच्छव करै, घृत गुम वस्त्रादिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याणककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें भगवंतकों विराजमान करके आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उच्छव करै, वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण कल्याणकके भावगर्भित उच्छव करै, लड्डू चढावै ॥ ५ ॥ और जग गर्भापहार कल्याणकका उच्छव करणा होय तो च्यवनकल्याणकके उच्छव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उच्छव करै. तपस्या पूर्ण होणेसें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति करै, साहमीवच्छल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो भव्यजीव करेंगें सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगें ॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणभरत उदार ॥ राजग्रही नगरी भली, अलिकापुर अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-गुणें अभिराम ॥ श्री० ३॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश ॥ माताकुक्षि सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४॥ जेठ वदम पक्ष अष्टमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोच्छव सुर करै, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान॥ जिनवर लंछन काछवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणो नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख भोगवै, पूरे वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आवि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसे, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधरं निरमल ध्यान ॥ च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९॥ (ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारे परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १० ॥ तपने अधिकारै परववासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी उदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप ऊजमणैं रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरे मूंकी जिन वर स्नात्र सुरंग ॥११॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनो जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वंलभ भरतार, जस कीरत सोभाग वडाई महियल महिमा जाण ॥ परभव सुगति फल लहियै, एं तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघतणो अधिकार, भरुवछ प्रमुख नगरादिक करियां विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्त्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीसे सहस वरष आउखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयभंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस, वाचक समयसुंदर इम पभणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुभदिन गुरूके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पडिवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पडिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसें अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी के पांच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै. गुरूका संयोग होय तो गुरूके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणेसें उत्तम फल मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पच्चख्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर भगवंत ॥ त्रिगडै बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पच्चख्काण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांभल गोयम ताम ॥ दस पच्चख्काण कियां थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी ३, साढपोरसी पुरिमढ ४॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवढि ॥ श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ९ उपवास १० ही, एहिज दस पच्चख्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रभा १ सर्करप्रभा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रभा

४ तिम धूमप्रन्ना ५, तमप्रन्ना ६ तमतम ७ नाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजे तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन न्नेदन ताड़ना, नूख तृषा वलि त्रास, रोम२ पीमा करै, परमाहम्मी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल न्नर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे न्नोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री०९॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै न्नाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ न्नावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावै नरकमें. करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥ करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां न्नावसुं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोमी परिमाण ॥ इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमी

एक हजार ॥ करम खपावे इणपरै, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोडि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करै इक भावसुं, तो पामे मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ छठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडि लाखही, जीव लहे तिहां उख रे ॥ ते उख अठम तपहुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडाकोडि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोडाकोडि वरसनो पाप रे ॥ दूर करे खिण एकमें, निश्चे होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पांमे ग्यान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावे पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहे भव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनंत भवाना पापथी, छूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तस्या, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चक्खाणतणा दस भेद रे ॥ अवर भेद पिण छै घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चक्खाण दस विध फल परुप्या महावीर जिणदेवए, जे करै भविअण तप अखंडित तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद तप विधि

णो ॥ ३३ ॥ इति दस पच्चरकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चरकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चरकाणके नेद ऋर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल नगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, ऋर किसीके दश पच्चरकाण तप करणेकी इछा होय तो पहिले दिन नवकारसी, डुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पच्चरकाण दस दिवसे सेवन करै, तथा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रनावसें डुरगतिबंध दूर करके अछी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, नाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल नेटियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुन्न परिणाम लाल रे ॥ तीजे नव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मकार लाल रे ॥ सुणजो नवि तुमे नावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुन्न महुरते, उचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंन्न १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत नणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पडै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदै निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ए ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवे, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कबि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नाहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसुं बोले सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे मांहिमें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजे शक्ति विचारीनें, उछव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजे हठवाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चिंत लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उहिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद वरसे चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गछ खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरे. एक उली दो महीनेसे लेकर छ महीने पूरी करे. कदास छ महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है. एक उलीके वीस पद है (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते है, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करे. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधे. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधे. और उससें कम शक्ति होय तो उठसें आराधे. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधे. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधे. उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करके आराधे. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे. हीनशक्ति दिनपोसह करे. वीसों पद पोसहसेती आराधे. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधे, जो इतनी

भी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार रोकै, सो शक्ति भी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधै. अपणी हीणता भावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणे जावै, स्त्रियां भी ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करै, तीन टंक देववंदन करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, भूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनभक्ति करके पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनभक्ति करै करावै, भावना भावै तथा तपके दिन तप पदके गुण भेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करै. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै. उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

(णमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमों पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्व साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ (णमो विणयसंपण्णाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअनाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करै ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्छव महोच्छव प्रभावना उजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्छवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरूका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढै, वीस स्थानकजीकी पूजा करावै, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वच्छल करे, इत्यादिक द्रव्ये तर नावे विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो जिन नाम कर्माकों उपार्जन करके तीसरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगें. इत्यलं विस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप उजो विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सदाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥ भवभोजविछयणेवारणाणं, णमोबोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हन्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-दियाणं ॥ निस्सेसकम्मरकयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेन्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-णदयागिहस्स, णमो२ संघचनविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणं-सुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-त्तसंयमपतितभविजन अतिहथिरकरताभला ॥ अवगुणअदुषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोजला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ रूचिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सबोहिबीजंकुरुकार-णाणं, णमो२वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणेसराणं ॥ विग्घो-घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगूसाधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ छद्दवपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिच्छत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ए ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ए ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुघम्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ कम्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुहकारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयाभूषणभूषणस्स, नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसुपोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुहडुद्दवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तवसे नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकरस्स, दुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोगणाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सस्वातिसयासयाणं, सुरा२धी सरवंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सव्विंदियापारविकारहारी, अकारयासेसजणावगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंमणस्स ॥ मुत्तीनपादानसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणवल्लीवनवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणालयस्सं, नमोदयामंदिरसव्वयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतये नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशंकराय, तुभ्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगलमंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंमनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावे (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ इशार्णेद्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्त्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअच्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमेरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरेणद्रायनमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः॥१९॥ ॐहरिसहेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाणवेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषेंद्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषेंद्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीतयशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानिकेंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रायनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यस्तेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्रेयेंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्यादेवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ ॐरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐप्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रश्रृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्रांकुशयैनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ ॐकाल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐगंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षोडश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावै ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐ शायनमः ॥ १८ ॥ ॐ गंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐ गरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐ पातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ दुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ कालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटयैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदपायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः १७ ॥ ॐ धारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐ गांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धायकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐ नैसर्पकायनमः १ ॥ ॐ पांडुकायनमः २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ९ कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐ विजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐ क्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐ धरणेंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्यैनमः ॥६॥ ॐकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥ए॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंरुल पूजनकी विधि विशेष लिखी है। सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंरुल प्रतिष्ठा वलशाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंरुल पूजामें लिखआए हे उस मुजवही करणी। फेर विशेष विधी कराणी होय तो विद्वज्ञान गुरूकों पूछके करणी॥ इति वीशस्थानक मंरुल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, भुलो अक्षर भगति भणी समकाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणरा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इण नामै, आठ पूत्र जाया जिवें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी ॥ वाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी थाय माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवमी ए घर अंगण वैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन भुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंभा पदमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल वधै तिण चयन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेम्हाया,

संबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखमी ए तिणसेती लागी ॥ कन्या देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व खत कन्यारो जाम्हो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाम्हो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल–प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा भला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्रीमा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी दृष्टे पमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खमी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ (उल्लालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम भणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुझने तमासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए दुखणी रे पूत्र मुओ तमफम करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात दुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकभणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणे शोके करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या भरी ॥ पड़तो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोड़ आगे करै नाटक देवता, गोदे खिलावे केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ असनो भूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो भवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे सगते साधुभगते तुम्ह भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजै लाभ लीजै भली भावना भावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करियै हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजे आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥ सेवा कीजे साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजे साहमी, मनरंगे हो करश पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूंछना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल—धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानीगुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पुत्रे आदरी, दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपे, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, मैं तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन जुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुदि भली ॥ मैं कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य प्रमने थया सुप्रशान चित्तनी चिंता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥ २७ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करे, रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन करे, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढावै, देव वंदना-

मे प्रसिद्ध भई. उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीमान्गुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु भये, जिनोंके शिष्य पंडित, श्रीकुशलनिधानमुनिः भये, उन परमपुरसाधूजी माहाराजका चरणानुचंचरीक उ० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंडली पं। क्षेमचंदमुनिः चि। पेमचंद अमरचंद्रादि शिष्योंके तथा पाठशाला श्रीबीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोंके उपगारार्थ छपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का बीकानेर श्रमा उपासरा विद्याशाला उ। श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी। गणिः ॥

